Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो घर फूंके आपनो

अनिला सिंह चाड़क

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिंदी व्यंग्य लेखन की लंबी परंपरा में अनिला सिं चाड़क का नाम एक नयी आश्वस्ति के साथ हमारे सामने आया है। यों भी व्यंग्य-लेखन में हरिशंकर परसाई और शरद जोशी के चले जाने के बाद एक सन्नाटा हमें चिंताकुल कर रहा है। अनिश्चितता और संभावनाओं से भरे हमारे समय में जहां जीवनादर्शों, सपनों, मिथकों की बलि चढ़ रही है और हम इतने संवेदनशून्य हो गए हैं कि अचंभित भी नहीं होते। ऐसे में तिलमिलाने और अपने हास्य रूपी औज़ार के साथ गुदगुदानेवाले अनिला सिंह चाड़क के व्यंग्य-लेखन पर भरोसा किया जा सकता है। उनके प्रयोग प्रशंसनीय हैं, भाषा सरल एवं प्रवाहमान है, शैली में अपनी विशिष्टता है। जहां तक मैं जानता हूं, जम्मू में डॉ. संसारचंद को छोड़कर व्यंग्य-लेखन लगभग नहीं के बराबर है इसलिए समूचा रास्ता अनिला के हिस्से में आ गया है। उनकी व्यंग्य रचनाएं पढ़ने के बाद यह आशा बंधती है कि यदि वह निरंतर इस क्षेत्र में सक्रिय रहीं तो वह इस विधा के लिए एक योगदान के रूप में सिद्ध होंगी और वह ऐसे व्यंग्यबाणों का मुकाबला कर सकेंगी जो व्यंग्य तो करते हैं लेकिन उनका चौखटा सीधा, सपाट और भूत की तरह गंभीर होता है।

—राजेन्द्र अवस्थी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्री रतनलाल शांत जी
को सस्नेह भेंट

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिंदी व्यं
चाड़क व
सामने अ
परसाई
सन्नाटा
संभावना
सपनों,
संवेदनश
ऐसे में
साथ गु
लेखन प
प्रशंसनी
अपनी
में डॉ.
नहीं के
हिस्से मे
बाद य
क्षेत्र में
योगदान
व्यंग्यबा
करते हैं
की तर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो घर फूंके आपनो

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभिरुचि प्रकाशन, दिल्ली-110032

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो घर फूंके आपनो

अनिला सिंह चाड़क

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu. (D)
Acc. No... 484.........
Dated ..4...9...09...
8(IV)

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मूल्य : साठ रुपये / प्रथम संस्करण, 1999 / आवरण-शिल्पी : सत्यसेवक मुखर्जी
प्रकाशक : अभिरुचि प्रकाशन, 3/114, कर्ण गली, विश्वासनगर, शाहदरा, दिल्ली-32
शब्द-संयोजक : विनायक कम्प्यूटर्स, दिल्ली-32 / मुद्रक : पवन ऑफसेट, दिल्ली-32

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

JO GHAR FOONKE AAPNO : Anila Singh Charak Rs. 60.00

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मम्मी-पापा के लिए

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भूमिका

हिंदी व्यंग्य विधा में महिला व्यंग्यकारों का अभाव-सा रहा है। शांति मेहरोत्रा, सूर्यबाला, उषाबाला, सरोजिनी प्रीतम से अलका पाठक तक चंद विश्वसनीय नाम हिंदी जगत में हैं—इन्हीं में एक नाम अनिला सिंह का भी जुड़ गया है।

व्यंग्य के साथ हास्य को मिलाकर देखने की एक आदत-सी आलोचकों, पाठकों के साथ-साथ रचनाकारों की भी हो गयी है। उपर्युक्त नामों में यदि सरोजिनी प्रीतम हास्य को आधार मानती हैं तो सूर्यबाला व्यंग्य को। इस शृंखला की यह मेधावी कड़ी जो अचानक अनिला सिंह के रूप में मिली, मुझे हिन्दी व्यंग्य का वर्तमान स्वस्थ होता लगा।

यद्यपि शीराजा, साहित्य अमृत आदि में मैंने अनिला को पढ़ा था परंतु कथाकार भाई विवेकानंद जब उस दिन उनके साथ मेरे द्वार पर दस्तक दे उठे, मुझे लगे हाथों एक व्यंग्यकार से मिलना भला लगा।

अनिला के व्यंग्य-लेखन में ताज़े फूलों की ताज़गी की गंध है। उनके मन का खांजी व्यंग्यकार हास्य की दूरबीन लगाए व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं में विडंबना और विद्रूप को ढूंढ़ता-बीनता नज़र आता है। वे एक शिक्षिका हैं अतः उनका आब्ज़र्वर शिक्षण जगत की चिकनी फिसलन को बड़े ख़ूबसूरत अंदाज़ में बयां करता है। वे एक जागरूक नारी हैं, उनके व्यंग्यकार का तेवर नारी को लेकर रचे गए प्रसंगों, मिथकों

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से गुज़रता है और बड़े मज़े से निर्मल आनंद लेता हुआ लुत्फ के समुद्र में गोते दिलवाता है।

हम आमतौर पर व्यंग्य गोष्ठियों और लेखों में जिस व्यंग्यात्मक भाषा और शिल्प का अभाव आज के व्यंग्यकारों में महसूस करते हैं, वह अनिला सिंह में स्वतः स्फूर्त है। 'कायाकल्प' जैसी सशक्त रचना की लेखिका अनिला सिंह मुझे ऐसी संक्षिप्त, किंतु गंभीर विषय को लेकर मथी गई रचना से बहुत आश्वस्त करती हैं, व्यंग्य की परिणति जिस करुणा में निहित है, वह इस प्रकार की रचनाओं में है। वर्णन करते हुए वे हास्य का औजार सदैव रखती हैं, इसलिए कतिपय रचनाएं हास्य यानी विधा में ह्यूमर भी लग सकती हैं। लेखिका के पास भाषा के इस्तेमाल का ढंग बहुत प्रभावी है, वे हिंदी-उर्दू के साथ-साथ अंग्रेजी के चलते हुए शब्दों की खूबसूरत जुगलबंदीकरण करती हैं।

पहले संकलन के लिए औपचारिक साधुवाद और अनौपचारिक ढंग से ढेर-सा प्यार, वैसे आशीर्वाद देना भी अधिकार तथा कर्तव्य दोनों है।

—हरीश नवल

65, साक्षरा अपार्टमेंट्स
ए-3, पश्चिम विहार
नई दिल्ली-110063

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्रम

1. कुर्सियों का अकाल 11
2. मनवा कभी न नहाइये 16
3. जो घर फूंके आपनो 21
4. हम होंगे कामयाब 26
5. आपकी अंतिम-यात्रा सुखमय हो 29
6. कायाकल्प 33
7. नारियों की उम्र का अनुसंधान 36
8. ट्रैफिकवाद में विवाद 41
9. बेचैनी मरने के बाद की 46
10. यात्रा में घर 51
11. बात एक सपने की 55
12. पर्दे की आड़ 59
13. बहुत पछताए बीमार बनकर 64
14. वर-खोजी अभियान 69
15. ऐतिहासिक कवि से मुठभेड़ 74
16. इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त हैं 79
17. स्वतंत्रता की स्वायत्तता 84
18. सच हुए न सपने 89
19. हम ही सो गए 93
20. केले का छिलका 96
21. एक थे पोपटलाल 101

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1 कुर्सियों का अकाल

प्रभु अनुकंपा से जिस दिन हमने एक विद्यालय, जिसका नाम उसकी इज़्ज़त बचाने के लिए गुप्त रखा गया, के प्रांगण में स्नातकोत्तर अध्यापिका के रूप में प्रवेश किया तो मन-मयूर नाच उठा। विद्यालय की दहलीज लांघने से पहले हमें यह नहीं पता था कि यहां कुर्सियों का अकाल पड़ा हुआ है, अभी तो मन-मयूर ही नाच रहा है, बाद में कुर्सी हथियाने के लिए खुद भी नाचना पड़ेगा। हुआ यूं कि जैसे ही हमने स्टाफ-रूम में प्रवेश किया तो बहुत सारी प्रश्न-सूचक निगाहों के प्रश्नों को झेलने के बाद एक लावारिस पड़ी अपंग कुर्सी की टूटी बांह को बड़ी कोमलता से सहलाते हुए हम उस पर विराजमान हो गए और कई ईर्ष्यालु निगाहों से बचने के असफल प्रयास में ज्वॉइनिंग-रिपोर्ट लिखने लगे। उसी समय दो भीमकाय देवियां शायद अपनेपन का अहसास करवाने के लिए हमारी कुर्सी की क्षत-विक्षत पीठ पकड़कर खड़ी हो गई। हमने पीछे मुड़कर बड़ी आत्मीयता से उन्हें देखा और पूछा—'आप भी यहां पढ़ाती हैं ?' हमारी सारी उम्मीदों पर पानी फेरते हुए उन्होंने एक ही सुर में बड़े गुस्से से जवाब दिया—'और नहीं तो क्या ? आप अभी-अभी आयी हैं और कुर्सी हथिया ली, हम दस साल से यहां पढ़ा रही हैं, हमें कभी भी इतनी जल्दी कुर्सी नसीब नहीं हुई। कुर्सी के लिए यहां लाइन में खड़ा रहना पड़ता है, तब कहीं जाकर नम्बर आता है या फिर मेज़ पर बैठना पड़ता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हम तो इसलिए यहां खड़ी हैं कि आप अभी-अभी ज्वॉइनिंग रिपोर्ट देने जाएंगी तो यह कुर्सी खाली हो जाएगी।' हमने धड़कते दिल से एक नजर कुर्सी पर डाली और दूसरी नजर उन भीमकाय देवियों पर जिनकी आंखों में कुछ ऐसे भाव थे जैसे दो मोटी बिल्लियां एक चूहे पर नजर रखे हुए हों और जो इस ताक में हों कि कब वे उसे दबोच लें।

खैर, जैसे-तैसे हमने अपनी ज्वॉइनिंग रिपोर्ट लिखी और उठने ही वाले थे कि दोनों ने अपनी टांगें कुछ इस तरह से कुर्सी में फंसाईं जैसे दो पहलवान टंगड़ी लगा रहे हों। खैर, हम उन्हें लड़ता छोड़कर यानी कि भिड़ता छोड़कर जैसे ही दरवाज़े पर पहुंचे तो ज़ोर से धड़ाम की आवाज़ आयी। हमने अपनी आंखों को ज़ोर से बंद कर लिया, फिर धड़कते दिल से आंखें खोलीं तो देखा कि वह कुर्सी अब भगवान को प्यारी हो चुकी थी। हमने आत्मसंतोष की सांस ली—चलो, कुर्सी को मुक्ति मिल गयी और सबसे बड़ी बात स्टॉफरूम में कुछ अनहोनी घटने से बच गई। फिर तो रोज़ अंतिम सांसें गिनती कुर्सियों को झपटने का सिलसिला जो पहली घंटी बजते ही शुरू होता तो आखिरी घंटी बजने तक चलता रहता। स्टाफ-रूम में प्रवेश करते तो लगता जैसे किसी भरतनाट्यम की कक्षा में प्रवेश कर रहे हैं। कुर्सियां हर रोज़ भिन्न-भिन्न मुद्राओं में भरतनाट्यम सीखती षोडशियों की तरह अब हमारा यानी कि सबका मन मोह लेतीं। कभी-कभी तो कुर्सियां टूटी हड्डियों के अस्पताल में पड़े मरीजों की भांति भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में पड़ी बड़े दयनीय भाव से हमें देखतीं।

लेकिन हम सब अपने अंदर उनके प्रति करुणा के उमड़ते सागर को दबाकर और अपनी अन्तर्तात्मा की उठती आवाज़ को लगभग अनसुना करते हुए कभी टूटी बांहवाली कुर्सी पर, कभी तीन टांगोंवाली कुर्सी पर, कभी टूटी पीठवाली कुर्सी पर और यहां तक कि कुर्सी की क्षत-विक्षत गोद में जो लगभग जमीन छूने की तैयारी कर रही होती, बैठने से न चूकते—चाहे उस पर बैठकर हमारा धड़ जमीन को छुए और सिर्फ सिर ही कुर्सी की गोद में बैठा दिखाई दे। एक दिन तो लगा जैसे कुर्सियों ने भी हमारे खिलाफ मोर्चाबंदी कर ली है और उनकी दुश्मनों की हिट-लिस्ट में हम ही आएंगे, यह हमने ख्वाब में भी नहीं सोचा था।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
हुआ यूं कि पहली घंटी बजते ही जैसे ही हमने एक हृष्ट-पुष्ट कुर्सी पर नज़र दौड़ाई तो खुशी से बांछें खिल गईं। उसको पाने की प्रतियोगिता में सबको पीछे छोड़ते हुए हम अव्वल रहे। और उस पर बैठकर आत्म-संतोष की सांस लेते हुए हमने भगवान को मुक्तकंठ से याद किया, फिर हड़बड़ी में गिरे हुए पेन को उठाने के लिए ऐसे झुके कि फिर सीधे ही नहीं हुए--कुर्सी की दो पाटों में बंटी लकड़ी ने हमारी टांगों को इस तरह दबोच लिया कि जो अर्धगोलाकार स्थिति हमने अख्तियार की थी वह पांच मिनट तक वैसी ही रही, तब हमारी एक प्रिय सखी ने भिन्न-भिन्न मुद्राएं बदलवाकर हमें कुर्सी के पंजों से बचाया। हमने चैन की सांस ली और आगे से कुर्सी की सूरत नहीं बल्कि सीरत समझकर उस पर बैठने की कमस खाई।

पर हमें क्या पता था कि जिस घटना को नियति का क्रूर परिहास समझकर बर्दाश्त कर लिया था वैसी ही एक और घटना कुछ ही दिनों में हमें मुंह का ग्रास बनाने के लिए मुंह बाये खड़ी थी। हुआ यूं कि रोज़ की तरह कुर्सी जीतने की प्रतियोगिता में हम अव्वल न आ सके, वह इसलिए कि सुबह से सारे पीरियड लगे हुए थे और लेबोरेटरी में प्रेक्टिकल करवाते समय कम-से-कम दो घंटे खड़े रहना पड़ा था। आशंकित तो थे ही कि शायद कुर्सी न मिले। इसी अंदाज में चलते हुए हमने कुर्सियों के कमरे में प्रवेश किया तो एक खाली कुर्सी को देखकर हमारा हृदय सौ किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से धड़कने लगा। इस हकीकत को नजरअंदाज करते हुए कि ये हृष्ट-पुष्ट भीमकाय नारियां इस कुर्सी को क्यों न हथिया सकीं, हम बड़े इत्मीनान से उस कुर्सी पर बैठे ही थे कि वह चर्र-मर्र की आवाज़ करते हुए शीर्षासन की अवस्था में हमें साथ लेकर सिर नीचे और टांगें ऊपर करके खड़ी हो गई। हमारा सिर और टांगें उसके साथ ऐसे जुड़ी थीं जैसे हमने साथ-साथ जीने और मरने की कसम खायी हो। खैर, अंतिम समय में हमने उसके साथ मरने का इरादा छोड़ दिया और अपनी टूटी बांह को मृत कुर्सी की टूटी बांह से अलग करते हुए उससे अंतिम विदा ली और उसकी आत्मा की शांति के लिए भगवान से दुआ करने लगे और साथ ही उसकी दी हुई निशानी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यानी कि टूटी बांह को सहेज लिया जो अध्यापिकाओं की बद्दुआओं से अभी ठीक है।

बहुत दिनों के बाद अपनी बाजू ठीक होते ही जब हमने टूटी कुर्सियों के अस्पताल–स्टाफ-रूम में प्रवेश किया तो पता चला कि एक देवी सुबह से ही एक कुर्सी पर विराजमान हैं। हमने पूछा कि यह किस तरह संभव है तो पता चला कि जब भी वह बाहर जाती हैं तो किसी-न-किसी को जिसका पीरियड लगा नहीं होता, इस अनाथ कुर्सी का एक पीरियड के लिए वारिस बना जाती हैं और फिर विराजमान हो जाती हैं और देखते-ही-देखते वह ऐसे भिड़ने लगीं जैसे दो पहलवान पट्ठे ठोंके एक-दूसरे को लड़ने का आमंत्रण दे रहे हों। फिर तो इस तरह की कई घटनाएं अकसर होने लगीं जैसे कि एक विशालकाय देवी का नयी साड़ी पहनकर कुर्सी पर बैठना और कुर्सी के दांतों यानी लोहे की असंख्य कीलों द्वारा साड़ी का पल्लू छोटे-छोटे रिबन के आकार में बंट जाना और उनका कई अध्यापिकाओं की भीड़ को साथ-साथ लेकर क्रोधावस्था में प्रधानाचार्य से लड़ने की मुद्रा में इस तरह चलना जैसे कोई सेनानी अपने ही देश में अपना झंडा फहराने के लिए कई सैनिकों को साथ लेकर एकता यात्रा के लिए निकल पड़े और मौके का जायज़ा लेकर प्रधानाचार्य जी का पिछली संकरी गली से नदारद हो जाना। फिर क्या था, इस चरमसीमा पर पहुंचकर सारे स्टाफ मेम्बरों ने कुर्सियों की सुरक्षा, उनकी घटती जनसंख्या और उनके नित नये फैलते आतंक को लेकर मीटिंग बुलवाई जो कि मेजों पर बैठकर हुई। बहस शुरू हुई। पहले एक कोमल-सी आवाज आयी–"क्यों न हम कुर्सियों के बदले सीमेंट के बैंच यहीं गड़वा लें ताकि उन्हें कोई न उठा सके।" दूसरी आवाज आयी–"नहीं, सर्दियों में निमोनिया होने का खतरा है।" वाक्पटुता में माहिर एक अध्यापिका की आवाज गूंजी–"क्यों न हम जाते समय इन्हें लोहे की जंज़ीरों से मेजों से बांध दें ताकि इनकी जनसंख्या न घटे। मेरा कुत्ता कल ही मरा है, उसकी चेन मेरे पास है। मैं तो कल ही ले आऊंगी।" ऐसी कई आवाजें गूंजीं। एक भारी-भरकम आवाज गूंजी–"क्यों न हम उन घरों के आगे धरना दें जहां की शोभा हमारी कुर्सियां बढ़ा रही हैं या फिर बैनर बनवाकर

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक लंबा जुलूस निकालें, जैसे 'कुर्सियों की रक्षा करो', 'कुर्सियों की जनसंख्या बढ़ाओ', 'पीड़ित कुर्सियों की रक्षा करो', 'कुर्सियों के इलाज के लिए अस्पताल बनाओ' आदि या फिर साल में एक बार 'कुर्सी दिवस' मनाया जाए, जिस पर 'कुर्सी बचाओ' जैसे विचारों पर ध्यान दिया जाए। एक ने तो आकर यहां तक कह दिया कि भई वह तो अपने जैसा एक पुतला बना लाएंगी जो उनकी कुर्सी पर तब तक बैठा रहेगा, जब तक वह अपनी क्लास लेकर वापस न आ जाएं।" पुतले की बात सुनकर विशालकाया नारियां अपने को ही गौर फरमाने लगीं—शायद वे यह सोच रही होंगी कि अपना पुतला बनाकर वे घाटे में ही रहेंगी क्योंकि उसके लिए गारा, सीमेंट भी ज्यादा लगेगा।

खैर, जैसे-तैसे मीटिंग खत्म हुई तो मैं भगवान से प्रार्थना कर रही थी कि हे संकटमोचन, अगर किसी अपंग कुर्सी के साथ हम तुम्हें प्यारे न हुए तो सौ कुर्सियों का दान करेंगे और जिंदा कुर्सियों के लिए भटकती आत्माओं यानी कि अध्यापिकाओं के लिए प्रार्थना करेंगे कि हे महाप्रभु, अगर इस जन्म में संभव नहीं है तो अगले जन्म में इन्हें कुर्सियों से मालामाल करना।

कुर्सियों और कुर्सियोंवालों से क्षमा-याचना के साथ हम आपने विदा लेते हैं।

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2 मनवा कभी न नहाइए

उन दिनों लेखकों के कैंप में शामिल होने से पहले हमें यह नहीं पता था कि सभी लेखकों ने आजीवन न नहाने की भीष्म प्रतिज्ञा ली हुई है। उनके इस क्रांतिकारी विचार से हम अनभिज्ञ थे इसीलिए सुबह सवेरे उठे, झील के किनारे खूब टहले और बाथरूम में छलछलाते नल के पानी से खूब नहाए, और फिर जब सब के साथ मिल-बैठकर चाय-नाश्ता करने लगे तो लगा जैसे सभी लेखकों की बिना नहाई आँखें हमें घूर रही हैं। हमें लगा जैसे हमसे कोई अपराध हो गया हो, या फिर गलती से हम किसी थर्ड ग्रेड साबुन से नहा आए हों और वातावरण में दुर्गंध फैला रहे हों, पर बाद में उनकी बातचीत के कुछ अंश हम तक पहुँचने में कामयाब हो गए और हम यह जानने में सफल हो गए कि उन्हें शिकायत दुर्गंध से नहीं बल्कि उस सुगंध से है जो हमारे अजाने ही वातावरण में फैलकर विपरीत दिशाओं में फैली हुई दुर्गंध को चैलेंज कर रही थी, जबकि न नहाए लोगों के क्षेत्र में सुगंध का आना बिलकुल बैन था। इसीलिए उन सभी ने सुगंध के साथ बगावत कर दी, बगावत करना अति लाज़िमी था क्योंकि उनकी नाक सुगंध की अभ्यस्त नहीं थी और अचानक वहाँ उसका प्रवेश उन्हें भयंकर रूप से विचलित कर गया। नतीजतन उन्होंने अपनी-अपनी नाक पर रूमाल रख लिये। हमने उन रूमालों को मन ही मन कोसा जो सुगंध को रोकने के लिए नाक के आगे पालथी मारकर

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बैठ जाते हैं। फिर सोचा—भला इसमें रूमालों का क्या दोष ? दोष तो उन कर-कमलों का है जो सुगंध को रोकने के लिए उन गरीबों का सहारा लेते हैं जो अनचाहे ही ऐसे हाथों में पड़ जाते हैं जो दुर्गंध को रोकने की बजाए सुगंध रोकने के लिए काम में लाए जाते हैं। खैर, उस दिन दुर्गंध और सुगंध में खूब तनातनी चली और रूमाल बेचारे बीच में ही मारे गए। पर हमने भी ठान ली कि लेखकों की भीष्म प्रतिज्ञा को डिगाकर ही दम लेंगे। और दम साधे हुए हमने ओखली में सिर दे ही दिया, फिर कौन-सा मूसल सिर पर कब पड़ा, इसकी गवाही हमारा सिर ही देगा।

सबसे पहला मूसल तब पड़ा जब बिना नहाए यानी सदियों से न नहाए एक कवि ने बड़ी हिम्मत जुटाकर हमसे पूछा, 'मोहतरमा, आप किसलिए नहाती हैं ?' इससे पहले कि हम साइंस का सहारा लेते हुए नहाने के अनगिनत फायदों पर प्रकाश डालते, वह लगभग बरस पड़े—'जानती हैं आप, नहा कर देश का कितना नुकसान कर रही हैं ?' 'वह कैसे ?' हम अचंभे में पड़ गए। वह बोले, 'सबसे पहले तो आप पानी का नुकसान कर रही हैं। आप अच्छी तरह जानती हैं कि हमारे देश में पानी की कितनी किल्लत है। अगर आप रेगिस्तानों के आसपास के इलाके में कार्यरत होतीं तो आप नहाना-बहाना सब भूल जातीं। दूसरे, आप साबुन का कितना नुकसान कर रही हैं, कितना-कितना झाग नालियों में फेंक रही हैं। आप ही की वजह से कितने प्रकार के साबुन मार्केट में आए हैं। कोई अच्छा नाटक चल रहा होता है तो साबुनों के विज्ञापनों की लाइन लग जाती है। आपकी वजह से हमारे मनोरंजन में भी कितना व्यवधान पड़ता है। और तीसरे, आप नहाने में कितना कीमती वक्त बरबाद करती हैं, जो किसी अच्छे काम के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है।' 'कौन-सा अच्छा काम ?' हमने अचानक प्रश्न दागा। 'मसलन समाज में फैली गंदगी और बुराई को दूर करने में, समाज के विकृत चेहरे को आकार देने में, सड़कों पर सफाई अभियान चलाने में...।' अब तक हम भी चिढ़ गए थे। बोले—'यानी आप चाहते हैं कि हम दुनियाभर की गंदगी को अपने शरीर पर ओढ़कर समाज में फैली गंदगी को दूर करें ! तभी आप चाहते हैं कि आपके साथ मिल-जुलकर हम तमाम गंदगियों को दूर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करने का बीड़ा उठाएं।' एक घंटे से हमें यह महसूस हो रहा था जैसे हम नहा-धोकर भी मुजरिमों की तरह कटघरे में खड़े हों और वह आजीवन न नहाने की प्रतिज्ञा लेते हुए भी जज की तरह फैसला सुना रहे हों। अब हमारी पेशेंस जबाव देने लगी थी। हम बोले, 'पहली गंदगी तो तभी दूर हो जाएगी जब आप यहां से कूच करेंगे।' वह अपना-सा मुंह लेकर चल दिए।

अजब मुसीबत में पड़ गए थे हम। नहाने के जुर्म में हम हर दिन अजीबो-गरीब प्रश्नों की बौछार झेलते हुए धराशायी होते रहते। हमारी जगह कोई और होता तो इतनी घोर मानसिक यंत्रणा सहने के बाद विपक्षी दल में शामिल हो जाता, पर हमने भी दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली थी कि चाहे कुछ भी हो, हम अकेले ही कभी न नहाने वालों के दल में सरवाइव करके दिखाएंगे।

पर हमें क्या पता था कि सरवाइव करने के चक्कर में हमें अपने आपको विपक्षी दल की संख्या और जागरूकता को झेलते हुए मानसिक रूप से खुद को ही हर दिन रिवाइव करना पड़ेगा।

अगले दिन अजीबो-गरीब दृश्य सामने आया। सभी न नहाने वालों ने मोटे-मोटे कंबल ओढ़ रखे थे। हमें लगा, यह हमारे खिलाफ कोई नयी साजिश है। उन कंबलों से हमें बगावत की बू आ रही थी और लग रहा था कि क्रांति होकर ही रहेगी। बहुत देर के बाद सारा माजरा समझ में आ गया। इतनी भीषण सर्दी न होने पर भी कंबल लेने का कारण यह था कि भीतर की दुर्गंध को इस पार रोकना और बाहर की सुगंध को कंबल के उस पार—यानी सुगंध और दुर्गंध के बीच पसरा हुआ वह कंबल हिंदुस्तान और पाकिस्तान की सीमा-रेखा की तरह काम कर रहा था। वे महानुभाव नहाने वाले की किरणों से बच रहे थे और हम न नहाने वालों की। कंबल ओज़ोन लेयर की तरह काम कर रहा था जिसमें से दुर्गंध की अल्ट्रा वायलेट रेज़ हम तक नहीं पहुंच रही थीं। हमें लगा हमारा बचाव हो रहा था। पर शायद अभी तक हम भ्रम में थे, हमें नहीं पता था कि कुछ तीर अभी विपक्षी दल की कमान में बाकी हैं, जिससे वे हमें छलनी करना चाहते हैं। तभी तो उनमें से एक ने अपनी बुलंद

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
आवाज में फरमाया—'आपको पता है नहाने से स्किन खराब होती है।' हमारे भीतर से आवाज आयी—'बिलकुल ठीक फ़रमाया आपने, तभी तो पिछले दस दिन से नहाने के जुर्म में अपनी स्किन बचाते हुए घूम रहे हैं। आप अपनी अपनी स्किन को यथास्थान रखिए कभी भी न नहाकर और हम नहा-धोकर अपनी स्किन का सफाया करने पर तुल गए हैं।' वह बोले—'आप खुद को समझती क्या हैं। न नहाने वालों की संख्या यहां ज़्यादा है और नहाने वालों में केवल आप ही हैं। जो नियम फायदा पहुंचाते हैं उनकी तरफ ज्यादा लोग आकर्षित होते हैं।' उनके इस प्रवचन का हमारे दिमागी तंतुओं पर गहरा असर हुआ और हमने उस दिन उन्हें खूब झिंझोड़ा, फिर निष्कर्ष निकाला कि कहते तो यह ठीक ही हैं। कौन से भारतीय संविधान में लिखा है कि रोज़ ही नहाया जाए और फिर हमें अपने आसपास विचरने वाले उस महान कवि के प्रवचन याद आए कि ज़िंदगी में सिर्फ तीन बार नहाना जरूरी होता है—पैदाइश के वक्त, शादी के वक्त और मरने के वक्त। पैदा होने पर नहाना और मरने पर नहाना अपने वश में नहीं होता और शादी के वक्त न भी नहाया जाए तो कोई क्या कर लेगा।

वैसे भी हम नहाने में जितना वक्त ज़ाया करते हैं, उसका सदुपयोग हम कोई कविता लिखने के लिए कर सकते हैं। वैसे भी नहाने से कविता के सारे अंश धुल जाते हैं और शायद कविता का नन्हा पौधा गोबर की ही खाद में पनपता है, तभी शायद हम महान साहित्यकार नहीं बन पाए और जैसा सभी कहते हैं कि कवि का एक अच्छा आदमी होना बहुत जरूरी होता है। हम नहा-धोकर अस्सी हजार योनियों में से कीटाणुओं की कम-से-कम बीस हजार योनियों को तो मार ही डालते हैं। हम अहिंसावादी दृष्टिकोण न अपनाते हुए हिंसात्मक प्रवृत्ति अपनाकर खुद को बुरा साबित कर रहे हैं। बेचारे जीवाणु अपनी खाल पर पनप रहे हैं तो पनपने दीजिए। फिर हमारे ज़ेहन में राजनीति की खाल उभरी—वह भी तो कैसे गंदे माहौल में फलती-फूलती है और मोटी होती जाती है यानी हर फलती-फूलती चीज़ का आधार गंदगी है।

वह रात हमारे इम्तिहान की आखिरी रात थी। अचानक हमारे सिर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में ज़ोरों का दर्द उठा। सभी साथियों का दावा था कि यह दर्द रोज़ नहाने से उठा है। और हम कराहते हुए यह सोचने पर बाध्य हो रहे थे कि रोज़ नहाने से दर्द तो होता है पर सिर्फ मानसिक यंत्रणाओं का दर्द।

हमने नहाने के जुर्म में डॉक्टर की दी हुई दवाई खायी और फिर न जाने कब हमें नींद ने आ घेरा, सारी रात हमें सपने में नाक पर रखे रूमाल, कंबल और बंद बाथरूम दिखाई दिए।

सुबह सवेरे पानी से छलछलाते नल ने हमारी नींद में व्यवधान डाला। पर हमने आंखें मूंदकर कंबल से दोनों कानों को झटपट बंद कर लिया और सारी बुराइयों को ढककर अपनी खाल बचाई। फिर अनायास ही यह शेर कहते हुए बाहर निकल गए—

बिन नहाए मोती मिले, नहाए मिले न सीप
मनवा कभी न नहाइए, ऐसी मेरी सीख।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3 जो घर फूंके आपनो

गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो, महेश्वरः यानी गुरु की महिमा अपार है, पर आज के इस क्रांतिकारी युग में जहां हर क्षेत्र में क्रांति आयी है तो गुरु यानी अध्यापक क्यों इससे अछूते रह जाएं। वैसे भी आजकल के इस बदलते परिवेश में आदर्शवादी अध्यापक का पुराना घिसा-पिटा मॉडल कहीं फिट नहीं बैठता। साईंस कहती है—चेंज इस द लॉ ऑफ नेचर। तो अध्यापक गण साईंस के इस उसूल को कैसे नज़रअंदाज़ कर सकते हैं। जैसे आदिमानव कथित मानव में परिवर्तित हुआ, उसके गुण सूत्रों में बदलाव आया विपरीत वातावरण में अपने को ढालने के लिए, उसी प्रकार गुरु ने अपने को विपरीत वातावरण में ढालने के लिए गुरु-घंटाल बना लिया। गुरु-घंटालों के प्रकट होने के साथ-साथ विद्यार्थियों ने भी शिक्षा ग्रहण करने के मैदान में नये-नये दाव-पेंच अपनाने शुरू कर दिए, यानी शिक्षा का मैदान एक ऐसा मैदान बन गया है जहां गुरु-घंटाल और विद्या हासिल करने के लिए आए महारथी यानी विद्यार्थी दोनों फ्री स्टाइल कुश्ती की भिन्न-भिन्न मुद्राओं में आपस में भिड़ते दिखाई देने लगे हैं। एक नया दांव दिखाता है तो दूसरा पट्ठे ठोककर उसे धरती की धूल चटवाने के लिए एक नयी एडवेंचरस मुद्रा का निर्माण कर लेता है।

गुरु गुरु से गुरु-घंटाल कब बना, यह तो हम आपको नहीं बता सकते, पर गुरु-घंटाल से हमारा साक्षात्कार छठी कक्षा में हुआ। यह हमें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घर में पढ़ाने आते थे और लिखवाने से ज्यादा पाठ याद करवाने पर ज़्यादा ज़ोर देते थे। जैसे ही हम बिना समझे पाठ का घोटा लगाना शुरू करते, वह बैठे-बैठे ही निद्रामग्न हो जाते। उनके चेहरे की बदलती भाव-भंगिमा के साथ-साथ उनके खर्राटों की खरखराहट का आरोह-अवरोह भी चलायमान रहता। हमारी उनसे इस अवस्था में भी प्रश्न पूछने की प्रवृत्ति जब भी सिर उठाती तो वह नींद से जागने की बजाए खर्राटों का एक डरावना सुर निकालकर हमारी जिज्ञासा को डरा देते और ऐसा महसूस होता कि हम किसी खतरनाक जंगल में फंस गए हैं जहां तरह-तरह की भयानक आवाजें आ रही हैं और हमारी आवाज सुननेवाला कोई नहीं है। जिंदगी में हमने दो ही आदमियों को बैठे-बैठे सोते देखा है—एक अपने मास्टर जी को और दूसरे अपने नाना जी को जो अकसर गालों पर शेविंग क्रीम लगाकर एक हाथ में रेज़र और दूसरे हाथ में आईना थामे ही सो जाते थे और खर्राटे मारने लगते। बैठे-बैठे आदमी कैसे सो सकता है जबकि वह इतना जरूरी काम कर रहा होता, यह तो शोध का विषय है जिससे हम बाद में निपटेंगे। हम बात कर रहे थे मास्टर जी की जो पूरा एक घंटा सोने के बाद टोपी संभालते हुए हमारे माता-पिता की आँखों में धूल झोंकते उठ खड़े होते। खैर, उस वक्त स्लीप टाइमर का आविष्कार नहीं हुआ था नहीं तो हम यह कह सकते थे कि उनके दिमाग में कोई ऐसा यंत्र है जो अपने आप ऑन और ऑफ हो जाता है। चंद दिनों के बाद हमें भी शरारत सूझी—उनके निद्रामग्न होने के बाद उनकी नींद की गहराई जांचने की कोशिश में कागज़ का एक छोटा-सा रोल बनाकर उनकी नाक में डाल दिया। एक जोरदार छींक के साथ ही वह अपनी ओरिजिनल शेप में आ गए, जैसे कुछ हुआ ही न हो। उस दिन उनकी नींद की इतनी गहराई जानकर हमने भी रफूचक्कर होना शुरू कर दिया। उनके निद्रामग्न होने के बाद, जैसे ही उनके खर्राटों का सिगनल होता, हम वहाँ से भाग लेते और ठीक उनकी नींद पूरी होने में दो सेकिंड पहले वहां विराजमान होकर ज़ोर-ज़ोर से सबक याद करने लगते। एक दिन वह रंगे हाथों पकड़े गए जब पापा अचानक वहां अवतरित हो गए। उनकी रोबदार आवाज उनके खर्राटों की भिन्न-भिन्न खतरनाक तरंगों से टकराई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और वह एकाएक सैल्यूट की मुद्रा में 'यस सर' कहते हुए खड़े हो गए। शायद वह कुछ साल फौज में भी रहे थे और पुरानी प्रवृत्ति को भूले नहीं थे। जैसे हर क्रिया के बाद प्रतिक्रिया होती है, इस प्रतिक्रिया में उनके मुख से यकबयक निकला—मैं तो बिटिया को सिखा रहा था आदि-मानव कैसे सोता था। पर बिटिया तो नदारद है। उस दिन उनके जाने के बाद कृष्णभक्ति में आकंठ डूबे हम भगवान को पुकार रहे थे कि हे कृष्ण कन्हैया, मुझे बड़ा होकर कुछ भी बनाना जैसे नाई, धोबी, कुम्हार इत्यादि पर अध्यापक कभी न बनाना, पर कन्हैया ने हमारी प्रार्थना को अस्वीकार कर अपनी कोमल ठुड्डी पर हाथ फेरकर आंखों में शरारती भाव लाकर कहा था—बच्चू, तुझे अध्यापक न बनाया तो मैंने भी मां यशोदा का मक्खन नहीं खाया। कन्हैया की धमकी रंग लायी और हम बन गए अध्यापक—वो भी नाकारा क्योंकि हम आजकल के बदले अध्यापकों यानी गुरु-घंटालों की बदलती हुई जागरूक प्रवृत्तियों को आसानी से अपना नहीं पा रहे हैं।

अगर आप भी गलती से अध्यापक बन जाएं या बनने को मजबूर करवाए जाएं तो एक अच्छे जागरूक अध्यापक के गुणों से हम आपको परिचित करवा देते हैं।

सबसे पहले आप अपनी गर्दन को शुतुर्मुर्ग की तरह शान से उठाकर शिक्षा संस्थान में जाइए और प्रिंसिपल की तरह व्यवहार कीजिए। जैसे प्रिंसिपल कोई कक्षा नहीं लेता, आप भी मत पढ़ाइए। अगर गलती से किसी बाहरी दबाव के द्वारा आप कक्षा में धकेल दिए जाएं तो विद्यार्थियों को बिना पढ़ाए ही ढेर सारे होमवर्क से लाद दीजिए जैसे कुम्हार गधे पर बोझा डालता है। चाहे उसे ढोने की कोशिश में वह बेचारा दो कदम आगे चले और चार कदम पीछे को फिसल जाए। अगर कोई पिता आपसे पूछने आ जाए तो भीमसेनी मुद्रा बनाकर उसे घर पर न पढ़ाने के आरोप लगाते हुए चारों खाने चित करते हुए घर पर पढ़ाने को कहिए, चाहे बेचारा पिता बचपन में अपने लिए भी इतना समय न निकाल पाया हो और उसे नये सिरे से शिक्षा ग्रहण करनी पड़े। इसमें आप दोहरी भूमिका निभाएंगे—विद्यार्थी भी पढ़ जाएगा और साथ-साथ उसके पिता जी भी,

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यानी आप एडल्ट एजूकेशन को बढ़ावा देंगे। इसके बावजूद आप संतुष्ट न होइए और एक बार पुनः बच्चे को गलत-सलत पढ़ाने के आरोप में पिता जी की उठी हुई नजरों को नीचा कर दीजिए। अगर वह आपसे यह कहे कि बच्चे के नंबर तो अच्छे आए हैं तो उससे कहिए कि जैसे वक्त बदलते देर नहीं लगती, नंबर भी बदलते देर नहीं लगती और आंखों में सस्पेंस के भाव लाते हुए कहिए—ऐसा न हो कहीं... कहकर रेड सिगनल देते हुए वाक्य को अधूरा छोड़ दीजिए, बेचारे पिताजी आपको ट्यूशन के लिए अनुबंधित कर लेंगे चाहे घर जाकर वह एक्यूट इनसोमेनिया यानी मेंटल डिप्रेशन में नींद न आने की बीमारी से ग्रस्त हो जाएं और रात भर घर के बजट की पुरानी डायरी का निरीक्षण करते हुए यह भी न जान पाएं कि वह बिस्तर पर बैठे हैं या जमीन पर, आकाश में विचर रहे हैं या पाताल में धंस रहे हैं।

आपको इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि विद्यार्थी के माता-पिता कहां कार्यरत हैं जिससे आप विशेष ध्यान दे सकें यानी कम नंबर देकर उन्हें डराया जा सके और यदा-कदा बुलवाकर उनसे व्यक्तिगत काम निकलवाया जा सके।

उन विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान दें जिनके घर के पिछवाड़े नयी-नयी सब्जियां उगी हुई हैं, मुर्गे-मुर्गियों की नयी ब्रीड का पालन-पोषण हो रहा है ताकि थैलों में बंद कुकड़ू-कूं करते मुर्गे आपसे साक्षात्कार को बेताव आ आपके दरवाज़े पर बांग दे जो आपको नींद से भी जगाएं और नाश्ते में भी काम आएं और अंत में यह कि अगर आप बोर्ड के चेयरमैन के हाथों की तकनीकी गलती के कारण पर्चे डालने को नियुक्त होते हैं तो पर्चों की अनेकानेक जीरोक्स प्रतियाँ करवा लें जिन्हें वक्त पड़ने पर आप सेल कर सकें। ये तो थे अच्छे अध्यापक बनने के नये गुर। जैसा कि हम आपसे पहले भी कह चुके हैं कि विद्यार्थी शिक्षा के रणक्षेत्र में नये-नये दांव-पेच खेल रहे हैं तो ऐसे शिक्षकों से निपटने के लिए विद्यार्थीगण क्यों पीछे रह जाएं, वैसे आवश्यकता आविष्कार की जननी तो है ही।

विद्यार्थियों के लिए पहला गुर यह है कि परीक्षा-हॉल में जाने से पहले काग़ज़ की महीन-महीन कतरनें काट लें और उन पर हैड लैंस का

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रयोग करते हुए इतना महीन लिखें कि उनकी सात पुश्तें भी उन अक्षरों को न देख पाएं। उन दिनों दस्तानों, बैंडेजेज़, पूरी बाँह की कमीज-टोपियों का इस्तेमाल करें जिससे नकल सामग्री को छिपाने का मौका मिले। अगर फिर भी हमारे जैसा कोई अड़ियल अध्यापक प्रकट हो जाए तो छुरे की चमचमाहट से उसकी आंखें चौधिया दें ताकि वह आपकी ओर दुबारा देखने की हिम्मत न जुटा पाए। सुपरिंटेंडेंट के घर सुबह-सवेरे एक जोड़ी मुर्गे ले जाइए। अगर आप इन बातों पर गौर करेंगे तो चाहे आप साल भर भी अपने शिक्षक को मुंह नहीं दिखाइए तो भी आपके विद्यार्थी जीवन को कोई क्षति नहीं पहुंचेगी और साल दर साल आप अच्छे नंबरों से पास होते रहेंगे। हां, अगर आप अध्यापक बन जाएं तो अध्यापकों को दिए हुए गुरों की ओर ग़ौर फरमाइए, बस समझ लीजिए हो गया शिक्षा का सर्वांगीण विकास। हां तो बात हमने अध्यापक बनने से शुरू की थी और जब भी हमने उपर्युक्त गुरों पर अमल करने की कोशिश की तो हमारी अंतरात्मा ने हमें ललकारकर बुरी तरह झिंझोड़ दिया और हम हाथ मलते रह गए पर आप अपनी अंतरात्मा की ललकार को बुरी तरह फटकार दीजिए और जो गुर हमने आपको बताए हैं, उन पर अमल कीजिए, तभी आप शिक्षा का सर्वांगीण विकास कर सकते हैं। कभी-कभी हमारा दिल भी यही चाहता है कि ज़माने की रफ़्तार देखें यानी तेल देखें, तेल की धार देखें, पर नहीं, हम अपने नाकारा होने पर बेहद संतुष्ट हैं। हां, अगर आप आज की शिक्षा से अति प्रभावित हैं तो तेल देखिए, तेल की धार भी देखिए और आजकल के बुझते कुलदीपकों को प्रज्वलित करने के लिए इस्तेमाल कीजिए। पर खबरदार, हम आपको चेतावनी देते हैं कि आप हमसे या किसी से यह कहते हुए न पाए जाएं कि इस घर को आग लग गई घर के चिराग से।

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4 हम होंगे कामयाब

आज हम जिनके विषय में लिखने जा रहे हैं उन्हें आप हर तरफ उछलते, कूदते, मचलते, इठलाते, इतराते देख सकते हैं यानी चहुं ओर इतना बोलबाला है और क्यों न हो, गणेश-पूजा के साथ-साथ इन्हें भी तो पूजा जाता है यानी चूहे महाराज। गणेश जी ने इन्हें इनकी चुस्ती-फुरती के लिए ही अपने यातायात का साधन चुना ताकि यह पलों में धरती के एक छोर से दूसरे छोर तक कलियुग की मारुति की तरह फलांगते नजर आएं।

सच पूछिए तो इतने वर्षों में कभी भी चूहों ने हमें अपनी कलम उठाने के लिए प्रेरित नहीं किया चाहे जिस भी अंदाज में वे हमारे समक्ष प्रकट हुए। तब भी नहीं जब वे हमारे सिल्की पर्दों पर कूद-कूदकर जिमनास्ट करते रहे और नित-नये एडवेंचरस पोज़ में पाए जाने लगे, तब भी नहीं जब वे हमारे सामने धड़ल्ले से ऐसे गुज़रते रहे जैसे कोई ऑफिस का बॉस सीना तानकर अपने जूनियर्स के सामने से गुज़र जाता है, तब भी नहीं जब वे सोते वक्त हमारी नीचे लटकी उंगली का सहारा लेकर बिस्तर पर चढ़ने की नाकाम कोशिश करते रहे, तब भी नहीं जब वे हमारे डाइनिंग टेबिल पर बैठकर हमारे साथ खाना खाने की कोशिश करते रहे और हुश करने पर मूंछों को आर्टिस्टिक अंदाज में घुमाते हुए हमारी आंखों में आंखें डालते बड़े स्टाइल से ऐसे मुड़ते रहे जैसे धमकी दे रहे हों—आज तो छोड़ दिया बच्चू, फिर कभी देखेंगे। खैर, उनको तो हम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
तब से देखते आ रहे हैं, जब से हमने होश संभाला है और वह भी 'बच्चू देख लेंगे' के अंदाज में आजीवन हमें देखते रहेंगे। पर इस बार उन्होंने हमें ऐसा देखा कि सारा हिंदुस्तान ही महज़ उनकी कल्पना से सिहर उठा। अखबारों में, पत्रिकाओं में, टी.वी. के पर्दे पर उनके प्रति सतर्क रहने की जानकारी दी जाने लगी यानी टी.वी. के रंगीन पर्दे से लेकर हमारी आंखों के पर्दों पर उनकी धमकी देती हुई छवि अंकित हो गई। प्लेग जो भारत से पूर्णरूप से खत्म कर दी गई थी, जाने इसके जरासीम कहां से एकाएक प्रकट हो गए और रेटफ्लीज ने चूहे और हमारे बीच संपर्क स्थापित करके धड़ाधड़ चूहों का और आदमियों का खात्मा करना शुरू कर दिया, यानी चूहे-महाराज, तुम भी डूबे और हमें भी ले डूबे' उस उक्ति को सार्थक करते रहे। खुद भी डूबेंगे सनम तुम्हें भी ले डूबेंगे।

वैसे भारतवर्ष को ले डूबने का सवाल है तो तुम सारे महानुभावों को पीछे छोड़कर अग्रणी रहे हो। बिना किसी मेहनत-मशक्कत के सारी एग्रीकल्चर का सफाया कर दिया और रहने को आराम से घर भी बना लिए यानी तुम भी एक डेमोक्रेटिक देश के बाशिंदे हो। तुम्हें सब अधिकार दिए जाते हैं चाहे इसे बरबाद करो या आबाद करो, आखिर पूंजी तुम्हारा है—खाओ या फेंको। वैज्ञानिक सालोंसाल लगे रहे अच्छी किस्म के नए-नए अनाज वगैरह उत्पन्न करने में और तुमने उन्हें गुड-गोबर कर दिया। वैसे भी आप डेमोक्रेसी का पूर्ण रूप से फायदा उठाने में पीछे क्यों रहें ? आखिर आप देश के प्रति कुछ तो समर्पित रहे हो और साईंस लेबोरेटरीज़ में जबरन डाईसेक्ट होते रहे हो। बेचारों का कसूर इतना है कि उनके जिस्म के सारे सिस्टम इंसानों से मिलते हैं—सिर्फ दिमाग को छोड़कर जो मनुष्य की तरह इतना खुराफाती नहीं हुआ है क्योंकि इस वक्त जाने क्यों हम आपके प्रति उमड़ती सहानुभूति चाह कर भी दबा नहीं पा रहे हैं और हमें यह जताने को मजबूर होना पड़ रहा है कि वैज्ञानिक जब भी कोई परीक्षण करते हैं तो चूहों पर। कोई नई दवाइ का प्रयोग पहले चूहों पर ही किया जाता है अगर इंसानों की सप्लाई कम हो तो। यानी युगों-युगों से चूहे इंसानी खुराफात का शिकार बनकर लेबोरेटरीज़ की ज़ीनत बने रहे और युवावस्था में ही संसार त्यागने को

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE 2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मजबूर होते रहे। और तो और, आपके व्यक्तित्व पर भी न जाने कितनी बार चोट की गई, जैसे—तू आदमी है या चूहा, वह शेर तो क्या, चुहिया से भी डरती है, बॉस के सामने वह चूहा बन जाता है, तेरे बाल तो चुहिया जैसे हैं। यहां तक कि आदमी ने इन बेचारों को मारने के लिए प्रतिद्वंद्वी बिल्लियों को छोड़ दिया। हींग लगे न फिटकरी, रंग भी चोखा आए, और मनुष्य नेताओं की तरह तुम्हारे साथ कूटनीति के खेल खेलता रहा ताकि आप कुछ नया न सोचकर सारी उम्र बिल्लियों के गले में घंटियां बांधने के प्लान बनाते रहें।

तो ऐसे में अगर चूहों ने इंसानों की मति भ्रष्ट करने की भीष्म प्रतिज्ञा कर ही ली तो हम आपको अपराधी नहीं ठहराते। आखिर आप गांधी तो बन नहीं सकते कि अगर कोई एक गाल पर चांटा मारे तो दूसरा गाल भी उसके सामने पेश कर दीजिए। आपकी और इंसान की टक्कर बराबर की हो, आपका यही जज़्बा रहा। पर इंसानों को मात देने की आपकी हर कोशिश के आगे एक प्रश्नचिह्न लटकता रहा और इस अति कष्टदायी कार्य के लिए शायद आपको सात जन्म भी थोड़े पड़े। जैसे बैक्टीरिया के कल्चर में एंटीबॉयटिक का प्रयोग करने पर सारे बैक्टीरिया नहीं मरते, कुछ रेसिस्टेंट टाईप रह जाएंगी, उसी प्रकार मानवों को मारकर आप अति खुराफती मानवों को जन्म दे रहे जो बहुत ज्यादा रेसिस्टेंट हैं, अब चाहे आप उन्हें प्लेग के कीटाणु सहेज कर मारिए या अपनी यूरीन में अलग तरह के बैक्टीरिया पालकर। बिलकुल रावण की तरह जिसे आप हर साल मारते रहे, हर गुजरते साल अति शक्तिशाली रावण जनमते रहे।

वैसे हमने कल ही पढ़ा है कि सबसे पहले जीवन डारविन के बार्मलिटिल पांड में नहीं उपजा था बल्कि स्पेस में सूरज के इर्द-गिर्द फैले कॉमेट्स से आया और आप भी इत्मीनान से बैठिए, शायद कोई नई तरह का जीवाणु स्पेस से आ जाए और तुम्हारे साथ मिलकर हनुमान जी की बढ़ती हुई पूंछ की तरह मानवों यानी दानवों की बढ़ती हुई नस्ल को धराशायी करने में कामयाब हो सके तो आइए मिलकर दुआ करते हैं कि हम होंगे कामयाब एक दिन।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5 आपकी अंतिम-यात्रा सुखमय हो

अभी-अभी हमें हमारी एक प्रिया सखी का भावविह्वल करने वाला एक पत्र मिला है। लिखा है—न जाने ये रेल यानी लौह-पथ-गामिनी, कितने लोगों को कितने लोगों से मिलवाती और बिछुड़वाती रही है और बिछुड़वाती रहेगी। यह लाइनें पढ़ते ही हमारी संपूर्ण चेतना रेल के जनरल डिब्बे में हिचकोले खाने लगी है और हम सोच रहे हैं कि इस लौह-पथ-गामिनी ने खुद लौह पथ पर चलते-चलते न जाने कितने भारतीय प्राणियों को लोहे के चने खिलवाने का बीड़ा उठाया है और भारतीय प्राणी दुःख झेलने के इतने अभ्यस्त हो चुके हैं कि जब उन्हें दुःख नसीब नहीं होते, तो वे सुख के असहनीय दर्द से तड़प उठते हैं और यह कहते हुए पाए जाते हैं कि हमें गम है यह कि हमें कोई गम नहीं।

और उसी गम को गले लगाने के लिए वे यात्रा करते हैं रेल के जनरल डिब्बे में चाहे आदतन करें या अपनी जेब से मजबूर होकर और रेल का वह जनरल डिब्बा उन्हें डारविन की थ्योरी का ज्ञान करवाता है जिसमें उसने कहा है—स्ट्रगल फॉर एक्ज़िस्टेंस और सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट—यानी हर कोई पृथ्वी-रूपी डिब्बे में जगह बनाने के लिए संघर्ष करता है। सार वही है जो जीने के लिए फिट है। और ज़िंदा हर प्राणी डारविन की इस थ्योरी को बिना पढ़े ही सीख-समझ जाता है।

अब बात यहां चली है फिटनेस की तो हम आपको बता दें कि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रेल के डिब्बे में जो प्राणी सफर करते हैं, हमारा मतलब जो कष्ट झेलते हैं—वह सब व्यर्थ नहीं जाता क्योंकि वहां से हर प्राणी शारीरिक तौर पर फिट होकर बाहर आता है। अगर आपके ज़ेहन में यह ख़याल कौंध रहा है कि आप कोई जिम या योग सेंटर ज्वाइन करना चाहते हैं तो इस ख़याल को तिलांजलि दे दीजिए—सिर्फ महीने में एक बार रेल के जनरल डिब्बे का सफर कीजिए, इससे आप शारीरिक तौर पर फिट भी रहेंगे और अगर आप चाहते हैं तो टिकट के पैसे भी बच जाएंगे।

आप सोच रहे होंगे कि वह कैसे तो हम दो मिसालें आपके सामने प्रस्तुत कर रहे हैं, वैसे आप खुद भी समझदार हैं।

पहली मिसाल एक नारी की है जो दुर्भाग्य या भाग्य से हमारी पड़ोसिन है। उन्होंने कभी भी अपने पूरे जीवनकाल में टिकट नहीं खरीदा और अगर टिकट खरीदा भी तो बर्थ की रिजर्वेशन नहीं करवायी। फिर भी जादू देखिए कि वह आराम से पैर फैलाकर सोती हुई जाती हैं।

आप सोच रहे होंगे यह कैसा जादू है तो हम यही कहेंगे—रेल में सफर करती हुई भूखी-प्यासी जनता को रोटी के दो टुकड़े दिखलाकर उनकी आँखों में चमक लाने का जादू, उनके कुलबुलाते पेटों को राहत दिलाने का जादू। ज़ाहिर है वह टिकट के बदले टिफिन साथ में रखती हैं और इसी टिफिन के जादू से वह जनता की सोच को गिरफ्तार करके उन्हें उनकी सीटों से विमुक्त करवाकर बड़े आराम से बर्थ पर सोती हुई दिखाई देती हैं और जनता फर्श पर बैठी हुई।

वैसे भी भारत की जनता दो चीज़ों की भूखी है—एक तो रोटी की और दूसरे अपना भविष्य जानने की। भविष्य जानने की इस उत्कट अभिलाषा को पूरा करते हैं ट्रेन में चढ़े असंख्य साधु-संन्यासी, जो उन्हें झूठा सुनहरी भविष्य बतलाकर उनका वर्तमान भी अंधकारमय कर देते हैं। चंद मिनटों बाद साधु महाराज की भक्ति में भाव-विभोर यात्री बर्थ के नीचे उनकी सेवा में तल्लीन दिखाई देते हैं और पूरी सीट पर पैर फैलाए हुए दिखाई देते हैं साधु महाराज जी। और तो और, सरकार ने भी गेरुआ वस्त्रधारियों को मुफ्त यात्रा करने की इजाज़त दे दी है चाहे उसे पहनकर कोई डाकू ही क्यों न चढ़ आए—अरे, हमसे भूल हो गई

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्योंकि हम डाकू के साथ श्रीमान या श्रीमती लगाना भूल गए—हमें तो उन्हें श्रीमान या श्रीमती डाकू जी कहना चाहिए था—क्या पता कोई डाकू जी सरकार के सामने आत्मसमर्पण कर दें और इलेक्शन जीतकर मंत्री बन जाएं और हमारे समेत रेलगाड़ी को अपनी मनमानी से घाटी की ओर मोड़ लें—और वहीं हमारा क्रियाकर्म कर दें। आप ज़रा सोचिए हमारा क्या होगा इसलिए हमने हर घटिया चीज़ के पीछे जी लगाना शुरू कर दिया है। जैसे घूरे के दिन फिरते हैं, क्या पता डाकू जी के भी दिन फिर जाएं।

वैसे डाकुओं और साधुओं से हमें बड़ी प्रेरणा मिली है और भविष्य में भी मिलती रहेगी। क्योंकि रातों-रात नेता बनने का शार्टकट डाकूगिरी और साधुगिरी से ही शुरू होता है—और हमारा देश अन्न के स्थान पर दो चीज़ें ही भरपूर मात्रा में उगाता है—एक साधु और दूसरे डाकू, जो एक-दूसरे के पर्याय हैं।

खैर, शुरू में हमने बात की थी कि कैसे रेल डिब्बे में चढ़ा जाए और अपने आपको वहां एडजस्ट करके शारीरिक तौर पर रखा जाए।

सबसे पहले आप डिब्बे में घुसने के लिए अपने आपको मानसिक रूप से तैयार कर लीजिए, उससे फायदा यह होगा कि कहीं आप वहां की व्यवस्था देखकर उलटे पांव वापस न आ जाएं—आप यह सोचकर कदम रखें कि आप भेड़-बकरियों से भरे हुए एक डिब्बे में कदम रख रहे हैं और आपको उनके बीच फिक्स होना है। डिब्बे में कदम रखते ही आप इंतजार कीजिए कि वहां विचरने वाले प्राणी सांस कब अंदर को खींचते हैं। जैसे ही वे अंदर को सांस खींचें, आप तुरंत उस क्रिया से उपजी हुई जगह में अपने आपको फिक्स कर लें। जैसी जगह में आप फिक्स हों, उसी के मुताबिक आपके शरीर की आकृति बन जाएगी यानी इस समय आप योग के अनेकानेक आसन कर रहे होंगे—कभी आप गर्भ-आसन करते दिखाई देंगे तो कभी कुक्कुट आसन, कभी धनुषासन तो कभी हठ-आसन, यानी योग के सभी आसन करने में आप माहिर हो जाएंगे।

और बड़े गर्व से आप हिमालय पर विचरने वाले साधुओं को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ललकार सकते हैं और कह सकते हैं—है कोई मेरी तरह हठयोग की विद्या में माहिर तो मेरे सामने आए !

हठयोग के आसन सीखने के साथ-साथ अगर आप मन की एकग्रता बढ़ाना चाहते हैं तो वह भी अपने आप बढ़ जाएगी। जब आपका संपूर्ण ध्यान अपने जरूरी सामान पर घंटां केंद्रित रहेगा—साथ-साथ आप प्राकृतिक क्रियाओं को घंटों रोकने में माहिर हो जाएंगे—एक तो जरूरी सामान को अकेले न छोड़ने के डर से और दूसरे, प्राणियों के फैले ढेर के उच्च-शिखर को लांघने के डर से। अगर आप फिर भी उन्हें लांघने की हिम्मत जुटाएं तो आप हाई और लांग जंप में माहिर हो सकते हैं और बढ़िया एथेलीट बन सकते हैं—रह गई बात प्राणायाम सीखने की तो जब आप वहां फैली दुर्गंध से त्रस्त होकर घंटों सांस रोके बैठे रहेंगे तो वह अपने आप ही आ जाएगा—यानी रेल में सफर करने से आपके संपूर्ण व्यक्तित्व में निखार आएगा, पर थोड़ी-सी सावधानी आपको बरतनी होगी। रेलों में दिन-प्रतिदिन बढ़ते हुए बम-विस्फोटों और रेलों से जुड़ी अन्य दुर्घटनाओं को ज़ेहन में रखते हुए, अपने प्रियजनों से विदा लेते वक्त अपने जीवन में हुई सारी गलतियों की माफी मांगनी होगी और कहना होगा—अब शायद ही लौटकर आयेंगे, हमारी भूल-चूक माफ करना, हमारे बाल-बच्चों की जिम्मेदारी अब तुम्हीं पर है। वसीयत के काग़ज़ पड़े हैं, पढ़ लेना।

अंत में राम ही बता सकते हैं कि आप लौटकर आयेंगे या नहीं और हम आपसे कहेंगे—चढ़ जा बेटा सूली पर, भली करेंगे राम। अगर आप लौटकर नहीं आए तो राम आपका भला करें—पर अगर आ गए तो आप सारी योग विद्याएं सीखकर ही लौटेंगे।

खैर, घबराइए नहीं—दुनिया में आना-जाना तो बना ही रहता है और कभी-कभी जिंदगी के एडवैंचर के समुद्र में गोते खाना भी बहुत सुखद लगता है। इससे बड़ा एडवैंचर क्या होगा कि आप अपने गंतव्य पर पहुंचने के बजाए अपनी राहें बदल लें और रेलों की मेहरबानियों से जीवन के अंतिम पड़ाव पर पहुंच जाएं और यह कहते हुए पाए जाएं कि निकले थे कहां जाने के लिए, पहुंचे कहां मालूम नहीं। खैर, अंत में हम यही कहेंगे—भगवान करें, आपकी अंतिम-यात्रा सुखमय हो।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

6 कायाकल्प

वह जानवर अनेकानेक रंगों से रंगे-पुते जानवरों में झट पहचाना जाता था, क्योंकि वह सिर्फ तीन रंगों का जानवर था और उन्हीं तीन रंगों से उसके शरीर पर खुदा था—सत्य, अहिंसा, प्रेम की सदा विजय। पहले-पहल सारे जानवर इसी तरह के हुआ करते थे और उनके शरीर पर भी यही लाइनें खुदी रहती थीं। पर वक्त बदलता गया, सब जानवरों ने उन पंक्तियों को अपने बड़े-बड़े नाखूनों से खुरचकर अपने शरीर पर नये-नये रंग पोत लिये और सुविधा-भोगी हो गए।

वह असली तीन रंगों वाला जानवर मूक दृष्टि से निर्विवाद उन्हें देखता रहता, कई बार उनकी आलोचना भी करता, पर सब व्यर्थ। वे रंगारंग जानवर उसकी एक न चलने देते, बल्कि उसे घृणा से देखकर मुंह बिचका लेते और कहते कि वह इतना बुद्धिहीन है कि उसमें सुविधाओं को भोगने की भी क्षमता नहीं है और वे जिंदगी की दौड़ में कभी उसे कोहनियों से धक्का देकर, कभी टांग से एक ओर खिसकाकर आगे निकल जाते। और वह सोचता रह जाता कि वह कहां गलत है।

कुछ बुद्धिजीवियों ने उसे रंग बदलने की और उनके साथ मिल जाने की सलाह दी पर वह नहीं माना और अपनी जिद पर अड़ा रहकर अपनी अंतरात्मा की आवाज़ सुनता हुआ उनके साथ प्रतिस्पर्धा न कर पाने की सज़ा भुगतता हुआ एक कोने में सहमा-सा पड़ा रहता और मूक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दृष्टि से उनके द्वारा हो रहे क्रिया-कलापों को सिर्फ देखता भर रहता।

एक दिन कुछ वाइल्ड लाइफ के संरक्षकों की नज़र उस पर पड़ गई। उन्होंने उसे रेयर नस्ल का जानवर समझकर वाइल्ड लाइफ सेंचुरी में रखवा दिया।

उस अनोखे जानवर के किस्से रातों-रात सारी दुनिया में फैल गए। लेखकों ने उस पर कविताएं-कहानियां लिखीं। मूर्तिकारों ने उसकी मूर्तियां बनाई। समाज-सुधारकों ने उस पर विशेष संगोष्ठियां रखीं, पर्चे पढ़े गए और उसके आचार-व्यवहार और उसकी बताई हुई नीतियों पर चलने की प्रतिज्ञा की गई।

कुछ दिन बाद चंद क्रांतिकारी नौजवान वहां से गुजरे। वे उसके आचार-व्यवहार से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उसके बताए हुए रास्तों पर चलने की प्रतिज्ञा की और उसकी चरण-रज को माथे से लगा लिया।

कुछ वैज्ञानिकों की नज़र भी उस पर पड़ी। उन्होंने उसे शोध का विषय बना लिया और संसार की इस रेयर नस्ल को, जो संसार के लगभग विदा लेने वाली थी, संसार की अन्य नस्लों से जो कुछ हद तक उससे मिलती-जुलती थीं, क्रॉस करवाकर उसके कई हाइब्रिड तैयार किए गए।

एक दिन वही क्रांतिकारी नौजवान वहां से गुज़रे। उन्होंने उस अनोखे जानवर के आचार-व्यवहार को अपनी जिंदगी में ढालने की बड़ी कोशिश की थी लेकिन जब भी वे उनकी बताई हुई नीतियों पर चलने की कोशिश करते, उन्हें गेंद की तरह उछालकर जिंदगी की बाउंड्री के पार फेंक दिया जाता। उन्हें हर मोड़ पर पराजित होना पड़ता। समाज की नज़रों में वे दिन-प्रतिदिन गिरते जा रहे थे, क्योंकि समाज में व्याप्त कूटनीतियों और व्यभिचारों को वे गले से नहीं उतार पर रहे थे। अतः उन्होंने उस अनोखे जानवर को अपनी-अपनी मशालों से जिंदा जला देने की ठान ली और उसी ओर चल दिए। वहां पहुंचते ही वे भौंचक्के रह गए—उस अनोखे जानवर को पहले ही मार दिया गया था और कई बुद्धिजीवी उसके मृत जिस्म के आगे खड़े होकर आंसू बहा रहे थे।

इतने में उनकी नज़र कुछ और तीन रंगों वाले नन्हे-नन्हे यहां-वहां खेलते हुए जानवरों पर पड़ी। पूछने पर पता चला कि ये उसी जानवर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के पैदा किए बच्चे हैं। नौजवानों ने हतप्रभ होकर उन जानवरों को देखा, रंग तो वही तीन हैं–पर उनके शरीर पर 'सत्य, अहिंसा और प्रेम की सदा विजय' के स्थान पर खुदा हुआ है–'हिंसात्मक प्रेम में असत्य की विजय'। उन्होंने उन हंसते-खेलते नन्हे-नन्हे जानवरों को नमन किया, उनकी चरण-रज माथे पर लगाई और उनकी जय-जयकार करते हुए आगे बढ़ गए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

7 नारियों की उम्र का अनुसंधान

उम्र सोलह की सौ बरस रहे कायम, सौ बार यही दुआ है मेरी मौला तुझसे। चौंक गए न आप और सोच में भी पड़ गए कि सोलह बरस की उम्र सौ बरस तक कैसे टिकी रह सकती है। पर हम भी अपने संपूर्ण होशोहवास में यह दावा करते हैं कि टिकी रह सकती है और अगर आप अब भी मानने को तैयार नहीं हैं तो हम आपको इसका एफिडेविट बनवा कर दे सकते हैं, आपके समक्ष प्रस्तुत कर सकते हैं और आपसे चैलेंज करते हैं कि अगर है हिम्मत तो दुनिया में विचरती हुई अनेकानेक नारियों में से सिर्फ एक नारी की बिलकुल सही-सही उम्र की जानकारी हमें दीजिए और फिर हमारे समक्ष प्रस्तुत होइए। क्या कहा अभी-अभी जा रहे हैं आप। देखिए, सिर्फ कुछ पल ठहर जाइए, हमें पता है कि हम आपको मौत के कुएं में धकेल रहे हैं, जिसमें से आप शायद ही वापस लौटें और भगवान शंकर की कृपा से अगर लौट भी आए तो ऐसी फ़िज़ीकल और मेंटल फार्म अख्तियार कर लें कि आप हमसे वार्तालाप करने के काबिल ही न रहें। इसीलिए हम कहते हैं कि मोर्चे पर जाने से पहले आप हमारी भी कुछ सुन लें।

हमारे पड़ोस में एक देवी जी रहती हैं जिनकी उम्र का स्टेगनेशन पीरियड चल रहा है। वह पिछले पचास बरस से बीस की ही बनी हुई हैं। इस दुनिया में हर चीज़ बदलती है क्योंकि बदलाव प्रकृति का गुण

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है पर उनकी उम्र का अक्खड़पन देखिए कि वह प्रकृति के सारे नियमों को ताक पर रखकर परशुराम की तरह अपना त्रिशूल एक ही जगह गाड़ कर आगे बढ़ने का नाम ही नहीं लेती हैं और एक ही स्थान पर समाधिस्थ हो जाती है हर गुज़रते साल को अंगूठा दिखाते हुए।

हमारे जान-पहचान की एक और देवी जी हैं—उनकी उम्र हर साल बढ़ने की बजाए पांच बरस पीछे सरक जाती है जैसे वह किसी फिसलन से भरी हुई जगह पर पग धरती हुई आ रही हों कि एक कदम आगें, फिर पांच कदम पीछे और उनके गंतव्य पर पहुंचने के कोई आसार ही नहीं दिखते हों और हमें हमेशा अकसर यही डर बना रहता है कि पीछे की ओर फिसलते-फिसलते उनकी उम्र इतनी भी न फिसल जाए कि वह देवी जी घुटनों के बल चलने लगें या फिर दुबारा से अपनी माताश्री के गर्भ में विराजमान हो जाएं। एक सज्जन ने उनकी उम्र के इतिहास पर शोध करने की दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली और पूछा—'आपकी लड़की की उम्र कितनी है ?' वह बोली—'आठ बरस ।' फिर पूछा—'आपकी शादी को कितने बरस हुए हैं कि दस बरस और आपकी उम्र कितनी है कि अठारह बरस।

अगर वह अठारह बरस की हैं और उनकी लड़की आठ बरस की तो जाहिर है उनकी शादी हुई थी तब वह दस बरस की रही होंगी यानी उनका बाल-विवाह हुआ होगा जो हिंदू मैरिज एक्ट के अंतर्गत जुर्म है। वह सज्जन भी मरने-मारने पर तुल गए थे। बोले—'जैसा कि विदित है आपको मास्टर्स डिग्री लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, ये डिग्री आपने शादी के बाद प्राप्त की या शादी के पहले ?' वह बोली—'शादी होने से दो साल पहले।' इन सब आंकड़ों को मद्दे-नज़र रखते हुए वह सज्जन इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि वह पूरे छः साल की रही होंगी जब उन्हें मास्टर्स डिग्री लेने का सुखद अवसर प्राप्त हुआ होगा। तो यह सिर्फ दो ही तरह संभव हो सकता है—या तो वह पूरे एक साल की रही होंगी जब उन्होंने स्कूल की प्रथम कक्षा में दाखिला लिया होगा और हर साल तीन-तीन कक्षाएं पास करती आ रही होंगी या फिर वह अपनी माताश्री के गर्भ में ही बी.ए. की डिग्री प्राप्त करके धरा पर अवतरित हुई होंगी, अभिमन्यु

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की तरह, जिसने माता के गर्भ में ही चक्रव्यूह में घुसने का रास्ता खोज लिया पर बाहर निकलने का रास्ता खोजने से पहले ही वह संसार में प्रविष्ट हो गया। पर वह अभिमन्यु की भी गुरु निकलीं और गर्भ में बी. ए. की डिग्री लेने के साथ-साथ भविष्य में उनकी उम्र जानने के लिए बेताब लोगों को उम्र के चक्रव्यूह में फांसने का गुर भी सीखती रहीं कि अगर कोई उम्र के चक्रव्यूह में फंस भी जाए तो उसके बाहर निकलने के तमाम रास्ते कैसे बंद कर दिए जाएं।

खैर, उन सज्जन का उम्र-खोजी अभियान अधूरा रहा और इसके बाद जिसने भी उनकी उम्र के चक्रव्यूह में गर्दन घुसाने का अभियान चलाया, वह अधूरा ही रहा और तमाम जागरूक शोधकर्ता आधे-अधूरे ही वापस आए और इसी में उन्होंने अपनी गनीमत समझी।

यह तो थी उनकी करुण गाथा, पर हैरानी इस बात की है कि जब समय निरंतर आगे बढ़ता जा रहा हो और उम्र का स्टेशन पीछे छूटता जा रहा हो यानी दोनों विपरीत दिशाओं में कूच कर रहे हों तो सोलहवें खाने में युगों से बैठी हुई उम्र को सोलहवें साल के चेहरे में ढालने के लिए कौन से तत्त्व जिम्मेदार हैं। हमारा जवाब यह होगा कि फल, फूल, टमाटर, नींबू, तुलसी वगैरह। ये वस्तुएं घर में खाने में कम और चेहरे पर लगाने में ज्यादा काम आती हैं। बढ़ती उम्र से लड़ाई में सब्जियों-फलों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। ये सब भी उम्र के साथ मिलकर वक्त के साथ साजिश कर रही हैं।

आज के ज़माने में कौन किसके साथ मिलकर साजिश कर रहा है यह कहना अत्यंत मुश्किल है और फल या सब्जियां तो किसी के साथ फुसफुसाते भी नज़र नहीं आते जिससे दीवारें उन्हें सुन सकें और उम्र का भांडा फूट सके।

उम्र का भांडा न फूटे इसके लिए साइंसदां भी जिम्मेदार हैं क्योंकि वे भी तो नित नई दवाइयां ईजाद करके नारियों को अधिक-से-अधिक कम उम्र दिखने के फलसफे सिखाते हैं। लगता है दुनिया के सारे जीव-जंतु नारियों के साथ मिल गए हैं और इन सारे जीवों में साइंसदां ही नारियों का सब से अधिक साथ दे रहे हैं। जैसे जैसे [illegible]

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कर रहे हैं, वैसे-वैसे उम्र अवनति के उच्च शिखर को छूती जा रही है। इस में टांगों की स्किन का बड़ा योगदान है, जो स्थानांतरित होकर चेहरे की शोभा बढ़ाती है। टांगों की हड्डियां बेशक रोती-कलपती रहें कि यह क्या अंधेरगर्दी है, पूरे शरीर को चलाने में वे पूरे दिन जुटी रहती हैं, फिर भी उनकी खाल खींची जा रही है। पर उनकी सुनता कौन है, चेहरा अपनी शोभा बढ़ाए घूमता है। बेचारी टांगों के बलबूते पर खड़ा होकर हमारे यहां हर कोई किसी-न-किसी के कंधे पर खड़े होकर फल-फूल रहा है--पूंजीपति गरीब के कंधों पर खड़ा है, इंजीनियर सीमेंट, रेत और पाइपों के कंधों पर, वन अधिकारी पेड़ों के कंधों पर, मत्स्य अधिकारी मछलियों के कंधों पर, नेता जनता के कंधों पर, अध्यापक विद्यार्थियों के कंधों पर।

बात उम्र से शुरू हुई थी और कंधों पर आकर ठहर गई। आखिर बात को भी खड़े होने के लिए कंधा चाहिए। और शादीशुदा नारियों को अपनी उम्र को एक ही स्थान पर खड़ी करने के लिए भी कंधा चाहिए। और वह भी अपने बच्चों का कंधा। ऐसा न हो वे नादान बच्चे अपनी सही-सही उम्र बता दें जिसका विपरीत प्रभाव उनकी माता की उम्र पर पड़े। विपरीत प्रभाव से हमें याद हो आया कि एक सत्यवादी बालिका ने जब अपनी माता जी को अपनी उम्र बाईस वर्ष बताते सुना तो वह थोड़ी देर सोच में पड़ गई और केलकुलेट करने के बाद पूछा—'मम्मी, जब मैं पैदा हुई थी तो आप सिर्फ पांच वर्ष की रही होंगी।'

भगवान उम्र को इतने पतन की ओर भी न ले जाए कि बच्चे अपनी माताओं को बेटी कहकर पुकारें और पिताओं को बेटा; क्योंकि वे भी अपनी पत्नियों की देखा-देखी उम्र को रिवर्स गियर की ओर धकेलने में जुटे हैं।

हे प्रभु, हम आपसे हाथ जोड़कर यह प्रार्थना करते हैं कि ऐसी नौबत आने से पहले ही हमें धरा से उठा लें क्योंकि हम भी अभी तक अपनी असली उम्र छिपाने में कामयाब रहे हैं। पिछले दिनों एक सज्जन ने दावा किया था कि वह हमारी उम्र पर शोध करना चाहते हैं। इससे पहले कि वह शोध के चक्र में पड़ें, वह चाहते थे कि हम खुद-ब-खुद

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उन्हें अपनी सही-सही उम्र बता दें। पर हम भी कच्ची गोलियां नहीं खेले हैं। अलग-अलग परिस्थितियों में अपनी उम्र के आंकड़े बदलकर हम उसमें फ्लेक्सैबिलिटी ला चुके हैं और अपनी असली उम्र को भूलते जा रहे हैं। हमने उन सज्जन से कहा कि हमारी उम्र सिर्फ हमारी जन्मपत्री बनाने वाला ही बता सकता है, पर पूरे बीस बरस हुए जन्मपत्री बनाने के फौरन बाद ही वह परलोक सिधार गया। 'यानी आप बीस बरस की हैं ?' वह झटपट बोल पड़े। तब तो उसका मरना ही उसके लिए हितकर साबित हुआ वरना आपकी वजह से उसे बार-बार आपकी असली उम्र बताने के लिए कटघरे में उपस्थित रहना पड़ता, जो वह आपके डर से नहीं कर पाता। भगवान उसकी आत्मा को शांति दे।

और महानुभाव चुपचाप वहां से खिसक गए। जो भी महानुभाव हमारी उम्र पर शोध करना चाहते हैं, उनसे हमारी विनम्र प्रार्थना है कि ओखली में सिर न ही दें तो अच्छा है। बड़े-बड़े महारथियों ने इस फील्ड में कदम बढ़ाए थे लेकिन सब-के-सब नर्वस ब्रेकडाउन का शिकार हो गए। कृपा करके अपनी शोध का विषय बदल दीजिए, वरना आजीवन पछताएंगे और घबराकर कांपती टांगों से हाथ जोड़े हुए यही, सिर्फ यही कहते नज़र आएंगे :

तू रहे हमेशा बीस बरस की यह दुआ है मेरी,
बीस बरसों के हर बरस हों पांच बरस, यह दुआ है मेरी।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

8 ट्रैफिकवाद में विवाद

खुश रहो अहले-वतन अब हम तो सफर करते हैं। कुछ लाइनें थीं जो हमारे मुखारविंद से फूट रही थीं जब हमने अपनी नई-नवेली गाड़ी को जम्मू की क्षत-विक्षत सड़कों पर बेतहाशा दौड़ाने के लिए मजबूर कर दिया था। हमारा दिमाग़ सफर यानी सफर का मतलब यात्रा समझ रहा था और हृदय अपनी धड़कनों की ही आवाजों में गुम होता, असलियत को नकारता, यात्रा के सुखद विचार को लेकर अपनी ही धड़कनों की लय पर डिस्को कर रहा था। पर दिल बेचारा क्या जाने कि यात्रा के दुखद अनुभवों का प्रभाव सबसे पहले उसी पर पड़ने वाला है। आखिर टूटेगा तो दिल ही न। दिल को टूटना था सो टूट गया। और अब वह अपनी ही धड़कनों के साज पर राग भैरवी गा रहा है। किसने मज़बूर किया दिल को अपनी यह दुर्दशा बनाने के लिए, शायद अब तक तो आप जान ही गए होंगे, क्योंकि जम्मू के ट्रैफिक से और ट्रैफिक-चालकों के दुस्साहसपूर्ण कारनामों से आप और आपकी गाड़ियां अकसर प्रताड़ित होती रही होंगी।

कुछ तो कसूर हमारा भी था, गाड़ी चलाने में हम नौसिखिए ही थे और हमारे दिल के गुप्त विभाग से आवाज आ रही थी कि हम बचेंगे हम या तुम बचोगे तुम। ट्रैफिक ने किया क्या हसीं सितम। हमें लग रहा था जैसे हम सड़कों के मालिक हों और जितने आते-जाते लोग हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

या फिर नीचे तबके के वाहन यानी जूनियर्स जैसे साइकिल, स्कूटर इत्यादि की जान हमारी मुट्ठी में हो। चाहे तो बचा लें वरना मार दें। अभी कुछ ही मिनट पहले हमने गाड़ी समेत सड़कों का ज़ायज़ा लिया था कि एक हृष्ट-पुष्ट बकरी ठीक हमारी गाड़ी के सामने तन गई। हमने हॉर्न बजाया पर बकरी टस-से-मस नहीं हुई। शायद जम्मू के ई.एन.टी. विभाग से इलाज करवाया होगा। जैसे ही हमने गाड़ी दूसरी ओर मोड़नी चाही, बकरी भागकर पहले ही वहां तन गई जैसे कह रही हो—किधर जा रही हो बच्चू, पहले लाइसेंस तो दिखाओ। काश, हमारे पुलिस ऑफिसर भी इतने कार्य-कुशल होते नहीं तो चंद चलती-फिरती भेड़-बकरियों से ही कुछ सीखते। पर यहाँ तो सब उल्टा-पुल्टा हो रहा है। राह तो रोकते हैं पुलिस वाले पर कुछ इस तरह जैसे शादी में नये-नवेले दूल्हे की राह सालियां रोकती हैं—तब जाने देंगे जब रुपये दोगे।

हां तो, बात बकरी की हो रही थी। बकरी को न हटना था सो न हटी—जब तक हमने कार से उतरकर धीरे से उसके कान में कुछ कहा नहीं। बकरी बिफरी, कूदी, फिर दुलत्ती मारती हुई भाग खड़ी हुई। आप सोच रहे होंगे ऐसा क्या कह दिया हमने, हमने सिर्फ इतना कहा—मैडम, कहीं आप किसी पुलिस ऑफिसर की साली तो नहीं हैं।

अभी हम कुछ और दूर ही गए थे कि एक और दृश्य हमारे सामने आया। तीन-चार पुलिसवाले मैटॉडोर रुकवाकर डंडे के ज़ोर पर नोट हथिया रहे थे। हमारे अंतर्मन से आवाज़ आयी—क्या भारतवर्ष में भीख मांगने का स्टाइल बदल गया या फिर कटोरों का अकाल पड़ गया जिसकी वजह से उन्हें इतना आनंदमयी कृत्य डंडे के ज़ोर पर करना पड़ रहा है ! इन्हें तो बाकायदा पुलिस स्टेशन के आगे बैठकर भीख मांगनी चाहिए; जहां इन्हें सुरक्षा भी मिले और सम्मानजनक स्थान भी। और अगर कटोरा न हो तो न सही, हैल्मेट का प्रयोग भी किया जा सकता है भीख मांगने के लिए—बस उल्टा कर दो, कटोरा बन गया।

जैसा कि हमने सुना है एम.बी.बी.एस. विद्यार्थियों को मेडिकल कॉलेज के आगे, इंजीनियरिंग में डिग्री लिये हुए विद्यार्थियों को इंजीनियरिंग कॉलेज के आगे और मंत्रियों को पार्लियामेंट के सामने बैठकर [illegible] भीख

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिलेगी और इज्जत भी बनी रहेगी। पर पेशेवर भिखमंगे बहुत घाटे में रहेंगे। इसका सीधा असर उनके कैरियर पर पड़ेगा। पर तब तक तो वे नया ढंग सोच लेंगे भीख मांगने का।

अभी हमने कुछ ही दूर गाड़ी आगे सरकाई होगी, देखा कि दो-तीन मैटाडोर घूमती-झूमती, इठलाती-मंडराती आ रही हैं और देखते ही देखते द्रुत गति से भागने लगीं। हमने सोचा शायद मैटॉडोर रैली का आयोजन हो रहा है। हम डर के मारे सिमटकर एक ओर हो गए। हमने सुना था कि साइकिल स्कूटर से डरती है, स्कूटर कार से, कार बस से और बस ट्रक से वगैरह-वगैरह। लिहाजा हमें अपनी औकात का अच्छी तरह संज्ञान था और हम इसी सिनियोरिटी को ध्यान में रखते हुए चले जा रहे थे—इस बात से बेखबर कि इन सड़कों पर घूमते कार, ट्रकों, रेड़ों, तांगों के ट्रैफिकवाद में विवाद मचाने वाला बिल्लू नाम का सांड अकसर बेशुमार गाड़ियों को नियंत्रित करता है और किरण बेदी स्टाइल में दहाड़ता गाड़ियों को अपने सुडौल सींगों पर उठा लेता है।

इस अंधे युग में इतने क्रांतिकारी, प्रतिभा-निपुण और कर्तव्यनिष्ठ सांड से हमारा कभी साक्षात्कार नहीं हुआ था इसीलिए उससे मिलने की उत्कट इच्छा लिये हम अपनी लाल मारुति समेत उसी राह हो लिये यानी गुमराह हो लिये क्योंकि उसके होने वाले दुष्परिणामों से हम अभी तक अनभिज्ञ थे। बस, आप यह कह सकते हैं विनाश काले विपरीत बुद्धि और विपरीत बुद्धि लिये हम विनाश की ओर आंखें मूंदकर अग्रसर होने लगे। जैसे ही हमने बिल्लू जी के कार्यक्षेत्र में पदार्पण किया तो देखा प्रसन्नचित्त बिल्लू जी रेड़ियों के नीचे गिरी हुई फल और सब्जियों का आनंद ले रहे थे। अचानक हमारी आंखें उसकी लाल आंखों से चार हुईं तो उन्होंने अजीबो-गरीब शक्ल बनाई और नथुनों से अजीब-सी गर्र-गर्र की आवाज़ निकालते, फुफकारते अपने आर्टिस्टिक सींगों को आर्टिस्टिक अंदाज में घुमाते हमारी गाड़ी के पीछे दौड़े। यह प्रतिक्रिया शायद हमारे उभरते हुए बेपनाह हौसले को देखकर हुई थी। हमने अपनी गाड़ी द्रुत गति से दौड़ाई पर बिल्लू जी बस इतने भर से हमें छोड़ देने वाले नहीं थे। उन्होंने सड़क-दर-सड़क, गली-दर-गली हमारा एक कर्मनिष्ठ पुलिस

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऑफिसर की तरह पीछा किया, जैसे हम कोई उग्रवादी हों। जरूर इस बिल्लू में किसी कर्मयोगी की आत्मा का प्रवेश है। आज उसके खौफनाक सींगों से बच निकलना मुश्किल है। हम मन-ही-मन हनुमानचालीसा का पाठ करने लगे, शायद हनुमान जी ने हमारी दुख-व्याथा सुन ली क्योंकि वह बिल्लू सांड हांफता हुआ नकारात्मक अंदाज में सिर हिलाता बीच सड़क पर पालथी मारकर बैठ गया और हांफने लगा, जैसे सोच रहा हो—अरे, यह तो मेरी भी गुरु निकली, कोई और आए तो टक्कर लूंगा।

हमने रुककर कुछ इस तरह सांस ली, जैसे कोई प्राणायाम करने के बाद लेता है। फिर थोड़ी दूर गाड़ी चलाकर दाहिने मुड़े तो एक हृदय-विदारक दृश्य को देखकर फिर चौंक गए। एक और भीमकाय सांड अटेंशन की मुद्रा में खड़ा हमें देखकर मुस्कुरा रहा था और लगातार दुम हिला रहा था। हमें लगा जम्मू के सारे सांड क्रांतिकारी हो गए हैं और खुराफात पर उतर आए हैं। कहीं डी.आई.जी. ट्रैफिक ने अपना चार्ज इन बकरियों और सांडों को तो नहीं दे दिया, जो हमें और हमारी इकलौती गाड़ी की धज्जियां उड़ाकर कहेंगे—हिज्बुल मुजाहिद्दीन या जे.के.एफ. इसकी जिम्मेवारी लेता है।

खैर, प्रभु अनुकंपा से हम उस दिन इतने बीभत्स कांड से बच निकले क्योंकि आस-पास चलते-फिरते वाहनों में बजते बेढंगे संगीत की लय पर वह थिरकता हुआ कूल्हे मटकाता न जाने कहां गायब हो गया। लेकिन अगले दिन अखबार की सुर्खियों में खबर पढ़कर हम हक्के-बक्के रह गए—बिल्लू सांड से पीछा करवाती एक मृत्युचालक फरार ! बेचारे सांड का कहीं पता नहीं चल सका। ढूंढ़नेवाले को पचास हज़ार रुपये का इनाम यानी पुलिसवालों ने कोई कमी नहीं छोड़ी उसको खोजने में और बाद में यह खबर अखबार में छपवा दी। क्यों न छपवाएं, 90 प्रतिशत काम पुलिसवालों का सांडों ने ही संभाला हुआ है।

धन्य हैं वे सांड, घोड़े, बकरियां, जो अपनी अंतरात्मा की आवाज़ को तो अनसुना नहीं करते और उन्हें लोरियां दे-देकर नहीं सुलाते। आज इस रोंगटे खड़े कर देने वाले कांड को पूरा एक महीना हो गया है। अखबार की सुर्खियों में आज खबर पढ़कर एक बार फिर हमारे रोंगटे

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खड़े हो गए। लिखा था—ट्रैफिक संचालन में माहिर एक सशक्त और सक्रिय सांड आज हम से अलविदा कह गया। उसकी अंतिम क्रिया में भाग लेने हेतु पुरानी मंडी के चौराहे पर एकत्रित हों। पूरा एक घंटा हमने भी उस जनप्रिय सांड़ के साथ गुजारा था चाहे तल्ख़ अंदाज में ही सही। और जाने किस विवशता से प्रेरित हो हम उसकी आत्मा की शांति के लिए मन-ही-मन दुआ कर रहे थे।

उस दिन हम बिल्लू सांड के पिछले कुछ वर्ष के हसीन और दुस्साहसपूर्ण कारनामों और हथकंडों से प्रेरित हो रहे थे कि अचानक आंख लग गई। क्या देखते हैं कि बिल्लू सांड की याद में एक बहुत बड़ा मकबरा पुरानी मंडी में बनाया गया है और मरणोपरांत बिल्लू जी को अर्जुन अवार्ड से सम्मानित किया जा रहा है। उनकी हसीन फोटो पर ढेर सारी मालाएं हैं। हम भारतवासियों को अवार्ड का ख़याल तो आता है पर तब जब बंदा कब्र में विश्राम करता है। खट-खट-खट ! अजी, सो रहे हैं ! ज़रा उठिए, आपका अवार्ड तो पीछे ही छूट गया। या फिर तब जब यमदूत उन्हें बांहों के घेरे में कैद किए हुए ऊपर उड़ रहा होता है तो पीछे से अवार्ड देने वाला भागता हुआ आता है—अजी सुनिए, आपका अवार्ड पीछे छूट गया। जरा सलेक्शन में देरी हो गई जैसे कोई मां स्कूल भागते हुए बच्चे से कहती है—रुको, तुम्हारा टिफिन पीछे छूट गया। आज उठने में थोड़ी देर हो गई और सचमुच हमें भी उठने में देर हो गई। जब हमारी नींद खुली तो दस बज रहे थे। युगों-युगों अमर रहें हमारे बिल्लू जी, उनके जैसे कई महानुभाव अवतरित होते रहें इस धरा पर, बिगड़े हुए भारतवासियों को राह दिखलाने के लिए। राह यानी सड़कों की सही राह जिन पर चलकर हम अकसर हो जाते हैं गुमराह।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

9 बेचैनी मरने के बाद की

मौत तो है इक लफ्ज़ बेमानी, जिसको भी मारा जिंदगी ने मारा—आप कहेंगे कि एकाएक हमें क्या हो गया, दार्शनिकता दिखाने पर उतारू हो गए। यकीन मानिए, यह पंक्तियां आज हमारी आत्मा से स्वतः ही फूट रही हैं। क्योंकि आज हमने मर्सिडीज़ गाड़ी से झांकते हुए एक कुत्ते को गरीब, बेसहारा, भिखमंगे आदमी के कटोरे में चवन्नी डालते हुए देखा, उसकी आंखों में हिकारत और नफरत के भाव भी देखे, बिलकुल वैसे भाव जैसे आज से कई वर्ष पहले कुत्तों को दुरदुराते, लात मारते वक्त आदमी की आंखों में हुआ करते थे। परिणामस्वरूप कुत्तों की नस्ल मिमियाती-गिगियाती थी, कूं-कूं की आवाज करते भाग खड़ी होती थी, मगर अजीबोगरीब बात यह थी कि वह आदमी बिलकुल इसके विपरीत कुत्तों के पूर्वजों को और उसकी आनेवाली नस्लों को दुआओं के फूलों से नहलाता, धन्यवादी नज़रों से देखता चल दिया, वह कुत्तों से भी ज्यादा शालीन हो गया। बकौल फैज़ आप जरूर कहते होंगे—अपनी हिम्मत है कि फिर भी जिए जाते हैं। अजी, आप इसे जीना कहते हैं, यह तो हमारी मौत है, जो हर लम्हे के बाद होती है। पर हमारी भी ज़िंदादिली देखिए कि फिर से जी उठते हैं। जैसे संसार का छोटा जीव हाइड्रा और ओबीलिया अपने अंग कट जाने के बाद नये अंग उपजा लेता है, हम भी अपनी गर्दन और नाक कट जाने के बाद बड़ी फुर्ती से नई गर्दन और नाक

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपजा लेते हैं।

मौत के द्वारा हलाल होने का सिलसिला तब तक चलता रहता है जब तक हम संसार से स्थायी तौर पर छुट्टी नहीं ले लेते। यह तो थी ऐसी मौत जो किश्तों में होती है। इसके अलावा मौत के आने के तीन रास्ते और भी हैं—एक डॉक्टर के हाथों, दूसरी यमदूतों के हाथों और तीसरी भगवान के हाथों।

एक सज्जन किसी नामी डॉक्टर से इलाज करवा रहे थे। जब वह बिलकुल स्वस्थ हो गए तो डॉक्टर ने उनके समक्ष बिल पेश किया, इसके पहले कि वह जेब में हाथ डालते, उनकी कुर्सी पर बैठे-बैठे ही मृत्यु हो गई। डॉक्टरी जांच से साबित हुआ कि वह कोई गहरा आघात लगने से मरे थे।

एक और सज्जन थे जिन्हें भ्रम रहता था कि वह किडनी की बीमारी से ग्रस्त हैं। डॉक्टरों ने उनका पूरा चेकअप किया और उनकी भावनाओं को ठेस न पहुंचाने की गर्ज से उन्हें आपरेशन थियेटर ले जाकर उनकी हृष्ट-पुष्ट किडनी निकाल ली और किडनी से मुखातिब होकर कहा कि अरी किडनी, तू ठीक-ठाक काम कर रही है, तब भी इस इंसान ने तेरी कद्र नहीं जानी। चल, तेरा तबादला किसी और प्राणी में कर देते हैं, जहाँ तेरी कद्र हो सके। किडनी निकालने के बाद वह सज्जन एकदम स्वस्थ हो गए तो डॉक्टर मालामाल। खैर, इन जनाब का किडनी निकालने के बाद वह स्थान खाली ही रहा पर अकसर देखा गया है कि खाली किए गए स्थान खाली नहीं रहते। अकसर वहां तौलिए, रूई या कैंचियां रख दी जाती हैं। जैसे पड़ोसी के घर से आए हुए मिठाईवाले बर्तन को खाली नहीं जाने दिया जाता, उसमें शगुन के तौर पर कुछ-न-कुछ रख कर भेजा जाता है, अतः डॉक्टर साहब भी अकसर इस शगुन को निभाने में कोई गलती नहीं करते। मरीज़ का कोई-न-कोई अंदरूनी अंग निकाल कर कुछ-न-कुछ भर दिया जाता है; चाहे बेचारे मरीज को दोबारा उसी डॉक्टर के पास आना पड़े और कहना पड़े, "डॉक्टर साहब, मैं आपके एहसानों के भारी बोझ से दबा जा रहा हूं। मेरा पेट दोबारा काट लीजिए (दोनों तरह से) और अपना ज़रूरी सामान वापस ले लीजिए।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मरीज़ों की दर्दभरी दास्तान सुनाते-सुनाते हमें एक और आंख के मरीज़ की दास्तान याद हो आयी है। हुआ यूं कि जब उस मरीज़ को आपरेशन टेबल पर लिटाया गया तो डॉक्टर की नज़र उसकी आंख के इर्द-गिर्द खिंचे हुए काले दायरे पर पड़ी। डॉक्टर साहब ने मरीज़ से पूछा, 'यह क्या निशान बनाए हैं तुमने आंख के इर्द-गिर्द ?' मरीज तपाक से बोला, 'डॉक्टर साहब, इन काले निशानों से आपका भविष्य भी सुरक्षित रहेगा और मेरा भी।' डॉक्टर साहब की उत्सुकता और भी बढ़ गई। पूछा, 'वह कैसे ?' मरीज़ बोला, 'एक तो यह कि आप भूलेंगे नहीं कि कौन-सी आंख का आपरेशन करना है, और दूसरी बात यह कि यह रेखा लक्ष्मण रेखा की तरह है, जो आपको याद दिलाती रहेगी कि आपकी कैंची को इस रेखा को लांघकर दूसरी आंख की ओर अग्रसर नहीं होना है।' ऐसी विचित्र घटनाओं की बात जब चल ही पड़ी है, तो हमें एक और विचित्र घटना की याद ताजा हो आयी है। हुआ यूं कि हमारी एक प्रिय सखी मेटरनिटी वार्ड में एडमिट थी। डॉक्टर साहब का चेकअप के लिए प्रवेश हुआ। उन्होंने मरीज का ब्लड प्रेसर वगैरह चेक किया। जब वह जाने लगे तो हमारी सखी ने डॉक्टर साहब को पुकारा, 'डॉक्टर साहब, चेकअप तो करते जाइए मरीज का।' डॉक्टर साहब बोले, 'कर तो लिया है मैंने चेकअप।' मेरी सखी बोली, 'डॉक्टर साहब, जिसका चेकअप आपने किया है वह मरीज नहीं, मेरी सास है। मरीज तो मैं हूं जिसका आपरेशन आपने कल ही किया है।' डॉक्टर साहब शर्मिंदा होकर भाग खड़े हुए। यह तो थी डॉक्टरों के द्वारा गिफ्ट में दी गई मौत की बातें। अब आइए, यमदूतों द्वारा हुई गलती से दी गई मौत का मुलाहिज़ा करते हैं।

बात यूं हुई कि हमारी परदादी साहिबा को जब अपनी उम्र का शतक बनाने में पूरे दो साल बचे थे तो उन्होंने महाप्रयाण ले लिया, उन्हें बड़े सम्मान के साथ विदा किया गया।

यमपुरी पहुंचने पर उन्होंने ज्वाइनिंग रिपोर्ट यमराज के सामने प्रस्तुत की, पर उन्होंने उसे लेने से यह कहते हुए इनकार कर दिया कि सिर्फ पंद्रह मिनट पूर्व दो प्रत्याशियों ने वित्तमंत्री की सिफारिश पर यहां ज्वाइन किया है, अतः उन्हें वापस धरा पर लौटना पड़ेगा।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हमारी पूजनीय परदादी की आंखों में क्षणभर को अंधेरा छा गया और उनकी आंखों में वह चित्र घूम गया कि कैसे उनकी अंतिम सांस आने तक उनकी तीनों बहुओं ने उनके सारे गहने लूट-पाट लिये थे। अब तक तो उनकी सारी पूंजी लुट चुकी होगी। यह ख़याल आते ही उन्होंने यमराज के चरण पकड़ लिये और कहा कि चाहे मुझे नरक के थर्ड ग्रेड कमरे में ही रखिए, पर मुझ यहीं रहने दीजिए। मैं वापस किसी भी हालत में धरा पर नहीं लौटूंगी। अगर मुझे पहले से यह पता होता तो मैं घर के प्राणियों से परमानेंट लीव की जगह टेम्परेरी लीव लेकर आती और कहती कि यूं ही हवा-पानी बदलने के लिए ऊपर जा रही हूं। खासा टी.ए., डी.ए. बनाकर पुनः लौटूंगी। मेरा इंतजार करना।

दूसरी घटना की भी याद आने लगी है जो एक अखबार में छपी थी। शीर्षक था 'यमदूतों की गलती'। उस खबर का ब्यौरा इस प्रकार था कि कैसे अनजाने में यमदूत लालू धोबी की जगह कालू मास्टर की आत्मा को लिवा ले गए। जब आत्मा को यमराज के सामने पेश किया गया तो यमराज अपने दूतों पर बरसा, 'बेवकूफ कहीं के ! मैंने तुम्हें लालू धोबी को लाने को कहा था, न कि कालू मास्टर को लाने के लिए। जाओ, इसे वापस छोड़ आओ।' मास्टर जी पुनः विद्यार्थियों को गुमराह करने के लिए अपने शरीर में प्रवेश कर गए।

इन उपर्युक्त घटनाओं से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि गलती हर किसी से होती है, चाहे वह आम इंसान हो, डॉक्टर हो या फिर यमराज ही हो।

पर आज हम बहुत डरे हुए हैं कि यमदूत न करे कि ऐसी गलती उन्हें हमारे नाम के लिए हो जाए। लेना सुनील या अनिल को हो और ले जाएं हमें उठाकर। आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि हम पर क्या बीतेगी जब यमराज जी कहेंगे—जाओ, अनिला की आत्मा को पुनः उसके शरीर में छोड़ आओ, पर उनका क्या होगा जो हमारे परलोक सिधारने पर जश्न मना रहे होंगे। कहीं वे लोग भी हमारे पुनः वापस आने पर गहरा धक्का लगने से परलोक न सिधार जाएं और यमदूतों का काम दुगुना-चौगुना बढ़ जाए, उन्हें चार-पांच हजार आत्माओं का बोझा पृथ्वी-लोक से यमपुरी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तक ढोना पड़े।

खैर, हमने भी ठान ली है जब हमारा अंत आएगा तो हम धरावासियों से कह देंगे कि हम लीव-ट्रैवलिंग अलाउंस लेकर घूमने जा रहे हैं, पुनः लौटकर आएंगे, हमारा इंतज़ार करना। फिर आएं-न आएं, अपनी बला से।

लेकिन फिलहाल तो हम इसी घर में हैं और हमेशा डरते रहते हैं कि क्या पता कोई भुलक्कड़ एबसेंट माइंडेड यमदूत हम पर मेहरबान हो जाए और हमारी आत्मा को हम से जुदा कर दे। इसीलिए हम यह शेर गुनगुना रहे हैं कि अब तो घबरा के यह कहते हैं कि मर जाएंगे, अगर मर के भी चैन न आया तो किधर जाएंगे।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

10 यात्रा में घर

कितनी खुशनसीब थी मुमताज कि उसने एक आलीशान मकबरे की तमन्ना ज़ाहिर की और उसे नसीब हुआ चाहे उसके मरने के बाद ही और एक हम हैं बेचारे–ऐसी कई तमन्नाओं को सीने में दबाए ही मर जाएंगे।

ऐसी तमन्नाओं का बोझ उठाने में असमर्थ, एक दिन हम अपने पति से कह ही बैठे–"हमसे अच्छी तो मुमताज थी जिसके मरने पर ताज तो बना। एक हम हैं बेचारे, ताज की उम्मीद तो क्या, एक अदद मकान की उम्मीद भी नहीं कर सकते।"

वे बोले, "ताज तो मैं फौरन बनवा दूं, पहले मरकर दिखाओ।" अव्वल तो हम उनके झूठे प्रलोभन से मरनेवाले नहीं हैं, अगर मर भी गए तो कौन-सा हम दूसरे लोक से इस लोक में आकर देखनेवाले हैं कि मकबरा बना है या नहीं।

जाने क्यों हमारी आत्मा अतीत के खंडहरों में मंडराने के लिए बेचैन रहती है। खंडहरों से हमारी मुराद अतीत के उन गुज़रे सालों के मकानों से है जो साल-दर-साल हमें उनके बारे में बयान करने के लिए प्रेरित करती रही है। जैसे पुरानी ऐतिहासिक इमारतें इंतजार में रहती हैं आर्केलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया में कार्यरत अफसरों के कि कब कोई भूले से आए और उन्हें संवारे, उसी प्रकार हमारे पुराने आवास-स्थल

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इंतजार में हैं कि हम उन पर टीका-टिप्पणी करें।

खैर, हमारी स्मरणशक्ति तीव्र से तीव्रतर होती जा रही है और हमें उसने शहर के इस चौराहे पर लाकर खड़ा कर दिया है जहां से हमने भी आवास-खोजी अभियान शुरू कर दिया।

हुआ यूं कि हमारी इकलौती सास—इकलौती सास पर हम इसलिए ज़ोर दे रहे हैं कि हमारी एक सहेली की तीन-तीन सासें हैं चाहे वे अपनी बहू से मिल-जुलकर नहीं रहें, आपस में बड़े प्रेम-भाव के साथ रहती हैं। आपसी मेल-जोल के पीछे एक गूढ़ रहस्य है कि वे अपने इकलौते पति के खिलाफ नित नये षड्यंत्र करती रहती हैं और उनसे निपटने के नये-नये तरीके खोजती हैं। हां तो बात हमारी इकलौती सास से होकर यहां तक घुमाव ले गई पर उस दिन जब हमारी निजी इकलौती सास के पति का स्थानांतरण किसी दूसरे शहर में हो गया तो हमें भी सड़कों के चौराहे से शुरू होकर ऐसा घुमा दिया कि दिन में तारे नज़र आने लगे। घूमते-घूमते हम अपने भावी आवास के दरवाज़े पर पहुंचे ही थे कि मोहल्ले के कुत्तों ने हाय-हाय और हैलो की आवाज़ों से हमारा स्वागत किया और रास्ता रोककर सावधान मुद्रा में दुम को बिलकुल सीधा खड़ा करके ऐसे खड़े हो गए जैसे कोई यूनियन का लीडर झंडा खड़ा करके शहर बंद का आह्वान कर रहा होता है। उनको मारने की कोशिश में जब हमने उन्हें पीछे धकेला तो गुर्राते हुए वे 'वी विल सी यू' के अंदाज में धमकी देते हुए भाग खड़े हुए।

जैसे ही हमने घर के आंगन में प्रवेश किया तो एक हृष्ट-पुष्ट नारी सासमयी मुद्रा में हाथ में झाड़ू लिये हमारा स्वागत कर रही थी। हम एक बार फिर सासमयी वातावरण में सांसों का आरोह-अवरोह महसूस कर रहे थे और करुण दृष्टि उन पर डाल रहे थे। हमारी इस मुद्रा को देखकर शायद उन्हें तरस आ गया और झाड़ू समेत उन्होंने हमें गले से लगा लिया और झाड़ू को ही पोइंटर की तरह उपयोग करते हुए उन्होंने मकान के हर हिस्से से हमें अवगत करवा दिया। एक कमरा था जहां की दीवार हिलती थी जिसको हर बार बनाने की नाकाम कोशिश में एक अदद मजदूर को उसके साथ शहीद होना पड़ा पर हिम्मत न हारने वाले

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ठेकेदार 'ट्राई-ट्राई अगेन' वाली थ्योरी अपनाते रहे और मजदूरों को शहीद करवाते रहे।

और हम डर के मारे अपने लाइफ इंश्योरेंस के काग़ज़ संभालते हुए वहां से अगले कमरे की ओर अग्रसर हुए तो एकाएक पिछवाड़े की दीवार पर हमारी नज़र गई। पाया कि दीवार में अनेकानेक छेद थे जैसे जलियांवाला बाग की दीवारों में हैं। हमें उस दीवार की तरफ अति भयभीत मुद्रा में ताकते हुए देख वह ताड़ गई और बोली, "गुड्डू के पापा शुरू से ही पुलिस में थे। जब वह उग्रवादियों को मारने में असमर्थ होते थे तो अपना निशाना इन दीवारों को बनाते थे।" "लेकिन अब वह क्या करते हैं ?" हमने डरते-डरते पूछा। वह तपाक से बोली, "ठेकेदारी। किन्हीं अज्ञात कारणवश उन्हें नौकरी से निष्कापित कर दिया गया था। ख़ैर, इन छिद्रों से आप रोशनदानों का काम ले सकती हैं।" "और यह जो खरगोश आपने पाले हैं ?" हमने प्रश्नमयी मुद्रा में पूछा, "हां, ये मासूम जानवर बस एक कोने में पड़े रहेंगे, आपका कुछ नहीं बिगाड़ेंगे।" हमारे मन में आया कहीं हमारा यहां बसना भी इनके शौक का हिस्सा तो नहीं है। हम निहाल हो गए उनके शौक पर। पर मरता क्या न करता, गुमराह तो हम हो ही गए थे, अगला मकान तलाशने की कोशिश में कहीं संसार से ही न गुम हो जाएं इसलिए जीवन की बची-कुची सांसें लेने को हमें वहां रहना पड़ेगा।

पर 'जाको राखे साइयां मार सके न कोय'—वहां हमें जिंदगी की आखिरी सांस नहीं आयी और दुर्घटनाओं की चरम सीमा पर पहुंचने से पहले ही हमारा तबादला हो गया।

आवास की समस्या फिर मुंह बाए खड़ी थी। हमारे सामने अतीत के खड़खड़ाते खंडहर थे और आगे ठाठें मारता जिंदगी का खिलखिलाता हसीन समंदर जिसमें हम ऐरे-गैरे मकान में रहकर डूबना नहीं चाहते थे बल्कि उसका आनंद लेना चाहते थे।

पर होनी को कुछ और ही मंजूर था। उड़ती-उड़ती खबर हमारी ननद की सास को, जो कि उम्र की शताब्दी पार करने ही वाली थी, पहुंच गई कि हम मकान की तलाश में हैं। रिश्तों की नज़ाकत देखते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हुए हमने उस आधी शताब्दी से खाली पड़े मकान में रहने की मंजूरी दे दी ताकि उनकी उम्र के अंतिम पड़ाव में एक अदद किराएदार रखने की तमन्ना पूरी हो सके पर आश्चर्य की बात थी कि इस मकान के नैन-नक्श भी पहले मकान से बहुत मिलते थे, फर्क इतना था कि पहले वाले मकान की अनगिनत आंखें यानी रोशनदान दीवारों में थे और इस मकान की छत में जो चिमनी का काम तो देते ही, बरसात में शॉवर का काम भी दे जाते थे। फिर सोने पर सुहागा यह कि मालकिन की गर्दन लगातार पेंडुलम-सी हिलती थी और उनकी गर्दन हिलने की अदृश्य शक्ति से अभिभूत हुए हम उनका हर हुक्म मानने के लिए तैयार होते, जो सुई में धागा डालने से लेकर उनके चूल्हे में आग झोंकने तक जारी रहता जिससे हमारी सांसों में अवरोध पैदा होता रहा और हमारे सारे अरमान चूल्हे की आग में स्वाहा होते रहे। हम उनके दामाद और बेटी की एकमात्र सुंदर जोड़ी की सुखमय गृहस्थी के लिए कूकर से लेकर पंखे तक सारे साधन जुटाते रहे और अपनी चहुंमुखी भूमिका निभाते रहे।

पर रोंगटे खड़े कर देने वाले नियति के इस क्रूर मजाक में भी हम अरमानों के हिंडोले में झूल-झूलकर ताजमहल बनवाने की बात अपने मन-मस्तिष्क से नहीं निकाल पाए हैं। जब भी इसका ज़िक्र पतिदेव से करते हैं तो वह कहते हैं–''ठहरो, पहले स्विस बैंक के एकाउंट से पैसा तो निकलवाने दो।'' खुदा करे उनका यह काल्पनिक एकाउंट स्विस बैंक में बरकरार रहे और हमारे ख्वाबों के ताजमहल हमारे सरकारी क्वार्टर की ईंट-दर-ईंट टूटती और साथ-साथ अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति से जीती दीवारों में सलामत रहे। वैसे सपने पालना कोई बुरी बात नहीं है। लोग मुर्गी पालते हैं, बकरी पालते हैं, गाय पालते हैं; हमने सपने पाले तो कौन-सा जुर्म किया ! और अंत में हम अपने ताजमहल के ख्वाबों की ताबीर के लिए किसी शायर का एक शेर कहने से बाज़ नहीं आएंगे; जिसे हम अपने शब्दों में ढालते हुए कुछ इस प्रकार कहेंगे :

आधी से ज्यादा शबे-गम काट चुके हैं
अब भी अगर बन जाओ तो वक्त बहुत है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

11 बात एक सपने की

कल रात हमने बड़ा ही चौंकाऊ सपना देखा। आप सोच रहे होंगे कि ऐसा क्या देख लिया हमने जो भारतवर्ष में विचरते हुए खुली आंख से नहीं देखा। वैसे जनाब, हम तो यही कहेंगे कि हमारी इन निरीह, बेबस खुली आंखों ने इस छोटी-सी उम्र में क्या कुछ नहीं देखा, वह सब कुछ देखा जिन्हें देखने के लिए इनकी उम्र अभी कच्ची है।

खैर, आप सोच रहे होंगे कि यह क्या सुबह-सवेरे हम आंख और कान का रोना ले बैठे। सुनाना है तो अपना चौंकाऊ सपना सुनाओ।

तो जनाब, हमने देखा कि पंद्रह अगस्त का गौरवमयी दिन है, तिहाड़ जेल के आसपास सारी जनता इकट्ठी हो रही है क्योंकि हमारे पूर्व प्रधानमंत्री श्री नरसिंहा राव तिहाड़ जेल की छत पर चढ़कर भारत का झंडा फहराने वाले हैं और वहीं से वह भारत की जनता को अपना सुनहरी संदेश देना चाहेंगे। देखते ही देखते कुछ मिनटों के बाद प्रधानमंत्री जी तशरीफ लाए हैं। उनका साथ दे रहे हैं श्री सुखराम, श्री लक्खूभाई पाठक, श्री चंद्रास्वामी और श्रीमती शीला कौल। वैसे और भी गणमान्य लोगों के आने की आशंका बनी हुई है।

इन सबकी मौजूदगी से तिहाड़ जेल का मान दुगुना-चौगुना बढ़ गया है जिससे वहाँ की दीवारों की हर ईंट इठलाती और इतराती फिर रही है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभी-अभी प्रधानमंत्री श्री नरसिंहा राव ने अपने पवित्र कर-कमलों से पवित्र झंडे की डोरी को पकड़ने के लिए अपना कदम बढ़ाया है। अरे, यह क्या—देखते-देखते झंडा फहराने लगा और उससे गिरते अनगिनत पुष्प अचानक करारें नोटों में बदल गए। हमें आशा थी कि अंत में झंडे से यूरिया, आलू यंत्र और गन्ने भी गिरेंगे पर हमारी आशा पर ढेर सारा बाढ़ का पानी फिर गया। खैर, उन नोटों को इकट्ठा करने के लिए सुखराम और उनके प्रिय साथी-साथिनें अपनी-अपनी टोपियां-झोलियां फैलाकर आगे की ओर लपके हैं। इसका फैसला बाद में होगा कि किसने कितना बटोर लिया, वैसे अगर उनके बीच कोई पंगा हुआ तो हम यही कहेंगे, "जिसकी जितनी झोली थी उतनी ही सौगात मिली," या फिर कहेंगे, "किसको क्या मिला यह मुकद्दर की बात है।"

अब हमारे प्रधानमंत्री जी राष्ट्र के नाम संदेश प्रसारित करने के लिए माइक के सामने प्रस्तुत हो गए हैं। संदेश कुछ इस प्रकार है, "भाइयो और बहनो, आज मुझे इस बात की हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि हम अपना पचासवां स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं। हमें स्वतंत्र हुए पूरे पचास साल हो गए और हर गुज़रते साल में हम नैतिक मूल्यों की गुलामी को लात मारने में अधिक-से-अधिक फोर्स लगा रहे हैं और नतीजतन अधिक-से-अधिक स्वतंत्र होते जा रहे हैं। स्वतंत्रता तो स्वतंत्रता है चाहे वह हवाला कांड करने की हो, घोटाला कांड करने की हो या फिर गड़बड़-झाला कांड करने की।

आपको यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि हमने तिहाड़ में निन्यानबे प्रतिशत कमरे उन नागरिकों के लिए आरक्षित कर दिए हैं जिन्होंने हवाला, घोटाला या गड़बड़झाला कांड में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है क्योंकि जो व्यक्ति यह सब कांड कर सकता है, वह दुनिया के अनेकानेक कांडों का निर्भय होकर सामना कर सकता है और भारत को भी ऐसे वीर सपूतों की तलाश है। आपको यह जानकर भी खुशी होगी कि हमने आज से तिहाड़ जेल का नाम बदलकर तिहाड़-भवन या तिहाड़ किला रखने की ठान ली है ताकि आप जैसे वीर और सत्यवादी प्रार्थियों को यहां आने में कोई शर्म न महसूस हो। अगर आप तिहाड़ी

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'उच्च' पुरुषों से संपर्क स्थापित करना चाहते हैं तो कोई-न-कोई हवाला कांड करें, यहां की शुद्ध हवा खाने के लिए हमारे सुखराम जी और उनके अनेकानेक प्रिय साथियों-साथिनों के 'तिहाड़ फैलो' बन जाइए। हम सब एकजुट होकर देश की अनेक समस्याओं के बारे में विचार-विमर्श करेंगे और देश को तरक्की की ओर ले जाएंगे ताकि भारत-माता की गर्दन शुतुरमुर्ग की तरह इतनी ऊंची हो जाए कि वह देख भी न पाए कि गर्दन के नीचे कौन-सा कांड हो रहा है।

मैं आपको अति प्रफुल्लित करने के लिए यह कहना चाहूंगा कि देश में जो वीर पुरुष सबसे ज्यादा घोटाले या हवाले करेगा, उसे घोटाला या हवाला अवार्ड से सम्मानित किया जाएगा। अवार्ड पाने के लिए तिहाड़ जेल के कमरे में रहने का पूरे दस वर्ष का अनुभव होना चाहिए।

अंत में मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप सब भारत माता की जय बोलकर जोर से तीन बार नारे लगाएं, और हमारे राव जी कानफोड़ू तरीके से इतनी जोर से 'भारत माता की जय' बोले कि हमें भी अपना सुर ऊँचा करना पड़ा।

तभी हमारे पतिदेव ने हमें झकझोरकर जगाया कि यह क्या सुबह-सवेरे भारत माता की जय-जयकार कर रही हो, उठो और रसोई में जाकर देखो कि भूखे बच्चे कैसे खाली बर्तन बजाते हुए तुम्हारी ही जय-जयकार कर रहे हैं। हमें लगा घर में भी घोटाला या हवाला चल रहा है, रसोई में बर्तन बजाने के लिए शायद पतिदेव ने ही बच्चों को उकसाया किया होगा।

खैर, हम उठकर बैठ गए हैं, घड़ी में आठ बजे रहे हैं।

चूंकि हम अध्यापक हैं और आज विद्यार्थियों को नया पाठ पढ़ाना चाहते हैं, इसलिए झटपट हमने किताब के पन्ने पलटने शुरू कर दिए हैं। पाठ पर नज़र डालने के बाद हमें लगा है कि उस पाठ में भी घोटाला है यानी जो उस पाठ में लिखा है वह नहीं है और जो नहीं लिखा वही सब कुछ चल रहा है। लिहाज़ा एक विचार ने यकायक हमारे ज़ेहन में अंगड़ाई ली है कि क्यों न आज विद्यार्थियों को घोटाला या हवाला कांड के बारे में विस्तृत जानकारी दी जाए और अंत में उनकी इंटेलिजेंस को

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परखने के लिए होमवर्क में कुछ प्रश्नों के उत्तर देने को कहा जाए जैसे डिफाइन घोटाला एंड हवाला। ह्वाट आर देयर डिफरेंट टाइप्स ? कैन यू नेम दोज ग्रेट पर्सन्स ऑफ इंडिया हू हैव इन दीज ग्रेट डीड्स ? गिव एक्जाम्पल्स। यह सोचने के बाद हमें लग रहा है कि क्या ही अच्छा होता कि टीचिंग एड्स में हमें गणमान्य लोगों की घोटाला या हवाला अवार्ड लेती हुई तस्वीर मिल जाती जिससे हमारा पाठ अधिक दिलचस्प हो जाता। फिलहाल हम यह सब नहीं कर सकते पर हम आशा जरूर करते हैं कि निकट भविष्य में हम ऐसे चित्र विद्यार्थियों को दिखलाकर पाठ को और भी दिलचस्प बनाने में सक्षम होंगे—यही सोचते हुए हम चाक पकड़े हुए क्लास-रूम में प्रवेश कर गए हैं।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

12 पर्दे की आड़

पर्दे का आविष्कार किन-किन विपरीत परिस्थितियों में हुआ यह तो ठीक से नहीं कहा जा सकता पर इसका आविष्कारक दुनिया का सबसे समझदार इंसान होगा। आज से हज़ारों साल पूर्व जब आदिमानव इस धरा पर विचरते थे, तब शायद उन्हें लोक-लाज की इतनी चिंता नहीं थी और न ही इतना विस्तृत लोक यानी समाज था कि उन्हें अपमान और अपवाद का भय होता। समय की गति निरंतर जारी रही। उनकी चेतना स्वस्थ हुई और उनकी आंखों में लाज के पर्दे पड़ने और उघड़ने लगे।

उन्होंने स्वयं को या यूं कहिए दूसरों को भ्रमित करने हेतु बाहरी आवरणों का निर्माण किया यानी पर्दे की आड़ में कुकर्म किए जाओ और जाहिर भी न हो। जैसे-जैसे कूटनीतियां, मक्कारियां अपने चरम बिंदुओं पर पहुंचने के लिए लालायित रहीं, उसी रफ़्तार से पर्दे की आकृति अधिक से अधिकतर विकृत होती गई। पर्दे से हमें अपने विद्यार्थी जीवन की एक घटना याद हो आयी। बचपन से हमें नाटकों में भाग लेने का बहुत शौक था और उनमें हम अपनी कला को प्रदर्शित करने हेतु एड़ी-चोटी का जोर लगाने से कभी न चूकते थे। अपने रोल को याद करते वक्त हमें यह भी नहीं याद रहता था कि हम कौन-सी जगह पर विचर रहे हैं यानी डाइनिंग टेबिल पर खाना खा रहे हैं या नहा रहे हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपनी कलाबाजियों का एक ऐसा उद्दंड रूप हमारे सामने आया कि आज भी उस विवरण को याद करके हमारे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। हुआ यूं कि नाटक के अपने डायलाग्स से सिर से पैर तक ओत-प्रोत हमने स्नानगृह में प्रवेश किया और उसे डॉयलाग्स का घोटा लगाने हेतु दिव्यस्थान समझा, इस बात से अनभिज्ञ कि हमारी एक अदद प्रिय दादी हमारे घर पधारी हुई है। हम अपनी पूरी गतिशीलता के साथ जोर-जोर से डॉयलाग्स याद और एक्टिंग करते रहे पर पता नहीं उस दिन हमारी प्रिय दादी जी के कानों में हमारी मधुर आवाज कैसे पहुंच गई। कुछ पलों तक तो उन्होंने दरवाजे के साथ कान लगा हमारे कंठ से निकलती मधुर ध्वनियों को रोते, कराहते, गिड़गिड़ाते–भिन्न-भिन्न तरीकों से तरंगित होते सुना और फिर ऐसी पलटीं कि सारे मुहल्ले के लोगों को स्थिति का जायज़ा लेने के लिए एक-एक करके निमंत्रण दे आयीं और बोलीं–"बिटिया को सन्निपात हो गया है। कोई डॉक्टर को बुलाओ।" हमने तुरंत नल बंद करके अपने अंदर के प्रबुद्ध नाटककार को पीछे धकेल कर अपना भी एक कान बाथरूम के दरवाजे पर रख दिया और पाया कि अनेकानेक ध्वनियां हमारी इस तथाकथित बीमारी को लेकर भिन्न-भिन्न तरह की अटकलें लगा रही हैं और कुछ ही मिनटों में दरवाज़ा खोल हम किसी मुजरिम की तरह नज़रें नीची करके बाहर निकल गए, पर उन दिनों हम अपने भीतर एक क्रांतिकारी का कैरेक्टर जीते हुए क्रांतिकारी हो गए थे जिसमें वह जलती हुई मशाल लिये हुए अपने सामने पड़ने वाले हर दुश्मन को धराशायी कर देती है, तभी तो हम अति-क्रांतिकारी बने हुए जलती हुई मोमबत्ती को अपने कर-कमलों में थामे अपनी दादी जी के पीछे भागे और वह रात शायद हमारे अंदर के उभरते हुए नाटककार की अंतिम रात थी। वह तो नौ दो ग्यारह हो चुका था और हमारा सामना हो रहा था अपनी प्रिय दादी से और लंबा-सा इंजेक्शन पकड़े हुए डॉक्टर साहब से। इस अनहोनी घटना के बाद हमारी प्रिय सखी ने यह सुनहरी मौका खोने में जरा-सी भी देर नहीं की और हमारा रोल उन्होंने हथिया लिया।

नाटक वाले दिन हम अपनी किस्मत को कोसते हॉल में अग्रिम

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
पंक्ति में बैठे बार-बार उस कु-घड़ी को कोस रहे थे जब हमने नाटक के डॉयलाग्स याद करने की ठानी थी। अभी हम खुद को कोस ही रहे थे कि नाटक प्रारंभ हुआ और हमारी उस मौकापरस्त सखी ने मशाल हाथ में पकड़े मंच पर प्रवेश किया। उसकी आंखों से शोले बरस रहे थे। वह निरंतर डॉयलाग्स को याद करने के प्रयास में सब कुछ भूलती जा रही थी। फिर उसने मंच से ही नाटकीय अंदाज में मदद के लिए हमें मंच के पर्दे के पीछे बुलवाया। हमने जैसे ही पर्दे के पीछे का निरीक्षण किया तो देखा कि दस-बारह प्रॉम्पटर्स हाथों में पन्ने थामे कतारबद्ध अधलेटे-से भूलनेवालों को डॉयलाग्स बता रहे थे पर हमारी सखी का प्रॉम्पटर पेज ही गँवा बैठा था और वह लगातार पर्दे को हिला-हिलाकर उसे बोलने के लिए इशारा कर रही थी। बेचारा प्रॉम्पटर अति दुखी होकर अपने सगे मामाजी को पुकारने लगा, "मामाजी, कहां हो तुम ? कहां हो ?" यह समझकर कि यह भी डॉयलाग्स है, अपनी सखी की भी मंच से आवाज गूंजी, "मामा जी, कहां हो...कहां हो तुम ?" फिर उनके नकली मामा जी को डॉयलाग बोलना था। उन्हें कुछ नहीं सूझा। वह बोले, "यहां हूं मैं, यहां हूं भाई।" और डॉयलाग्स में अप्रत्याशित रूप से परिवर्तन हो गया कि नाटक की थीम ही बदल गई और सारे प्रॉम्पटर्स बौखलाए-से मंच पर आ गए। ट्रेजेडी कॉमेडी में बदल गई और इस अति रहस्यमयी माहौल में पर्दा गिरने को बेताब था सो गिरा दिया गया। हां, यह तो रहा पर्दा गिरने का एक और अंदाज। दुनिया में भिन्न-भिन्न जगहों पर भिन्न-भिन्न तरह के पर्दे हैं जो गाहे-बगाहे गिरते हैं या गिरा दिए जाते हैं। नाटक की बात हमने यूं ही शुरू नहीं की थी, पार्लियामेंट में भी जहां किसी गंभीर मुद्दे पर बहस होती है तो सांसद हल निकाले बगैर ही अति नाटकीय अंदाज में बहस के करुण रस को वीर रस में परिवर्तित करते हुए पर्दा गिरा देते हैं। जनता के मसलों को तो हटाइए एक तरफ, उनके अपने मसले इतने गंभीर हैं कि उन्हें यदा-कदा वीर रस में डूब-उतराकर उन्हें प्रैक्टिकल का आकार देना पड़ता है और जनता बेचारी इस द्वंद्व से घबराकर अपने गम भूल जाती है।

पर्दा तब भी गिरता है जब कोई नेता किसी और का लिखा भाषण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस प्रकार पढ़ता है कि देश को हमें डूबकर बचाना है। हमें उन दरिंदों (असली शब्द कारिंदों) का उत्साह बढ़ाना है जो ज़्यादा से ज़्यादा अन्न उपजाकर जनता को खुश्क-हाल (असली शब्द खुशहाल) बनाए। शायद मंत्री जी अपना चश्मा घर भूल आए थे या चश्मे का नंबर बढ़ गया था देश की आबादी की तरह। भला हो राम जी का और मंत्री जी का कि 90 प्रतिशत जनता जो भाषण सुन रही थी, अनपढ़ थी और मेरा मन ही मन उनसे निवेदन था कि उन्हें ज्यादा शिक्षित न बनाए कि वह सब कुछ समझ सके, जान सके और उनके क्रिया-कलापों पर पर्दा गिर सके।

पर पर्दे तो पर्दे हैं—वे गिरने और उठने के लिए ही बने हैं। वे तब भी गिरेंगे जब किसी हत्याकांड की जांच करते-करते पुलिस ऑफिसर मुजरिमों की कर्तव्यनिष्ठा से प्रेरणा लेकर खुद ही गुनाह करने को अग्रसर हो जाएं और यह कहते हुए पाए जाएं कि देश तो अब डूब ही चुका है, फिर हमारे कुछ करने से वह बचेगा नहीं यानी अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। पर वे यह नहीं जानते कि ऐसे कितने ही अकेले चने देश का भविष्य फोड़ चुके हैं। एक शेर बरबस हमारे होंठों से फिसल जाता है—मैं अकेला चला था रास्ते में मगर काफिले बनते गए, कारवां चलता गया और ऐसे कई गुमराह काफिले दिन-प्रतिदिन अपने गुनाहों में दिन-दूनी रात-चौगुनी तरक्की कर रहे हैं चाहे वह मिलिटेंसी पर्दे में हो या लोगों को सुरक्षा देने के पर्दे में। पर्दे का काम है आड़ देना चाहे वह जिस भी फार्म या शेप में हो, तभी तो लोग गुनगुनाते हुए पाए जाते हैं—पर्दे में रहने दो, पर्दा न उठाओ। आज के पर्दे कबीर की झीनी चदरिया जैसे नहीं हैं कि आरपार दिख जाएं। इतने सख्त और मजबूत हैं कि आप आजीवन लगे रहें अपने पूरे दमखम से कोशिश में; यह उघड़ेंगे नहीं। इसमें दोष न तो पर्दों का है, न पर्दा गिरानेवालों का। दोष तो बेचारे मुंह पर अंगुली रख आंखों में आंसुओं के चंद कतरे छलकाते भारतवर्ष का है, जिसकी टेक्स्टाइल मिल्स ने इतनी तरक्की कर ली है कि हर इंसान की आंखों और कानों पर मोटे और मजबूत पर्दे पड़े हैं, तभी तो एक विराट फंक्शन में गुजरे वक्त के एक जाने-माने छंटे हुए नेता जी

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को हमने कुछ छंटे हुए लोगों को ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा का इनाम बांटते हुए पाया। उस दिन हमारी समझ को कुछ समझ आयी कि आपसी तालमेल से उन्होंने जिंदगी की तमाम खुशगवार दुर्घटनाओं और अति मोहक उद्दंडताओं को समेट लिया अवार्ड्स के अति शालीन पर्दे में यानी जहां पर्दे हर मर्ज़ की दवा हों, हमें डर काहे का।

पर पर्दे डालने-बनानेवाले एक जगह चूक गए। जहां भारतीय संस्कृति को मुंह में उंगली दबाए एक जगह ठिठकाकर धकेल दिया और पर्दा बदन ढकने के बजाए मात्र एक शो-पीस बनकर रह गया और मनोज कुमार के गीत होंठों से फिसलने लगे—थोड़े में गुजारा होता है या हम यह भी कह सकते हैं कि मनुष्य दुबारा आदिम-युग में लौट रहा है यानी दुनिया गोल है या हिस्ट्री रिपीट्स इटसेल्फ पर उस युग में जो कुछ घटता था या होता था सर्वविदित था और जो पर्दे हमेशा के लिए पड़ चुके और पड़ते रहेंगे उन पर्दों और पर्दानशीनों का क्या होगा, इसलिए हम यहां कहने से बाज नहीं आ रहे हैं—पर्दे जो उघड़ेंगे उन्हें गिराना यारो, पर्दानशीं की अस्मत को बचाना यारो !

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

13 बहुत पछताए बीमार बनकर

कहते हैं जब गीदड़ की मौत आती है तो वह शहर की तरफ भागता है। अब हम कहां भागे, आपको बताने जा रहे हैं। हमें बैठे-बिठाए न जाने क्या सूझी, हमने अपनी एक नज़र दस साल पुरानी सरकारी नौकरी पर दौड़ाई तो लगा हम ऐसे दलदल में हाथ-पैर मारते रहे हैं जिसमें से शायद हम निकल ही नहीं सकते।

सरकारी नौकरी की भी क्या बात है। कोई जरूरी काम हो तो नौकरी है भई नहीं आ सकते, किसी शादी में जाना हो तो नौकरी है, छुट्टी नहीं मिलेगी।

हम इन रटे-रटाए वाक्यों को आए दिन दोहराते, जूझते और क्लीन बोल्ड हो जाते। लगता जैसे हम अभिमन्यु हों जिसे चक्रव्यूह में जाने का रास्ता तो आता है पर बाहर निकलने का नहीं। खैर, वह बाद की बात है कि हम अभिमन्यु से भी दो कदम आगे निकल गए बाहर का रास्ता खोजने के लिए।

हमें आज भी याद है वह ऐतिहासिक दिन जब हम अपना नियुक्ति-पत्र अपने कर-कमलों में थामे बल्लियों उछल रहे थे। उस वक्त हमारा दिल तो मानो पसलियो का पिंजर तोड़कर खुद ही बाहर आकर खुशी में नाचने को तैयार था। तब बड़ी मुश्किल से हमने अपने दोनों हाथों को दिल पर रखकर उसे थाम लिया और गुनगुनाया था—ऐ दिल, जरा

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ठहर जा।

तब से आज का दिन है, एक ही धुरी के इर्द-गिर्द चक्कर लगा रहे हैं—कोल्हू के बैल की तरह। जैसे बैलों को पता नहीं होता कि वे किधर जा रहे हैं, हम भी पता लगाने में नाकामयाब रहे। घर से विद्यालय और विद्यालय से घर, मानो किसी गली-कूचे का रास्ता हमें याद ही न हो और सोने पर सुहागा यह कि हमारा घर विद्यालय से दस गज़ की दूरी पर है ताकि बाहर की हवा हमें छू भी न पाए।

पर उस दिन हम बहुत दुखी थे। गमगीन मुद्रा में सिर पीटते हुए हम न जाने कितनी बार अतीत के दर्दनाक पन्ने पलट चुके थे। बार-बार उस कुघड़ी को कोसते माथा ठनक रहे थे--आखिर कोई तो रास्ता होगा इस चक्रव्यूह से निकलने का। अचानक एक विचार हमारी नैतिक चेतना को पछाड़ता बिजली की तरह हमारे जेहन में कौंध गया—क्यों न जाली मेडिकल प्रमाण-पत्र बनवाकर एक महीने की छुट्टी ली जाए। हमारे शहर में ऐसे बहुत सारे डॉक्टर हैं जो इस तरह के प्रमाण-पत्र देने के लिए ही नियुक्त हुए हैं। हम बगावत पर उतर आए थे! फिर क्या था, विकट परिस्थितियों से जूझते हुए हमने वह गुप्त रास्ता खोज निकाला जहां इस तरह के प्रमाण-पत्र बनाने वाले डॉक्टरों की सेल लगी थी—हमारा मतलब है प्रमाणपत्रों की सेल लगी थी।

बस, आव देखा न ताव, खरीद लाए एक जाली प्रमाण-पत्र और आवेदन-पत्र के साथ जोड़कर एक महीने की छुट्टी भिजवा दी बड़े साहब को। बड़े साहब दांत पीसकर रह गए। शायद इन हथकंडों से वह रोज ही दो-चार होते रहते थे और इसका उन्हें गूढ़ अनुभव था कि अचानक हट्टे-कट्टे लोग बीमारी की गिरफ़्त में कैसे आ जाते हैं। पर वह दांत पीसने और पैर पटकने के सिवा और कर भी क्या सकते थे।

अब हम थे और थी हमारी तनहाई। अकसर ठीक साढ़े सात बजे वाले विद्यालय के वे भयावह दृश्य हमारी आंखों के सामने चलचित्र की तरह उभर आते, जब कड़कती सर्दी में सारे कार्यकर्ता एक ही मंजिल की ओर भागते नज़र आते। जल्दी में किसी का चश्मा बदल गया है, कोई अलग-अलग रंग की जुराब पहनकर आ गया है और कोई अपने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोट के बदले पतिदेव का ओवरकोट पहनकर आ गई है। कोई जल्दी में खाने के डिब्बे के बदले गुड़-चने का प्रसाद वाला लिफाफा उठा लायी है और कोई तो हद करके खाने के डिब्बे के बदले पतिदेव का शेविंग बॉक्स ही उठा लायी है और किसी की एक अदद चप्पल मैटाडोर में ही छूट गई है।

ऐसे हादसे अकसर होते रहते और इन्हें याद करके हमें दिली सकून मिलता—कम-से-कम थोड़े समय के लिए ही सही, इतने भयानक हादसों से तो बचे हुए हैं।

पर हमारी ऐसी किस्मत कहां ? खुशी जल्द ही अपनी एक झलक दिखाकर फुर्र हो गई। हुआ यूं कि बरसों बाद बड़े इत्मीनान से हम नाश्ता-चाय कर रहे थे कि दरवाजे पर दस्तक हुई। हमने खिड़की से झांका तो देखा—दस-ग्यारह देवियां फूलों के गुलदस्ते लेकर हमें पुकार रही हैं। उनकी वाणी में इतनी मिठास पिछले दस सालों में हमने कभी नहीं पायी। अचानक यह कायाकल्प कैसे हो गया, हम हतप्रभ हो गए। जल्दी-जल्दी चाय-नाश्ता रसोई में रखकर हमने वह शाल लपेट लिया जिसमें हम सबसे ज्यादा बीमार दीखते थे और गमगीन मुद्रा बनाये हुए दरवाज़ा खोला। एक ही सुर में वे बोल पड़ीं, "सुना है आप बहुत ही बीमार हैं। तौबा-तौबा, भगवान ऐसी बुरी बीमारी किसी को न दे।"

हमारे अंतर्मन से आवाज आयी—आखिर ऐसी कौन-सी बीमारी लिख दी डॉक्टर ने। जल्दी में हम डॉक्टर की लिखी बीमारी भी नहीं पढ़ पाए थे। बड़ी खूबसूरती से अपने पर काबू रखते हुए बोले—"सो तो है।" "तुम्हें तो अस्पताल में होना चाहिए था। बड़ी हिम्मतवाली हो जो घर में बैठी हो। मुंह कैसा पीला पड़ गया है। हाय, छोटे-छोटे बच्चे हैं तुम्हारे। हमारी सुनो तो दिल्ली के आल इंडिया इंस्टीट्यूट में इलाज करवाओ।"

आंसुओं के चंद कतरे आंखों में लाने की हमारी हर मुमकिन कोशिश नाकामयाब हो गई, आंसू ऐसे साथ छोड़ गए जैसे गधे के सिर से सींग।

खैर, जैसे-तैसे हमने उनसे विदा ली और राहत की एक लंबी सांस

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खींचकर दोबारा नाश्ते की प्लेट खींचकर दो-चार ग्रास मुंह में डाले ही थे कि दुबारा दस्तक हुई। हमें लगा कि दुनिया में हमारे भी शुभचिंतकों की कमी नहीं। अपनी अहमियत का हमें जरा भी अंदाजा होता तो एक महीने के लिए भूमिगत हो जाते यानी कहीं दूर-दराज के रिश्तेदार के घर चले जाते।

खैर, दरवाज़ा खोलते ही आठ-नौ देवियां धड़ाधड़ कमरे में घुस आयीं और हृष्ट-पुष्ट भुजाओं के गोल दायरों में जकड़ती हुई हमें ऐसे घसीटने लगीं जैसे हम सत्यवान हों और वे सावित्रियां, जो हमें यमदूतों के पंजों से छुड़वाने की पूरे दम-खम से कोशिश कर रही हों। कहने लगीं, ''अरे, आप तो चंद दिनों की मेहमान हैं।'' हमारे भीतर से आवाज आयी, ''चंद दिनों की मेहमान अभी तो नहीं हैं, लेकिन आपकी जकड़ इसी तरह मजबूत बनी रही तो कुछ ही घंटों में ज़रूर दम तोड़ देंगे।'' हमने एडवेंचर के समुद्र में हाथ-पैर मारते हुए लाचारीवश भुक्त कंठ से भगवान को याद किया—''हे महाप्रभु, अगर आप आसपास कहीं विचर रहे हों तो सचमुच अपने पास बुला लीजिए, हम आसमान से गिरकर खजूर में अटक गए हैं।'' तुरंत प्रभु के फटकारने की आवाज कानों में सुनाई दी—''अरी मूर्ख प्राणी, तुम पृथ्वीवासियों और अपने बॉस को तो उल्लू बना सकती हो, पर मुझे नहीं। अभी तेरे दिन पूरे नहीं हुए हैं। अपनी करनी की सजा भोग और खजूर में ही अटकी रह।''

''आप क्या सोच रही हैं ?'' वे प्रश्नसूचक निगाहों से हमें देखने लगी थीं। हम बड़बड़ाए—''कुछ नहीं, जरा-सी टेंशन है।'' अपनी मंजी हुई अदाकारी दिखाने से हम बाज नहीं आए और सोचने लगे—आज हम अदाकारा होते तो फिल्मवालों के छक्के छुड़ा देते।

उस दिन उनके जाने के बाद घंटों हम अपना चेहरा आईने में निहारते रहे—क्या हम वाकई कमज़ोर हो गए हैं ? क्या वह झूठा प्रमाण-पत्र अपना सच्चा रंग तो नहीं दिखाने लगा ?

अब हम जिगर थामकर मैदाने-जंग में डट गए। जब ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डरना ? हम आनेवालों के मूसलाधार प्रश्नों की बौछार को झेलते और सधे-सधाए, रटे-रटाए उत्तर देते जैसे पार्लियामेंट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में मंत्रिगण विपक्षी पार्टी के सांसदों को देते हैं और जिनका अर्थ मंत्रियों को खुद भी मालूम नहीं होता। कभी-कभी हमें हवाखोरी की तलब लगती तो जेल के सींखचे तोड़कर आए एक सज़ायाफ्ता मुजरिम की तरह चेहरा छिपाए घूमने निकलते। अपने किसी आत्मीय जन को देखकर ऐसे भाग जाते जैसे कोई आतंकवादी पुलिस को देखकर भाग जाता है।

एक दिन हम अपने ध्यान में चले आ रहे थे कि पीछे से जैसे हथौड़ा पड़ा। हमारा मतलब है किसी भीमकाया ने बड़े नाजुक अंदाज़ में कंधे पर हाथ रखा—"अरे, तुम्हें अस्पताल से छुट्टी कब मिली ?" हमें लगा जैसे पूछ रही हो—'जेल से कब फरार हुई ? सुना है बड़ी भयंकर बीमारी थी तुम्हें।' उनके प्रश्नों का हल हम खोज ही रहे थे कि उनकी गोद में खिलखिलाता उनका सातवां मुन्ना ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा और एक कट्टर उग्रवादी की तरह हम उनके पंजों से निकल भागने में कामयाब हो गए।

बात यहीं तक सीमित रहती तब भी बर्दाश्त कर लेते। एक दिन हमारे पतिदेव के नाम से खत आया। लिखा था, "प्रियतम, जल्दी ही शादी करना चाहती हूं, संपर्क करें—तुम्हारी नीलिमा।" हमारे तो पैरों तले से जमीन ही खिसक गई। हुआ यूं कि जाने उड़ती-उड़ती खबर उन तक कैसे पहुंच गई कि हम वह स्थान खाली करने वाले हैं जो उनके पहले हमने पति के साथ शादी करके ग्रहण कर लिया था। अतः उन्होंने यह सुनहरी मौका हथियाने की कोशिश शुरू कर दी थी।

हादसों के हम कुछ इस तरह शिकार हुए कि खुद एक हादसा बन गए। आज हमारी बीमारी की छुट्टी खत्म होने में पूरा एक दिन बाकी है और अचेतनावस्था में हम अनाप-शनाप बड़बड़ा रहे हैं। हमारी इस तथाकथित बीमारी से डरकर पतिदेव उसी डॉक्टर को पकड़ लाए हैं, जिसने हमें झूठा प्रमाण-पत्र देकर सच्चाई से साक्षात्कार करवा दिया था। हमारा दिमागी परीक्षण करने के बाद डॉक्टरी प्रमाण-पत्र बनवाया जा रहा है लेकिन इस बार बिलकुल सच्चा और हम बड़ी दयनीय मुद्रा में डॉक्टर को देख रहे हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

14 वर-खोजी अभियान

अभी-अभी एक पत्रिका के पन्ने पलटते हुए हमारी नजर एक शीर्षक पर अटक गई। शीर्षक है–'नारी की आजादी : सदियों पुराना नज़रिया बदलना होगा'। यह सोचकर कि इस लेख को हम बाद में पढ़ेंगे, हमने अगला पन्ना पलटा, एक और शीर्षक पर नजर गई। शीर्षक था–'जहां नारियां ही बारात लेकर जाती हैं'। एक ही पत्रिका और उस पर छपे शीर्षकों में इतना विरोधाभास ! एक जगह नारी की आज़ादी के लिए इतना संघर्ष हो रहा है और दूसरी जगह नारियां बारात लेकर जा रही हैं। एक ही देश में विचरने के बावजूद नारियों के लिए ऐसी कौन-सी परिस्थितियां रही होंगी जिनसे एक जगह तो वह गाय की भांति बड़े दीन-हीन भाव से रंभाती रही और दूसरी जगह इतनी बोल्ड हो गई कि घोड़ी समेत पहुंच गई दूल्हे को लिवाने।

वैसे हम नारियों की निर्भीकता के बारे में पहले भी बहुत पढ़ चुके हैं। उदाहरण के तौर पर संसार की एक जाति में यह प्रथा है कि पत्नी जब पति से तलाक चाहती है तो घर की मच्छरदानी गायब कर देती है। मच्छरदानी गायब करने का यह मतलब होता होगा कि उनके घर छोड़ने के विरह में अगर पति के थोड़े-बहुत प्राण शेष बचे रहें तो वह मच्छरों के काटने से निकल जाएं और पति उन्हें ढूंढ़ने के प्लान न बनाए।

आज हमें इस बात का बड़ा आश्चर्य हो रहा है कि वहां विचरने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वाले पुरुषों ने नारियों के खिलाफ अभी तक आवाज क्यों नहीं उठाई ?

खैर, बात क्रांतिकारी नारियों की चल ही पड़ी है तो न जाने क्यों आज एक अति-क्रांतिकारी नारी की छवि हमारे ज़ेहन में अंकित हो रही है। हुआ यूं कि उन्हें जब सालों-साल कोई लड़का पसंद करने नहीं आया तो वह स्वयं ही अपने ताऊ जी के साथ वर-खोजी अभियान में सफलता प्राप्त करने निकल पड़ीं। जब वह अपनी मंजिल पर पहुंची तो एक छोड़कर दो लड़कों ने उन्हें पसंद कर लिया। वह बाद की बात है कि दोनों को शहीद होना पड़ा क्योंकि एक उनसे शादी न होने के कारण भगवान को प्यारा हो गया और दूसरा उनसे शादी होने पर और अब सूचना मिली है कि तीसरा भी आत्महत्या के इरादे से उनकी ओर हाथ बढ़ा रहा है।

न जाने क्यों इस कन्या का जिक्र करते-करते हमें अपनी एक और प्रिय सखी की याद ताजा हो आयी है। हुआ यूं कि न जाने कैसे हमारी सखी ने एक पत्रिका में छपा हुआ मेट्रीमोनिअल ऐड पढ़ लिया, लिखा था—'एक अति सहनशील और सहमे हुए युवक को तलाश है एक कन्या की जो विपरीत परिस्थितियों में उनकी रक्षा कर सके। जल्द संपर्क करें।' हमारी सखी जिनको कुछ ऐसे ही युवक की तलाश थी, निकल पड़ीं उस युवक को देखने। उन्होंने उस युवक को अच्छी तरह से देखा और इससे पहले कि वर पक्ष के लोग कन्या को देखते और लड़के के दाम लगाते, वह बड़ी बहादुरी से वर को भगाकर नौ दो ग्यारह हो गईं। वर के पिता ने जी-जान लगा दी उन्हें ढूंढ़ने में, पर सब बेकार। मियां-बीवी राजी तो क्या करेगा काज़ी !

ये तो थीं हमारे देश की वीरांगनाएं जिन्होंने नारी-मुक्ति का रोना नहीं रोया बल्कि कुछ करके दिखाया। पर आज न जाने क्यों इन ऐतिहासिक घटनाओं का जिक्र करते-करते हमें भी अपनी कुछ ऐतिहासिक दुर्घटनाएं याद हो आयी हैं और वे हमारे दिमागी तंतुओं को झिंझोड़कर कुछ कहने को प्रेरित कर रही हैं।

सबसे पहली घटना तो तब घटी जब हमने प्रण लिया था कि शादी तभी करेंगे जब खुद जाकर लड़का पसंद करेंगे और अगर कोई लड़का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हमें देखने आया तो सत्याग्रह छेड़ देंगे। पिताजी ने भी हमारे क्रांतिकारी विचारों के डर से हमें अपने चाचा जी समेत एक ऐसे लड़के के घर जाकर उसे देखने की अनुमति दे दी जो भारतीय था, विदेश में पढ़ा था और भारतीय संस्कृति से बिलकुल अनभिज्ञ था। खैर, हम भी जिगर थाम कर निकल पड़े लड़केवालों के घर की तरफ और उनके दरवाजे पर पहुंचते ही हमने दस्तक दी। दरवाज़ा अजीब-सी आवाज़ करता हुआ बड़े रहस्यमयी ढंग से खुला, बिलकुल भूत बंगले के दरवाजे की तरह। अंदर पहुंचे तो देखा—एक देवी जी कंधे पर झूलते बाल लिये, कान में कुंडल धारे, हॉफपैंट और टी शर्ट पहने अपने पिता और माता जी के साथ सोफे पर विराजमान हैं। उन्होंने हमें बैठने का इस तरह इशारा किया जैसे हम कोई इंटरव्यू देने के लिए आए हुए प्रत्याशी हों। खैर, उनके आदेशानुसार हम और हमारे प्रिय चाचाजी ने आसन ग्रहण किया और आने का सबब बताया, बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ। हम अपनी खोजी नज़रों से चारों तरफ लड़के के आगमन का इंतजार कर रहे थे पर लड़के के चिह्न भी कहीं नज़र नहीं आ रहे थे। आखिरकार सामने बैठी देवी जी, जो शायद लड़के की बहन प्रतीत हो रही थी, हमें पूछ ही बैठी, 'क्या मैं तुम्हें पसंद हूं ?' हमने कहा, 'आप तो हमें पसंद हैं ही, पर आपको पसंद करने से हमारा काम तो नहीं चलेगा न, कृपा करके अपने भाई साहब को बुलाइए।' इतना सुनते ही वह क्रोधित अवस्था में उठ बैठी। हमारा मतलब उठ बैठे और कहने लगे—'हम ही वह भाई साहब यानी वर हैं जिन्हें आप देखने आयी हैं।'

उन्होंने हमें चक्कर में डाल दिया। अजीब इत्तफाक था वह नारी नहीं बल्कि नारी वेशभूषा में नर निकले। उस वारदात के बाद हम उनसे दूर छिटककर बैठ गए और कनखियों से अच्छी तरह से उन्हें घूरा। उनका भारतीय व्यक्तित्व अलग-अलग देश के कपड़ों से सजा हुआ था। जैसे किसी ने भारत की सरज़मीं पर चीन का झंडा फहरा दिया हो, उनके भारतीय सिर पर अमरीका का बना विग ऐसे लग रहा था मानो भारत पर अमरीका ने कब्जा कर लिया हो। कमीज़ यूरोप की और बटन कनाडा के जैसे यूरोप के बार्डर पर कनाडा के सिपाही पहरा दे रहे हों। हम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE 2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
आश्चर्यचकित हो गए उनके व्यक्तित्व को देखकर, वह तो दुनिया का चलता-फिरता नक्शा लग रहे थे और इंटरनेशनल इंटीग्रेशन की जीती-जागती मिसाल बने हुए थे, जिसमें सारे देश कितने प्यार और मेल-मिलाप के साथ रह रहे थे। खैर, थोड़ी देर के बाद स्थिति की नाजुकता देखते हुए हम दरवाज़े से बाहर निकले। हमें लग रहा था जैसे हम पूरी दुनिया की सैर करके आ रहे हों। खैर, वह वर्ल्ड टूर हमें किसी भी मंजिल की ओर नहीं ले गया। अगर ले गया होता तो शायद यह सब बताने के लिए हम जिंदा नहीं बचते।

बहुत दिनों तक हम इस घटना को नहीं भूले और हमारी यही धारणा बनी रही कि आम भारतीय कन्याओं की तरह हम भी पिताजी की बात मान लेंगे यानी वर पक्ष के लोग हमें हमारे घर देखने आएंगे। पर समय गुजरने के साथ ही फिर हमारे मस्तिष्क में नारी-मुक्ति और उत्थान के कीड़े कुलबुलाने लगे थे इसलिए हम एक और दुर्घटना को गले लगाने से बिलकुल नहीं चूके या यों कहिए कि हमारे शुभचिंतक मामा जी ने ही उस दुर्घटना से साक्षात्कार करवाने के लिए वह मेट्रीमोनिअल ऐड हमारे समक्ष रख दिया। लड़का भारतीय था और नित नये एडवेंचर का शौकीन था, चाहता था नारी-मुक्ति में यकीन करने वाली कन्याएं उनके घर आकर संपर्क करें और उन्हें पसंद करें। हमने एक बार फिर उन्हें देखने का रिस्क ले लिया।

उनके घर पहुंचे तो देखा वर महोदय अपनी माता जी समेत लान में मंच पर विराजमान हैं और छः-सात प्रत्याशी कन्याएं उन्हें घेरकर बैठी हुई हैं। हमें लगा जैसे स्वयंवर हो रहा हो। वैसे भी वेशभूषा से वह राम कम, सीता ज़्यादा लग रहे थे। हम भी एक खाली कुर्सी पर बैठ गए और अपनी बारी की प्रतीक्षा करने लगे कि अचानक घोषणा हुई—'जो कन्या उनकी भारी-भरकम माता जी को बिना सांस लिये एक स्थान से दूसरे स्थान तक उठाकर ले जाएगी वही लड़के के गले में जयमाला डालने की हकदार होगी।' खैर, प्रतियोगिता शुरू हुई। पहली आठ कन्याओं ने वर की भारी-भरकम माता जी को उठाने की चेष्टा की लेकिन वह टस-से-मस नहीं हुईं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब हमारी बारी आयी और उन्हें उठाने के लिए अभी हमने उन्हें छुआ ही था कि वह कूदकर हमारी गोद में विराजमान हो गई। हम उन्हें उठाए ऐसे चले जा रहे थे जैसे किसी देश की क्रिकेट टीम का कप्तान वर्ल्ड कप जीतकर आ रहा हो। अचानक वह हमारे कान में बोलीं कि तुम्हारा बैग सबसे भारी है, कितना रुपया दोगी ? यह सुनते ही हमारे पैर लड़खड़ा गए और धम्म से उन्हें नीचे पटकते हुए हम खुद भी मंजिल पर पहुंचने से पहले ही गिर पड़े। अब आलम यह था कि वह धरती पर लेटी हुई धूल फांक रही थीं और हम चित लेटे हुए आसमानी तारे गिनते हुए अपने सितारों को कोस रहे थे कि उन्होंने हमें इस कांड में शामिल होने के लिए प्रेरित किया।

जो भाषण हमने नारी-मुक्ति और नारी-उत्थान के लिए दिए थे, उनका एक-एक शब्द हमारा मुंह चिढ़ा रहा था।

इससे पहले कि वहां आपातृकालीन स्थिति घोषित कर दी जाए, हम अपने चाचा जी समेत मैदानेजंग छोड़कर बाहर खिसक आए और कसम खायी कि नारी-मुक्ति वाली बात ज़ेहन से निकाल देंगे और बजाए नारी-मुक्ति के पुरुष पर ज़्यादा जोर देंगे; क्योंकि नारी-मुक्ति से पहले पुरुष का व्यभिचारों से मुक्त होना अत्यंत आवश्यक है।

यही सोचते हुए हम और हमारे चाचा जी हारे हुए सिपाही की तरह लौट रहे थे और यह कहते हुए पाए जा रहे थे—जान बची तो लाखों पाए, लौटकर बुद्धू घर को आए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

15 ऐतिहासिक कवि से मुठभेड़

उस दिन वह किताब जाने कैसे हमारे हाथ लग गयी। शीर्षक था—'महान साहित्यकार बनने के अचूक नुस्खे'। अभी हमने चार पन्ने ही पढ़े होंगे, हमारे दिमाग में ऐसा झटका लगा कि हम झटके की ताव न सहते हुए अचेत हो गए! देखते क्या हैं कि हमारी कविता की एक किताब को साहित्य अकादमी ने अपने पुरस्कार से नवाज़ा है और इसी बात से एक सरकारी संस्था हमें समकालीन कविता पर शोध करने के लिए अनुबंधित कर रही है और इस सिलसिले में हमें अतीत के महान साहित्यकार से साक्षात्कार करने और उनका मंतव्य जानने यमपुरी भेज रही है ताकि हम अच्छा-खासा टी.ए. और डी.ए. भी बनाएं और ऐतिहासिक कवियों से मुठभेड़ भी कर आएं। जैसे ही हम वहां पहुंचे, दरबान ने हमें दरवाज़े पर ही रोक लिया और प्रश्नभरी मुद्रा में पूछा, "कवयित्री हो ?" शायद वह हमारे कंधे पर झूलते लबालब भरे थैले और हमारे बिखरे हुए बालों को देखकर सब कुछ ताड़ गया था। बोला, "सामनेवाले कक्ष के पीछे एक और कक्ष है, वहां लिखा होगा 'ऐतिहासिक कवि सेंटर'।" जैसे ही हमने वहां प्रवेश किया तो देखा एक महान कवि तख्तपोश पर तकिए से सिर सटाए अधलेटे बैठे थे। हमने उन्हें अपने आने का सबब बताया तो उन्होंने कविता के रणक्षेत्र में लड़ रहे सिपाहियों और उनके द्वारा किए जा रहे क्रिया-कलापों का पूरा विवरण हमसे पूछा। हमने अपनी लिखी

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
हुई रिपोर्ट उन्हें सुनाई। जैसे भारतीय सरकार उन्नति के लिए विभिन्न प्रकार के ऑपरेशन शुरू कर रही है, शिक्षा के क्षेत्र में ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड, क्लीन इंडिया वगैरह, उसी प्रकार कविता के क्षेत्र में क्लीन कविताई चल रहा है यानी कविता की सफाई यानी सफाया होता जा रहा है। कविता पर नए-नए शोध किए जा रहे हैं, जैसे साइंसदां गेहूं, चावल, गन्ने की नये-नये हाईब्रिड किस्में उपजाने में लगे हैं उसी प्रकार कविता के महारथी कविता की नई-नई तरह की रेसिस्टेंट किस्में उपजा रहे हैं ताकि सुननेवाला सुन भी ले और उसके साइड इफेक्ट्स भी न हों यानी सुनकर वह एकदम ही सुन्न हो जाए और क्रांति के बीज दिमाग में अंकुरित न हों यानी सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। दूसरा यह कि कविता के खास-खास फार्मूले तैयार हो रहे हैं जैसे अलजेबरा में खास-खास फार्मूले की सहायता से अलग-अलग तरह के सवाल निकाले जा रहे हैं, उसी प्रकार एक फार्मूला जानकर वह शब्दों को इकट्ठा करके उसमें फिट कर रहे हैं। अगर उपर्युक्त क्रिया से उन्हें संतोष नहीं होता तो वह विभिन्न संस्थाओं में जाकर कविता के बने-बनाए सांचे ले आते हैं और अपनी कविताएं उस सांचे में ढाल लेते हैं। जैसे मठरी बनाने के लिए सांचों का इस्तेमाल होता है उसी प्रकार कविताएं भी सांचे में ढली निकलती हैं और अगर वह अलग तरह की कविता भारतवर्ष के साहित्य के पर्दे पर उतारना चाहते हैं तो यह बिना मैच किए हुए प्रत्यारोपित दिल या किडनी की तरह रिजेक्ट कर दी जाती है।

अब रही बात कवि सम्मेलनों में श्रोताओं को कविता सुनाने की, यदि वह उन्हें आतंकित करना चाहते हैं तो कविता के बेमेल आदि और अंत को प्रस्तुत करके धमाकेदार शब्दों का उच्चारण करते हैं चाहे उनके अर्थ श्रोताओं को सात जन्म लेने पर भी समझ न आएं, श्रोता आंखें फाड़े उनका चेहरा ही देखता रह जाए। यदि वे बेदम कविता में भी दाद पाना चाहते हैं तो आपसी तालमेल की प्रक्रिया से बाकी कवियों को दाद देते हैं और मौका पाने पर वापस ले लेते हैं। यदि वह हास्य रस की रस-विहीन कविता पढ़ते हैं तो अचानक उससे वीर रस और शृंगार रस का सम्मिश्रण छलकता है और श्रोता उनके पढ़ने के विभिन्न स्टाइल से

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
मंत्रमुग्ध होने के साथ-साथ अलग-अलग तरह के रसों का स्वाद लेते हैं।

अगर एक्सीडेंटली कवि कविता छोड़कर आलोचक बन जाता है तो वह एक-एक से गिन-गिनकर बदले लेता है और उसको एक ऐसी अंधेरी दिशा दिखलाता है जहां से वह कभी वापस न आए।

अब हम आपके समक्ष कुछ विशेष बातें रखना चाहते हैं कि धरा पर जो कवि हैं वे छपास की बीमारी से पीड़ित हैं जो एड्स की तरह लाइलाज है। दूसरे, वे ओरिजिनल कविताओं की जगह सिंथेटिक कविताएं ज्यादा बना रहे हैं। तीसरा, अकसर उनकी कविताओं में रस नहीं होता और वह विशिष्ट प्रकार का रस संपादक को पिलाते हैं जिससे वे अर्धचेतनावस्था में उनकी कविता छापने की मंजूरी दे देता है। इससे लेखक लिखते-लिखते कूच नहीं करता, संपादक छापते-छापते कूच कर जाते हैं। हमारी रिपोर्ट सुनने पर उन महाकवि ने पानी का घूंट हमसे मांगा और कहा—हम तो पहले से ही मर चुके हैं। हमें दुबारा मरने पर मजबूर मत कीजिए। आप तुरंत पृथ्वीलोक लौट जाइए और अपना टी.ए. और डी.ए. हमारी जेब से ले जाइए।

हम बहुत घबरा गए। हमारी अंर्तात्मा ने भीतर से हमें फटकारा—अगर पूरी रिपोर्ट लेकर वापस नहीं गई तो तुझसे वह अवार्ड भी वापस ले लिया जाए और यह कहकर टाल दिया जाए कि अवार्ड किसी और का था, गलती से तुम्हारे पास चला गया था। वैसे भी हमारे नाम की गलतियां अकसर होती रहती हैं जैसे अनिला की जगह हमेशा अनिता या अनिल लिखा रहता है।

पर हमने गायत्री मंत्र का जाप करते हुए पानी का गिलास पिला कर उन्हें उठाया, "लीजिए पृथ्वीवासियों का देखने का यंत्र और धरा पर डूबते-उतरते कवियों पर एक नज़र डालिए और खुद समीक्षा करके रिपोर्ट हमें दीजिए।"

"ठीक है", कहते हुए वह इस यंत्र से धरा पर विचरते कवियों का आंखोंदेखा हाल हमें सुनाने लगे—

"एक कवि गोष्ठी का आयोजन हो रहा है। कुर्सियों की धरा-उठाई चल रही है। कुछ विशेष कुर्सियां विशेष लोगों के इंतजार में प्रतीक्षारत

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
हैं। पहले कवि थैले में से कविता निकालने का आडंबर कर रहे हैं। कविता इस प्रकार है :

देश के मासूम
सिपाही
बढ़े चलो
जब तक तुम्हारा
दम¨न¨न
जब तक तुम्हारे
दम में दम है
तब तक तुम्हारे
पीछे यम है

कविता वीर रस की है पर बीच-बीच में कवि के चेहरे पर उभरती करुणा और शब्दों की गरिमा से कहीं-कहीं करुण रस का आनंद दे रही है और लगता है कवि किसी आतंकग्रस्त और अभावग्रस्त मोहल्ले का निवासी है। अपने पूर्वजों के वीरता के गुण-सूत्रों की शक्ति से वीर होने पर बाध्य हो रहा है। अब आ रहे हैं दूसरे कवि जिनकी कविता में गहराई है। कवि प्रकृति-प्रेमी है और कविता बाढ़ के पानी पर आंसू बहाती शुरू होती है और नलों में पड़े सूखे पर खत्म हो जाती है। कविता में इतनी गहराई है कि श्रोता उसमें डूबकर दम तोड़ने के बजाए किनारे-किनारे ही खड़े हैं। अगली कविता पढ़ी जा रही है और श्रोता उन धमाकों की ध्वनि में धमकाए जा रहे हैं। शब्द दिमागी तंतुओं में घुसे बगैर ही दूसरे कान से भागने की कोशिश कर रहे हैं। कविता में बीभत्स रस है और श्रोतागण एहसासे-कमतरी का शिकार होते हुए कविता के सार को पकड़ने की कोशिश में सिर हिलाने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। अगले कवि आ रहे हैं। उन्हें गड़े मुर्दे उखाड़ने का शौक है। वह अतीत में रहते हैं, सोते हैं और वर्तमान में अकर्मण्यता के शिकार हो जाते हैं। वर्तमान जब अतीत बनता है तो उस पर वह आंसू¨'' और वह कहते-कहते ही वाक्य को अधूरा छोड़कर गश खाकर गिर पड़े। हमने उन्हें धरा की कविताई पर

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समीक्षा करने के लिए बहुत झकझोरा पर सब निरर्थक। उन्होंने फिल्मी हीरो की तरह कुछ क्षण आंखें खोलीं और कहा कि 'इससे पहले धरा की कविताई के जीवाणु यमपुरी में फैलें, तुरंत वापस लौट जाओ। अरी अबला नारी, कम-से-कम कविता को तो अबला न बना।' कहकर उन्होंने अपने कांपते हाथों से धकेलते हुए आंखें मूंद लीं और हम धम्म से नीचे आ गिरे अपनी शोध की फाइलों के साथ। आंख खुली तो देखा कि हमारे बड़बड़ाने से भयभीत होकर घर के सारे लोग हमारे बिस्तर को घेरे खड़े हैं और महान साहित्यकार बनने के नुस्खे वाली किताब के पन्ने हमारे सिरहाने पड़े फड़फड़ा-फड़फड़ाकर हमारा मजाक उड़ा रहे हैं।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

16 इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त हैं

आज हमारे हृदय में दो महीने से निरीह और लावारिस पड़े टेलीफोन के अस्थि-पिंजर को देखकर बड़ी करुणा उपज रही है। बेचारा सारे दिन ट्रिंग-ट्रिंग की आवाज करके हमें जब भी बुलाता था तो हम भी उसे अपने कान से सटाकर अपने आत्मीय जनों से बात करते नहीं थकते थे। पर हाय ! आज वह गुमसुम-सा एक कोने में पड़ा है और उसकी खोयी हुई धड़कनों के दुबारा उसमें प्रवेश करने के आसार नजर नहीं आ रहे। पहले हम अपने आत्मीय जनों से बात तो कर लेते थे और यह जान लेते थे कि अमुक आदमी अभी परलोक नहीं सिधारा है चाहे उसकी शक्ल देखने की ज़हमत उठाए हमें बरसों बीत जाते थे। पर आज अगर हम उन आत्मीय जनों के पास खुद भी चलकर जाएं और पूछें—कहो भइया, कैसे हालचाल हैं, फोन की ख़राबी की वजह से हम तुमसे बात करने को तरस गए हैं—तो प्रश्न यह उठता है कि हम अमुक आदमी को पहचानेंगे कैसे ? हम तो सिर्फ उसकी आवाज़ को पहचानते हैं। बस, एक उपाय है जो हम कर सकते थे—वह यह कि बीच चौराहे पर खड़े हो जाएं और जनता से मुखातिब होकर कहें कि इतनी बड़ी जनता में अगर हमारा कोई आत्मीय जन मौजूद हो जो हमारी आवाज़ से वाकिफ हो तो वह कुछ लफ्ज़ बोलकर अपनी पहचान हमसे करवाए—फोन की खराबी की वजह से हम उनसे बात करने को तरस गए हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वैसे तो हम सौ प्रतिशत दावे के साथ नहीं बता सकते कि फोन का आविष्कार आत्मीय जनों से संबंध बरकरार रखने के लिए हुआ था या संबंधों को बेकार करने के लिए, पर इतना ज़रूर बता सकते हैं कि फोन का आविष्कारक ज़रूर अपनी धर्मपत्नी को ललकारने की उत्कट इच्छा दिल में पाल रहा होगा। उसे लगा कि अगर वह सामने से ललकारेगा तो वह अपने तमाम अस्त्र-शस्त्र लेकर प्रकट हो जाएगी और झाड़ू उठाकर अगर वह दूर से ललकारेगा तो शायद वह अंत तक उसका पीछा करेगी, और हो सकता है सारे पड़ोसी भी उसके साथ हो लें। तो उसे लगा कि कुछ ऐसी खोज की जाए कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे—तो अचानक एक विचार ने उसके दिमाग में पंख फड़फड़ाए होंगे। उसने एक लंबी-सी तार ली होगी और उसके एक सिरे पर यंत्रनुमा डिब्बा लेकर कोई उपाय जुटाकर बीबी के कान में फिट करके और उसके दूसरे सिरे को पकड़कर किसी गुप्त कोने में बैठकर उसने अपनी बीबी को ललकारा होगा कि हिम्मत हो तो आ जा सामने। श्रीमती जी की आवाज कानों में आयी होगी—चुप करो! मृत आत्माएं भी कभी किसी को बुलाती हैं। तब उसे लगा उसकी खोज निरर्थक नहीं गई—वह उस वैज्ञानिक आर्किमडीज की तरह चिल्लाया होगा—पा लिया, पा लिया ! जिसने बाथ-टब में नहाते हुए एक महान खोज कर ली थी और चिल्लाता हुआ नंगा ही सड़कों पर निकल आया था। पर फोन का आविष्कारक 'पा लिया, पा लिया' कहकर सड़कों पर नहीं आ सकता था क्योंकि उसे अपनी श्रीमती जी द्वारा पकड़े जाने का डर था इसलिए उसे इतनी बड़ी खोज को अकेले ही झेलना पड़ा होगा।

खैर, जो हुआ सो तो हुआ, लेकिन फोन के आविष्कार से कई नैतिक परिवर्तन हुए, जो थोड़े बहुत सत्यवादी प्राणी सामने वाले प्राणी से डरकर सच उगलते थे, वे झूठवादी हो गए। पहले सामने-सामने झूठ बोलने पर उनके अंदर का सत्यवान उनके मुखमंडल पर थोड़ी बहुत झलक दिखा दिया करता था, पर उन्हें अब कोई झंझट नहीं था, झूठ बोलते समय पकड़ा नहीं जा सकता था।

कुछ कर्कश स्वर वाले नर और नारियों के कंठ में अचानक बदलाव

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आ गए। फोन का रिसीवर पकड़ते ही उनके कंठ अति सुरीले हो गए और वे बड़े प्यार से 'हल्लो' कहकर पूछने लगे, 'कौन साहब फरमा रहे हैं ?' चाहे दूसरी तरफ से शर्मा या गुप्ता जी का पालतू कुत्ता ही क्यों न भौंककर हल्लो कहे।

कुछ दबे हुए सुरों वाले प्राणियों के सुरों में अचानक परिवर्तन आया—वे फोन को अपना डिफेंस का साधन बनाए हुए ऊंचे सुरों में बात करते हुए अति बोल्ड हो गए चाहे उसके बाद हुए परिणामों को उन्हें भोगना पड़ा।

इस वक्त फोन की बात करते-करते न जाने क्यों हमें अपनी एक प्रिय सखी की याद ताज़ा हो आयी है, जिनका दृष्टिकोण सुविधावादी होने के चक्कर में अहिंसावादी हो गया था; क्योंकि आफेंस को ही वह अपना डिफेंस समझती थीं। लेकिन घर में घुसते ही उनका दृष्टिकोण फोनवादी हो जाता था। वह अपनी असंख्य सहेलियों को फोन मिलाते-मिलाते थकती नहीं थीं। फोन पर आम के अचार डाले जाते, पुलाव बनाने की विधि बताई जाती, चादर काढ़ने के नमूने समझाए जाते। पर टेलीफोन ने भी मौका देखकर एक दिन आक्रामक रूप दिखाया—उन्हें बुलाने के लिए वह देर तक घंटी बजाता और जैसे ही वह उसे पकड़ने के लिए कभी हाथ में साबुन लिये हुए, कभी फ्राइंग पैन लिये हुए लपकती तो वह झट बंद हो जाता और जब वह खुद कहीं फोन करने की कोशिश करतीं तो वह अपनी सांस यानी डायल टोन को बंद कर देता। खैर, उन्हें रिझाने और उकसाने का कार्यक्रम टेलीफोन ने पूरे एक महीने जारी रखा और अंत में तंग आकर उन्होंने फोन का बिल अदा करने की सुविधा को त्यागकर खुद को असुविधाभोगी बनाकर चैन की सांस ली।

अब हम जब भी उनके घर फोन करते हैं, तो आवाज़ आती है —"यह फोन अस्थायी रूप से काम नहीं कर रहा है।"

हम बार-बार यह आवाज़ सुनते हैं और उसी आवाज़ से यह पूछना चाहते हैं कि इस देश में स्थायी रूप से काम कर कौन रहा है ? हमें लगता है कि इस देश में स्थायी रूप से काम करने वाले प्राणियों के प्रेरणास्रोत गधे ही रहे होंगे; क्योंकि वे ही गीता के उपदेश 'कर्म ही पूजा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है' पर चलकर बेइंतहा बोझा ढोते रहते हैं और उसके दुष्परिणाम भोगते रहते हैं। इसीलिए देश भर के प्राणियों ने गधों की दुर्दशा देखकर उनके जैसे काम न करने और न बनने की ठान ली। वाह रे गधे, तूने जब प्राणियों को बदल डाला, हमारा वश चले और आपकी सहमति हो तो हम गधे को राष्ट्रीय प्राणी बना दें।

खैर, यह रही आपकी मर्ज़ी कि आप गैर गधावादी दृष्टिकोण रखिए या गधावादी; पर एक हिदायत हम आपको जरूर देते हैं कि अपने फोन पर विश्वास न करते हुए कभी भी किसी की निंदा किसी से फोन पर न करें—ऐसा न हो कि आपका विश्वासघाती फोन उसी से आपकी बात करवा दे जिसकी आप निंदा कर रहे हों। मसलन आप गधे की निंदा घोड़े से कर रहे हों तो हो सकता है वह गधा उस निंदा को सुन रहा हो और आपको लेने के देने पड़ जाएं।

खैर, आप दुखी मत होइए यह सोचकर कि आपको फोन पर निंदा करने की उत्कट इच्छा को दबाना पड़ेगा, क्योंकि कुछ ही सालों में घर-घर में ऐसे फोन लग जाएंगे जिनसे आप बात करने वालों की तस्वीर देख सकेंगे, तब आपको इसके तीन फायदे होंगे—पहला यह कि आपको गधों और घोड़ों में पहचान करने की किल्लत नहीं उठानी पड़ेगी। दूसरा यह कि कास्मेटिक्स इंडस्ट्री खूब फलेगी-फूलेगी क्योंकि हर स्त्री फोन पर आने से पहले मेकअप रूम में प्रवेश करेगी और तीसरा यह कि कार्यालयों में जो समय काटे नहीं कटता था वह मेकअप करने में बड़ी आसानी से व्यतीत हो जाएगा।

समय व्यतीत करने की बात से हमारी नज़र फिर एक बार अपने फोन पर जा टिकी है और नज़र पड़ते ही हमारा दो महीने से बंद पड़ा फोन एकाएक बजने लगा है। रिसीवर उठाते ही आवाज़ आयी, "क्या आप सीता बोल रही हैं ?" आपकी जानकारी के लिए यह वह ही शख्स है जिनकी सीता कहीं खो गई है और पिछले छः महीनों से, विभिन्न तर्क देकर और प्रमाण पेश करके वह हममें अपनी खोयी हुई सीता तलाश कर रहे हैं—हमें सीता बनाने पर तुले हैं। हम झटपट कह उठते हैं—जनाब, हम सीता नहीं, सावित्री बोल रहे हैं क्योंकि अगर हम सीता होते तो

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कहते हैं—पृथ्वी मैया, फट जा और अपने सीने में आंधी-तूफानों की कृपा से दबी असंख्य तारों को निकालकर बंद पड़े फोन चालू करवाकर हमें उनकी जगह अपने सीने में सदा के लिए समा जाने दे। पर हम सीता नहीं, सावित्री हैं, जो टेलीफोन की तारों से खिलवाड़ करने वाले यमराजों का अंत तक पीछा करेंगी और लगातार करती जाएंगी।

पर फिलहाल हम बार-बार फोन पर यह सुनकर कि 'क्या आप सीता बोल रही हैं', हम अपना असली नाम भूले जा रहे हैं और सोच रहे हैं कि शायद हम सीता ही हों। शायद हम ही अपना नाम भुला बैठे हों। इस बात की पुष्टि करने के लिए हमने अपनी सखी का नंबर घुमाया, एक सुरीली-सी आवाज गूंजी, "डायल किया गया कोड कृपया जांच लें।" अपनी मानसिक अवस्था पर शक करते हुए हमने एक और सखी का नंबर घुमाया, आवाज़ गूंजी, "डायल किया हुआ नंबर कृपया जांच लें।" अब तो हमें लगा कि कहीं गड़बड़ जरूर है, फिर भी हमें अपने दिमाग पर थोड़ा बहुत भरोसा था, एक बार फिर नंबर घुमाया, आवाज गूंजी, "यू आर इन ए क्यू, प्लीज वेट फॉर सम टाइम।" हमें लगा कि हम संसार भर के पागलों की लंबी क्यू में खड़े हैं और थोड़ी देर इंतज़ार करने के बाद पागलखाने के सींखचों के भीतर धर लिये जाएंगे। अब तो संकटमोचन को याद करते हुए हमने पागल होने की सूचना अपने घरवालों को देनी चाही, वही सुरीली आवाज आयी, "इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त हैं, कृपया थोड़ी देर के बाद फोन करें।" अब हम भी बोल पड़े, "फोन करने के लिए जिंदा बचेंगे तभी करेंगे न फोन।" हमें लगा हम तक पहुंचने वाली संसार भर की सभी लाइनें व्यस्त हो चुकी हैं और हम अपने दिमाग सहित अस्त-व्यस्त, सुधरने के कोई प्रमाण शेष नहीं रह गए हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

17 स्वतंत्रता की स्वायत्तता

अभी हमें एक पत्रिका के संपादक का पत्र मिला है। लिखा है—'स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती पर जल्द ही एक व्यंग्य लिखकर भेजें। व्यंग्य में विवादास्पद बात नहीं होनी चाहिए।' पत्र पढ़कर सारा शरीर झनझना गया। एक तो स्वतंत्रता पर व्यंग्य और उसमें विवादास्पद कांडों का बखान करने की स्वतंत्रता पर रोक। अजीब पशोपेश में पड़ गए थे हम। हमें कहा जा रहा था—स्वतंत्रता और विवादों के प्रगाढ़ रिश्ते में दरार डालिए। अरे, अगर हम आप से कहें कि हवा के साथ विषैली गैसों की प्रगाढ़ता को कम करके दिखाइए, अनाज के साथ पत्थर और लोहे के टुकड़ों को जुदा करवाइए, आदमी और मक्कारी के रिश्ते को तोड़िए, शुद्ध घी के साथ डालडा का प्रेमालाप बंद करवाइए, इंसानी खून में पानी की मिलावट पर रोक लगाइए, कई किए गए वायदों को उनके फायदों से अलग कीजिए तो क्या आप इतना जटिल कार्य संपन्न कर सकते हैं ! तो फिर आप हमें कैसे मजबूर कर सकते हैं स्वतंत्रता को विवादों से अलग करने के लिए।

आप खुद भी जानते हैं कि असंख्य विवादों के तीरों पर पसरी है हमारी स्वतंत्रता। भीष्म पितामह की तरह, जब-जब स्वतंत्रता का सिर बिना तकिए के नीचे लुढ़क जाता है तो आप में से ही कोई धुरंधर नये तीरों का तकिया गाड़कर सिर को ऊंचा कर देता है तो स्वतंत्रता अनिच्छा

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मृत्यु की अभिलाषा में टंगी रहती है शून्य में। अगर तीरों को निकाल दिया जाए तो वह तीरशायी न रहकर धराशायी हो जाएगी और हम तो बस यही चाहेंगे कि हर दिन नये विवादों के तीरों से उसके हाथ-पैरों को भी परमानेंटली फिक्स कर दिया जाए ताकि वह दया की भीख भी न मांग सके और जिंदा भी बनी रहे।

पर आज हम आपसे दया की भीख मांग रहे हैं कि हमारी कलम को सिर्फ कुछ मिनटों के लिए स्वतंत्र बनाया जाए ताकि स्वतंत्रता के जिस्म पर पड़े जख्मों को देश के हर नागरिक को दिखा सकें, पर हम भी और लेखकों की तरह मज़बूर हैं, हमें लग रहा है कि हम संपादक जजों के समक्ष कटघरे में खड़े हैं और हमें हुक्म दिया जा रहा है कि अपने हाथ-पैर बांधकर विसंगतियों के गाल पर ज़ोर से तमाचा मारो, आंखें फोड़ लो और समाज में फैली विकृतियों को ढूंढ़-ढूंढ़कर आकार दो, टांगें कटवा कर स्वतंत्रता की जय-जयकार करते हुए तेज़ दौड़ो और मंजिलों को पा लो, सूंघने की सारी शक्तियों को क्षीण कर लो और सूंघकर पता लगाओ कि समाज का कौन-सा अंग सड़ रहा है। चलिए, कोशिश करके देखते हैं। हमें लग रहा है हम सब बंधुआ मज़दूर हैं, हमारे हाथों में धतूरे के बीज थमाकर कहा जा रहा है कि इन्हें स्वतंत्रता की बांझ धरती में गाड़कर गुलावों की फसल तैयार करो और फसल उगने पर धतूरे के पत्तों को गुलाब की पंखुड़ियां समझकर चबाओ और नशे में धुत्त रहो।

न जाने क्यों आज हमें यह गीत याद आ रहा है—बढ़े चलो, बढ़े चलो, स्वतंत्रता पुकारती, पर आज स्वतंत्रता हमसे पीछा छुड़ा रही है और कह रही हे—छोड़ दो आंचल, जमाना क्या कहेगा।

पर सुश्री स्वतंत्रता जी ! हम आपका आंचल छोड़ भी दें पर हमारे रक्षक कैसे छोड़ सकते हैं, आप ही के बलबूते पर तो उन्होंने न जाने कितने भारतवासियों के दिल में दिवास्वप्न बोए हैं। दुःस्वप्नों की फसलें कटवाई हैं, विसंगतियां बोई हैं और लाचार लोगों की गति करवाई है विकृतियां बोई हैं और सुंदर आकृतियों को बांहों में भर लिया है; दुराचार बोए हैं और अनगिनत कुप्रचार करवाए हैं; कुरीतियां बोई हैं और देश को रीत-बीत जाने का श्राप दिया है; भ्रांतियां बोई हैं और कई-कई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्रांतियां करवाई हैं। हवाले करके देश में दिवाले निकाले हैं, सुनयनाओं से कांड करवाकर उन्हें कण्डों के हवाले किया है, क्योंकि स्वतंत्रता हमारे खून में ही है। इसका सही उपयोग हम जब जी चाहे करेंगे, चाहेंगे तो सभी जंत्र, तंत्र, मंत्र का इस्तेमाल करते हुए सारे यंत्र हज़म कर जाएंगे, पशुओं के चारे में से भी अपना हिस्सा मांगते हुए उन्हें बेचारा कर जाएंगे। आरक्षणों के रक्षण के लिए लोगों को तैयार करवाकर स्वतंत्रता का भक्षण करेंगे, यूरिया हज़म करके दिमागों को और ज़्यादा फरटाइल बनाएंगे।

न जाने आज क्यों हमें उस वीर सपूत की याद रह-रहकर सता रही है जिसने कहा था, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा।" अब अगर स्वतंत्रता हाथ से फिसल गई तो हमारे कई वीर सपूतों को खून मांगने में भी डर लगेगा कि कहीं खून में एड्स के जीवाणु न हों, प्लेग, टी.बी. और डेंगू के कीटाणु न हों, खून के बदले कहीं पानी न हो, या ऐसा भी हो सकता है कि शरीरों में एक बूंद भी खून न मिले, या फिर खून की जगह सिर्फ विषैली गैस ही मिले और सपूत ठगे जाएं। इसलिए हमने सोचा कि क्यों न वीर सपूतों को नागरिकों के द्वारा रची गई ठग प्रक्रिया से बचाया जाए और नारे को नया रूप दिया जाए, जैसे 'तुम मुझे माया दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा,' 'नैतिकता को रस्सियों से जकड़कर अनैतिकता को स्वतंत्र करने में तुम्हारी मदद करूंगा', मसलन नौकरियां खरीदने की स्वतंत्रता, बिजली के बिलों को न चुकाने की स्वतंत्रता, देश भर के सभी कार्यालयों को खरीदने की स्वतंत्रता, अंत में अपना ज़मीर बेचने की स्वतंत्रता।

हमें यह महसूस हो रहा है कि दुनिया की हर शह स्वतंत्र है, गुलाम है तो सिर्फ हमारी कलम।

अभी-अभी हमारे इडियट-बॉक्स में आज़ादी के पचास वर्षों में हुए लेखन के बारे में चर्चा हो रही है। इन वर्षों में हुए लेखन पर प्रकाश डालने को कहा जा रहा है। दूसरा स्वर गूँज रहा है—स्वतंत्रता के साथ ही साथ हमने विभाजन के दर्द को भी भोगा इसलिए इस दर्द ने हमें स्वतंत्रता के बाद की अनुभूतियों को उस शिद्दत के साथ भोगने का मौका नहीं दिया इसलिए लेखन उतना प्रभावशाली नहीं रहा। हम सोच में पड़

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
गए हैं कि विभाजन की तड़प में उठे हुए इस बलशाली दर्द ने हमारे देश की अन्य विभूतियों की अनुभूतियों को इस तरह झिंझोड़ा कि उन्होंने बाकी बचे हुए देश को भी बांटने की ठान ली। भारत का चप्पा-चप्पा स्वतंत्रता मांगने लगा। इस स्वायत्तता से हम इतना डर गए हैं कि कभी-कभी हमें लगता है कहीं हमारे शरीर के भी छोटे-छोटे हिस्से बगावत पर न उतर आएं और स्वायत्तता की मांग करने लग जाएं। हमारी आंखें कहें कि हमें जब मर्जी खुलने और बंद होने की स्वायत्तता चाहिए, मुंह कहे कि मुझे भी जब मर्जी सब कुछ हड़प जाने की स्वायत्तता चाहिए, पेट कहे कि जब चाहे चीज़ें हड़प करने की स्वायत्तता चाहिए, हाथ कहें कि हमें भी मारने-धाड़ने की स्वायत्तता चाहिए, नाक कहे कि उसे भी गंद बला सूंघने की स्वायत्तता चाहिए, दिल कहे कि वह भी अपनी मर्जी से धड़केगा तो अंत में हम भी यही कहते हुए नज़र आएंगे कि हमें भी संसार त्याग करने की स्वायत्तता चाहिए।

हां तो बात पहले लेखन की चल रही थी तो लेखन ने भी कई हिस्सों में बंट जाने की स्वतंत्रता मांगी है, जैसे महिला लेखन, पुरुष लेखन। और आगे भी बंट जाने की उम्मीद है जैसे जवान लेखन, बुढ़ऊ लेखन, महा बुढ़ऊ लेखन, मुर्दा लेखन, जिंदा लेखन, वगैरह-वगैरह। साहित्य की कई विधाएं हैं जैसे कविता, कहानी, नाटक, रपट, उपन्यास, व्यंग्य आदि। ये भी कई शाखाओं में विभाजित होंगी जैसे कविता की शाखाएँ उपजेंगी—महाकविता, लघु-कविता, सूक्ष्म कविता, इंस्टेंट कविता, ऑटोमैटिक कविता!, मंचीय कविता, गैर मंचीय कविता। भगवान करे यह हजार शाखाओं में विभाजित होकर फले-फूले।

इतना सब कहने के बाद हमें शिद्दत से महसूस हो रहा है कि हमारे चारों तरफ मायालोक है। पहले हमें महसूस होता था कि हम छायावादी हैं, अब लग रहा है कि मायावादी होकर कायावादी बन जाएंगे। मायावाद की बात जब चल ही पड़ी है तो न जाने क्यों हमें महाभारत के मायावी तालाब की याद रह-रहकर ताजी हो रही है और हमें लग रहा है कि हमारे देश के सभी भाई-बंधु एक-एक करके मायावी तालाब में मायाजल पीने जाते हैं और यक्ष के सवालों के उत्तर न देने के जुर्म

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में वहीं मदहोश हो जाते हैं। शायद अंत में हम भी जाएं तो अचानक यक्ष जी वहां प्रकट होकर कहें--'पहले मेरे सवालों का जवाब दो; तब तुम मायाजल ग्रहण कर सकते हो। अपने भाइयों को देखो ! इन्होंने मेरे सवालों का जवाब दिए बिना ही पानी पी लिया था। दो जवाब !' वह उसी सुर में बोलेंगे जैसे कोई पुलसिया हफ्ता मांगता है और कहता है--मेरा हफ्ता दो नहीं तो यहां से रफ्ता-रफ्ता बिना पानी पिए ही चले जाओ। हम कहेंगे, 'यक्ष जी, आप भी बड़े दक्ष निकले। वसूलिए, क्या वसूलना चाहते हैं।' वह बोलेंगे--'मेरे प्रश्नों का उत्तर दो।' पहला सवाल--सबसे बड़ा धन कौन-सा है ?

हम कहेंगे--काला धन।

दूसरा प्रश्न--हवा से भी तेज कौन-सी चीज़ चलती है ?

हम कहेंगे--रिश्वत।

तीसरा प्रश्न--यश-लाभ का एकमात्र उपाय क्या है ?

हम कहेंगे--माया।

चौथा प्रश्न--सर्वोत्तम लाभ क्या है ?

हम कहेंगे--मनी।

पांचवां प्रश्न--मनुष्य का साथ कौन देता है ?

हम कहेंगे--नोट।

छठा प्रश्न--कौन-सा ऐसा एकमात्र उपाय है जिससे जीवन सुखी हो सकता है ?

हम कहेंगे--रुपये से।

सातवां प्रश्न--स्वतंत्रता कौन से चार खास खंभों पर टिकी है ?

हम कहेंगे--दुराचार, अत्याचार, व्यभिचार, अनाचार।

यक्ष प्रफुल्लित होकर कहेगा--'बोलो, क्या मांगती हो ?' हम कहेंगे--'इस मायावी तालाब को मिट्टी डालकर पाट दिया जाए और सब अधमरे प्राणियों की कब्रें पाटी हुई जगह पर बनाई जाएं।' हमें पूरा विश्वास है कि यक्ष क्रोधावस्था में सभी अधमरे प्राणियों को खड़ा कर देगा और हमारी कलम छीनकर हमें भी मायावी तालाब में घसीटकर अनगिनत डुबकियां लगवाएगा अपनी स्वतंत्रता की स्वायत्तता के भरोसे।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

18 सच हुए न सपने मेरे

उस सड़क पर चलते-चलते एक फटी हुई डायरी के कुछ पन्ने हवा के झोंकों से फड़फड़ा-फड़फड़ाकर हमारा ध्यान बरबस अपनी ओर आकर्षित कर रहे थे। हमारी जिज्ञासा उन्हें उठाने के लिए प्रेरित कर रही थी। हमने अपने आसपास विचर रहे प्राणियों का निरीक्षण करते हुए उन्हें उठाया और पहला पन्ना पढ़ते ही हमारी नज़र उसके शीर्षक पर अटक गई। लिखा था—'सच हुए न सपने मेरे'। हमारी जिज्ञासा ने अपने पंख विस्तृत कर लिये और परिणामस्वरूप हमने अपनी सरसरी नज़र तीन-चार पन्नों पर दौड़ाई तो सारा सार झट समझ में आ गया। जनाब को तलाश थी एक कवयित्री पत्नी की। हम सन्न रह गए कि कैसा नौजवान इस पवित्र धरा पर अवतरित हो गया है, जो एक कॉन्वेंट की पढ़ी हुई धड़ल्ले से अंग्रेजी बोलने वाली, सुंदर, लंबी, घरेलू काम-काजी लड़की को छोड़कर महज एक कवयित्री पत्नी की कल्पना कर रहा है। हो सकता है यह नौजवान इस धरा पर बेवजह बेरोज़गारी की स्थिति में भूखों मरने से ज्यादा विवाह की बलिवेदी पर एक कवयित्री पत्नी के संहार से मरने को ज़्यादा अहमियत देता है। उनके इस बेचारगी से परिपूर्ण अंतिम निर्णय का विचार ज़ेहन में कौंधते ही हमने अपनी पूरी तल्लीनता से डायरी को पढ़ना शुरू कर दिया। लिखा था कि जब वह अपनी उम्र की रंगीन दहलीज़ पर पहुंचे तो एक छोटे-से सपने की कोंपल उनके

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिल में फूटने लगी। सब लोग उन्हें निठल्ला, आवारा, बेरोज़गार और जाने कौन-कौन से तमगों से नवाजते रहे। क्यों न वह एक कवयित्री पत्नी से शादी कर ले जो उनके भीतर के छिपे निरीह प्राणी को परखे, समझे और उन पर प्रणय रचना लिखे। और वह एक पल भी न गँवाकर अपने सुंदर स्वप्न को साकार करने के लिए जुट गए पत्नी-खोजी अभियान में। अखबार में ऐड देने से लेकर स्वयं भी उन्होंने उस प्रदेश की खाक छाननी शुरू कर दी। कोई भी ऐसी महफिल न थी देवियों की जहां वे उपस्थित न हुए हों। 'वतन की राह में ऐ नौजवान शहीद हो' वाले गाने को घुमाव देकर वह इस तरह गाने लगे, 'विवाह की राह में ऐ नौजवान शहीद हो'। और अपने साथ-साथ न जाने कितने ही नौजवानों को गुमराह करते रहे। अंत में उनके एक खास दोस्त ने उनके सपनों की जटिलता को पहचानते हुए एक कवयित्री जी से साक्षात्कार तो करवाया पर बहुत ही दूर से, पर उनके लिए ये दूर के ढोल सुहावने नहीं बल्कि अत्यंत बीभत्स निकले, इस प्रपंच की उन्होंने कल्पना किए बगैर ही हां कर दी। उनकी हां कहने के बाद 'चट मंगनी पट शादी' का पंडाल बनवा दिया गया और वह अपने इकलौते स्वप्न को फलीभूत करने की कोशिश में जयमाला लिये अपनी भावी पत्नी के आने की प्रतीक्षा करने लगे। वह भी जयमाला लिये वहां पधारी। और अचानक देखते-देखते पासा पलट गया, उनकी हृदय की धड़कनें रुकने को हुई और वह जयमाला को वहीं छोड़कर भागने को हुए ही थे कि दोस्तों ने उन्हें पकड़ लिया; जैसे पुलिस चोर को पकड़ती है। वह चिल्लाये जा रहे थे और उस दोस्त को ढूंढ़ रहे थे जिसने दिखाई कोई और और जयमाला लेकर इस हाथिनी को भेज दिया, जो जूडो-कराटे की स्पेशलिस्ट दिख रही थी। उनका मन किया कि वह उस दग़ाबाज़ दोस्त का गिरेबान पकड़ लें। खैर, मरता क्या न करता, सड़कों पर किसी आतंकवादी की गोली से मरने से अच्छा है कि विवाह के अखाड़े में इस ब्लेक बेल्ट नारी से ही शहीद हुआ जाए—उन्होंने खुद ही को तसल्ली देते हुए कहा और जयमाला उनके गले में दूर से ही रबर के रिंग की भांति उछाल दी, जो उनकी गर्दन में अटक गई। वह

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
घोड़ी की तरह हिनहिनातीं पूरी धमाचौकड़ी के साथ कूदने-बिफरने लगीं। जैसे-तैसे उस संगीन मामले से निपटारा किया गया और उनके साथ सात फेरे संपन्न किए गए--ठीक वैसे जैसे कोई छोटा महावत हथिनी की पूंछ पकड़े-पकड़े घूमता है। और अंत में पंडित जी ने शंख बजाते हुए युद्ध का-सा ऐलान कर दिया।

इस आपात्कालीन स्थिति से जूझने के बाद भी उन्होंने अपनी इच्छा की कोंपल को क्षति नहीं पहुंचने दी थी और अपनी समस्त हिम्मत बटोर कर यह जान लिया कि वह भी कवयित्री हैं, पर हास्य-व्यंग्य की। चलो, भागते चोर की लंगोटी ही सही। हास्य और व्यंग्य के पात्र तो वह बन ही चुके थे। उन्होंने खुद को तसल्ली दी। अब क्या था, आए दिन वह अपनी हास्य-व्यंग्य की कविताओं द्वारा उनके व्यक्तित्व पर प्रहार करतीं, उनके और परिवारवालों का भविष्य अंधकारमय करती हुई कवि सम्मेलनों की शोभा बढ़ाती रहीं। और वह जड़वत् खड़े स्वप्न लेने की सज़ा भुगतते रहे, सिर पर ओलों का प्रहार झेलते रहे और कहते रहे-- सिर मुंड़ाते ही ओले पड़े।

कभी-कभी वह अकेले होते तो सोचते कि उन्होंने कभी भी आजकल के नौजवानों की तरह अपने को पाश्चात्य सभ्यता के कीचड़ में नहीं डुबोया, अपनी कला और संस्कृति को कभी भी ताक पर नहीं रखा। एक छोटा-सा स्वप्न पालने की इतनी बड़ी सज़ा ! इससे तो अच्छा था कि वह भारत का भविष्य उज्ज्वल करने की कोशिश में विसंगतियों को हटाते-हटाते किसी आतंकवादी की गोली से शहीद हो जाते। फिर किसी सज़ायाफ्ता मुजरिम की तरह वह अपने दोनों हाथों को सिर पर मारते और रिहाई का उपाय ढूंढ़ते। फिर उन्हें अचानक दूरदर्शन से प्रसारित हुए उस न्यूज़ बुलेटिन की याद ताज़ा हो आयी जिसमें देशभर के सभी महारथी पतियों ने अपनी-अपनी पत्नियों के आतंक से ग्रसित होकर जेहाद छेड़ रखा था। पर साथ ही साथ उन सबके चेहरे पर डर के बादल मंडरा रहे थे कि कुछ अनहोनी न घटित हो जाए। उन्हें भी लगा कि वह भी आंख मूंदकर जेहाद में कूद जाएं। पर ये सोचकर कि कोई भी अगला कदम उन पर ही भारी पड़ेगा,
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह अपने आंतरिक दर्द को भीतर ही भीतर पी गए। उन्हें लगा कि अब तो आजीवन अपंग बने हुए उन्हें सिर के ऊपर निकलते हुए पानी को आंख बंद किए हुए झेलना होगा। झट से उन्होंने अपने उस सुंदर स्वप्न की कोंपल को जड़ समेत उखाड़कर फेंक दिया और इच्छाओं के दौड़ते हुए घोड़ों की कसकर लगाम खींच ली और गुनगुनाने लगे—'सच हुए न सपने मेरे'।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

19 हम ही सो गए

जब-जब धरा पर पाप और अधर्म बढ़ते हैं, तब-तब अवतार और कर्मयोगी अवतरित होते हैं। पर पिछले दिनों हमारे शहर में रोमियो मंकी का अवतरित होना, उसका नित नये क्रिया-कलापों में सिद्धहस्त होना यह प्रमाणित कर गया कि पापों का धरा पर समागम कुछ ज़्यादा ही हो गया है।

रोमियो मंकी हमारे शहर किस गर्ज़ से आया और कहां से आया, यह तो बड़ा प्रश्नचिह्न है जिसके बारे में कई अटकलें लगाई जाती रही हैं।

कहा जाता है कि शहर की एक देवी जी ने अपने पति की लंबी गैर-मौजूदगी में अपनी सुरक्षा के लिए उसे पाल रखा था और वह गाहे-बगाहे उसको उसी सुर में डांटती-फटकारती थीं जिसमें वे अपने पति को डांटती थीं। कुछ सालों तक तो वह उनके अनुशासन की चपेट में रहा पर एक दिन वह बेचारा रोज़-रोज़ की ज़िल्लत से तंग आकर अनुशासन की ताब न सहते हुए उनके पति की तरह ही वहां से नदारद हो गया और नारी जात से बदला लेने की उत्कट इच्छा लिये वह उनसे किसी-न-किसी रूप में भिड़ता रहा इसीलिए उसका नामकरण संस्कार किया गया रोमियो मंकी जिसके फोटो उतारने के लिए कैमरामैन, उस पर लिखने के लिए प्रेस रिपोर्टर और उस पर गोली चलाने के लिए कितनी

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ही बंदूकें तनीं, पर जनाब ने जो कुछ करना था वह कर दिखाया जो इतिहास के सुनहरी पन्नों में लिखा जाएगा।

वह उस आतंकवादी नारी की चपेट से छूटकर सीधा गवर्नमेंट हॉस्पिटल के वृक्षों पर कूदता-फलांगता और नर्सों को काटता सीधा मेटरनिटी वार्ड में क्यों गया और वहां तहलका क्यों मचाया, यह भी एक गंभीर सोच का विषय ही है। इस से ऐसा निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि फेमिली प्लानिंग वालों ने उसके नेक इरादों को भांपकर उससे संपर्क स्थापित किया हो और उसे वहां गड़बड़ मचाने के लिए प्रेरित किया हो ताकि वे दुबारा मेटरनिटी वार्ड में सोच-समझकर प्रवेश लें और भारत का हित हो सके।

पर अचानक पुराने साधु-संतों की तरह अदृश्य हो जाने की उसकी क्षमता पर शायद हमारे प्रदेश के खुफ़िया और इंटेलीजेंस विभाग वाले भी चुप्पी साध गए जो हमेशा से ही महान आतंकवादियों के क्रियाकलापों से अनभिज्ञ तो रहे ही हैं, एक छोटे-से बंदर की भी भविष्य की क्रियाओं का पता नहीं लगा सके। यह बड़ा संदिग्ध विषय है और अकसर यह अटकलें लगाई जाती रहीं कि वह अपने पूरे शरीर की प्लास्टिक सर्जरी करवाए हुए कोई आई.एस.आई. का एजेंट था जो साइंस की इस तरक्की का पूरा-पूरा फायदा उठा रहा था।

साईंस की तरक्की से हमें याद आया कि अकसर प्रयोगशालाओं में प्रयोग करते वक्त वहां से कई ख़तरनाक जीवाणु फिज़ाओं की तरफ गलती से खिसक जाते हैं और भारत की जनता को देश के ही हित में बॉयलॉजिकल वार छेड़कर ख़त्म करते चले जाते हैं। जहां आबादी रोकने की सारी कोशिशों पर प्रश्नचिह्न लगा हुआ है वहां यह जीवाणु खिसकाने का तरीका सबसे बेहतर है यानी साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। तो हमें लगा कि कहीं यह बंदर भी साइंसदानों की प्रयोगशाला से एक खुराफाती मानव का दिमाग अपने शरीर में प्रत्यारोपित करवाने के बाद, मौके का फायदा उठाकर यानी साइंसदानों की नादानी और लापरवाही का फायदा उठाकर वहां से खिसक आया हो, एक-एक करके मानवों को मारने और आतंकित करने के लिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर उसने जनता को आतंकित किया सो किया, प्रशासन के उच्चाधिकारियों को इतना डराया कि वे रात को नींद न आने की बीमारी यानी इनसॉमनिया से ग्रस्त हो गए और रात को चादर तानकर सोने की बजाए डर के मारे चादर से मुंह ढककर सोते रहे कि कहीं उस बंदर की गिन-गिनकर बदले लेने की प्रवृत्ति में उनका नंबर न लग जाए, तभी तो आदेश हुआ उसे देखते ही गोली मारने के लिए।

पर हम यह दावे से कह सकते हैं कि सभी उच्च प्रशासनकर्ताओं की रातों की नींद हराम करने वाला यह बंदर महज़ एक बंदर नहीं था, कलियुग का हीरो था। वैसे भी हमारी हिंदी फिल्मों में हीरो की छवि राम की छवि नहीं रह गई है बल्कि सारे अवगुणों को समेटे हमारे हीरो जी फिल्मी पर्दे पर प्रकट होते हैं पुराने ज़माने के विलेन को पीछे धकेलते हुए, उसी प्रकार हमारे रोमियो जी प्रकट हुए।

पर दुर्भाग्य, इससे पहले कि वह प्रशासन के सारे कार्यकर्ताओं के दिमागी तंतुओं को पुनर्जीवित करता और समाज में बदलाव लाता, उसे धोखे से मार दिया गया और उसकी अखबार में छपी हुई निरीह तस्वीर देखकर हमें शेर याद आया—ज़माना बड़े शौक से सुन रहा था। हम ही सो गए दास्तान कहते-कहते।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

20 केले का छिलका

हम आप से झूठ नहीं कहेंगे, एकदम सच-सच कहेंगे, गीता पर हाथ रखकर कि आज तक हमने सपने में भी नहीं सोचा था कि हम उसके बारे में लिखेंगे। वह अपने आप में मस्त था और हम अपने काम में व्यस्त। कभी एकाध बार दिन में उस रास्ते से गुज़रते वक़्त उस पर नज़र पड़ जाती तो हम कुछ पल को ठिठक जाते और सोचते–कैसा मस्त मलंग है, जैसे दीन-दुनिया की ख़बर ही नहीं। आप सोच रहे होंगे ऐसा कौन-सा प्राणी विचर रहा है इस संसार में जिसे कोई टेंशन नहीं। तो जनाब, वह प्राणी नहीं, मात्र एक केले का छिलका है जो पिछले पांच सालों से खिड़की के सींखचे पकड़कर धड़ल्ले से लटक रहा है, क्या मजाल कि कोई उसको वहां से हिला दे। इस दुनिया में बड़े-बड़े महारथी आए और चले गए, पर उसके अस्तित्व को तोड़ने वाला इस संसार में अवतरित नहीं हुआ।

उस छिलके में ढके हुए केले को खाने वाले उस महान इंसान ने कभी सपने में भी नहीं सोचा होगा कि वह इतने महान केले के छिलके को फेंक रहा है। उस इंसान ने भी ऑफिस की कुछ जरूरी फ़ाइलों में से कुछ जरूरी कागज़ों को ढूंढ़ते वक्त केला खाया होगा और वहीं पर बैठे-बैठे पांच मीटर की दूरी से खिड़की की तरफ छिलका उछाल दिया होगा, पर धन्य है वह केले का छिलका जो खिड़की से कूदकर अपनी

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
हड्डी-पसली तुड़वाने के बदले सींखचे पकड़कर लटक गया, मानो कह रहा हो—तू क्या मुझे मारेगा, तुझे मारने वाले धड़ाधड़ इस पृथ्वीलोक में अवतरित हो रहे हैं। मैं तो अमर हूं, मुझे कोई नहीं मार सका।

सचमुच वह केले का छिलका अमर था, तभी तो अमरबेल की तरह इतने सालों से खिड़की के सींखचों से लिपटा हुआ था। लगभग सौ-दो सौ लोग उस धीर-गंभीर केले के छिलके को रोज़ ही देखते थे। वह भी उनकी आंखों में आंखें गड़ाकर बड़ी आशापूर्ण दृष्टि से उन्हें देखता और सोचता—अगर यह लोग सिर्फ पांच-छः मिनट के लिए मुझे यहां से हिला दें तो थोड़ी देर के लिए ही सही, मेरा हवा-पानी तो बदल जाए, चाहे फिर यह लोग मुझे दुबारा यथास्थान लटका दें; पर न किन्हीं हाथों ने उसकी ओर बढ़ना था और न ही बढ़े—तब भी नहीं बढ़े जब उसी दफ़्तर में अपने आस-पास के वातावरण को सुंदर रूप देने के लिए मीटिंग रखी गई, जिसमें प्रदेश भर के छंटे हुए नाटककारों, लेखकों व समाज-सुधारकों ने भाग लिया। उस मीटिंग में शहर की कई जगहों को सुंदर बनाने के लिए अलग-अलग प्रोजेक्ट्स रखे गए। एक प्रोजेक्ट था शहर के सारे विद्यार्थियों द्वारा जगह-जगह उग आयी (श्वास गति को लगभग बंद कर देने वाली) कांग्रेस घास की कटाई, चाहे उसे काटकर उन्हें अपनी रुकी हुई श्वास प्रक्रियाओं को फिर से चालू करने के लिए डॉक्टर की मदद लेनी पड़ी। दूसरा प्रोजेक्ट था गरीबों की झुग्गी-झोंपड़ियां उखड़वाकर बच्चों के खेलने का एक पार्क बनवाना, तीसरा प्रोजेक्ट था नुक्कड़ नाटकों का मंचन करके लोगों में वातावरण को सुंदर बनाने के प्रति जागरूकता लाना, चौथा प्रोजेक्ट था किताबें लिखकर लोगों में सौंदर्य-बोध जगाना ताकि वे अपने आस-पास को ज़्यादा-से-ज़्यादा सुंदर बना सकें। सींखचे पकड़कर लटकता हुआ वह केले का छिलका सब कुछ सुनता रहा। उसे लगा अब तो शायद उसे हटा ही दिया जाएगा, पर लोगों के दिमागों में उसको वहां से हटाने की कोई चेतना नहीं जागी। उस दिन वह सोचने लगा कि शायद उसमें ही अपने व्यक्तित्व को लेकर सौंदर्यबोध की कमी है, हो सकता है दफ़्तर के सारे कर्मचारियों का सौंदर्यबोध इतना प्रखर है कि वे उस लटकते केले के छिलके में भी सौंदर्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ढूंढ़ लेते हों। इसीलिए तो शायद उसे हटाया नहीं गया।

उसे याद आया, जब साल के बाद इंस्पेक्शन के लिए बड़े-बड़े अफसर आते हैं, तो दीवारों पर लगी दीमकें, जाले, मेज़-कुर्सियां साल में एक बार तो साफ हो जाती हैं, पर उसे पिछले पांच सालों से नहीं हटाया गया। इसके बाद तो वह पूर्ण रूप से आश्वस्त हो गया कि वह खूबसूरत है और व्यर्थ की चिंता किए बगैर वह प्रजातंत्र देश में मंद-मंद चलती हवाओं की लय पर हिचकोले खाता रहा।

थोड़े दिनों के बाद जाने कैसे उड़ती-उड़ती खबर साइंसदानों के पास पहुंच गई, उस अजीबो-गरीब केले के छिलके के बारे में। साइंसदानों की टीम अपने नये-नये औज़ारों के साथ पहुंच गई उसका परीक्षण करने। उसे जांचा-परखा गया, नई-नई दवाइयों का उस पर असर देखा गया, उसके हृदय की धड़कनों को जांचा-परखा गया, पर कोई असर नहीं हुआ। वह वैसे का वैसा मस्ती में झूमता रहा खिलंदड़े बच्चे की तरह। आखिरकार उस केले के छिलके का एक टुकड़ा साइंसदानों ने काट लिया और उसे ले गए लेबोरेटरी में परीक्षण के लिए।

जाने कैसे साइंसदानों के परीक्षण की खबर प्रेसवालों तक पहुंच गई। प्रेसवाले भी अपनी कैमरा टीम के साथ उस दिव्य स्थल पर पहुंच गए। अगले दिन एक लंबी रिपोर्ट के साथ उस केले के छिलके की विभिन्न कोणों में तस्वीरें छपीं। रिपोर्ट में उसके इस टेंशन से भरे युग में भी इतना खुश और मस्त मलंग रहने और आंधी-तूफान में भी अपनी जगह से न हिलने की उसकी दृढ़ इच्छाशक्ति पर ज़ोर डाला गया था। और तो और, किसी को खुशी से एक जगह न टिके रहने देने वाले जंगली लोगों से घिरा वह केले का छिलका उनके पंजों से कैसे बच गया, इस बात पर अख़बारवालों ने खूब चर्चा की थी।

अखबारवालों की लंबी रिपोर्ट पढ़कर अगले दिन कई तांत्रिक भी वहां आ पहुंचे। उन्होंने उसमें किसी भूत-प्रेत का चमत्कार बताया, उस केले के छिलके के आस-पास यज्ञ किया गया, चिमटे गर्म करके केले के छिलके के शरीर से छुआए गए, धूनी भी दी गई। पर वह छिलका उन्हें देखकर मंद-मंद मुस्कराता रहा और उन्हें चुनौती देता रहा कि है

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
ताकत मुझे डिगाने की तो डिगाकर दिखाओ। दुनियावालो, तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

अंत में विभिन्न धार्मिक संस्थाओं ने उसके आसपास कई दिनों तक डेरा डाला, किसी ने उसको हिंदू बताया, किसी ने मुसलमान और किसी ने सिक्ख। सभी ने अपने-अपने धर्मों की विशेषता बताकर उसे भड़काकर अपने में मिलाना चाहा, पर उसने किसी की ओर भी मुंह उठाकर नहीं देखा और निर्विकार-सा सींखचों पर झूलता रहा। अंत में सभी धार्मिक संस्था वालों ने फैसला किया कि उसके हिंदू, मुस्लिम या सिक्ख होने का फैसला इसी बात से किया जा सकता है कि उसे फेंकने वाला किस धर्म का था ? पर इससे क्या होता है, उस इंसान की तलाश से पहले यह जानना जरूरी है कि उस केले का पौधा किसने उगाया था—हिंदू ने, मुस्लिम ने या सिक्ख ने। इस पर तीसरा बोल पड़ा—इससे पहले यह जानना जरूरी है कि वह मिट्टी कौन से धर्म की थी जिसमें वह पौधा उगा था।

इस बात को लेकर वे सब आपस में बुरी तरह झगड़ने लगे और उस मिट्टी को अपने-अपने धर्मों की बताकर मार-पीट करने लगे। अंत में किन्हीं बुद्धिमानों ने मिलकर फैसला किया कि उस केले के छिलके के धर्म का इसी बात से अंदाजा लगाया जा सकता है कि उसको खाने वाला किस धर्म को मानता था—हिंदू धर्म को, मुस्लिम धर्म को या ईसाई धर्म को। उस व्यक्ति की खोज की जाए और धर्म का पता लगाकर वहां मंदिर, मस्जिद या गुरुद्वारा बनवाया जाए। उस केले को खाने वाले मुजरिम की तलाश में पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करवायी गई। पुलिस ने शक के बलबूते पर एक शख्स को पकड़ भी लिया पर उसने चुप्पी साध ली, सच को कसकर होंठों में भींच लिया। ज़िंदगी भर अन्याय के ख़िलाफ लड़ने के बावजूद दंगे-फसादों के डर से वह शख्स अन्याय सहता रहा और नैतिक मूल्यों को तिलांजलि देता रहा। अंत में कोई निष्कर्ष न निकलने के कारण मामला कोर्ट में दर्ज करवाया गया और उस केले के छिलके को फेंकनेवाले शख्स पर अभी तक कोर्ट में मुकदमा चल रहा है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह बात अलग है कि उस जगह धर्मों की आड़ लेकर दंगे-फसाद अभी भी हो रहे हैं।

एक दिन एक अजीब घटना घटी—किन्हीं बदमाशों ने उसे चमत्कारिक पूंजी समझते हुए रातों-रात भारी दामों पर मार्केट में बेचने के लिए अपने स्थायी स्थान से उठवा दिया और अंडरग्राउंड कर दिया।

सभी धार्मिक संस्था वालों ने यह समझना शुरू कर दिया कि चमत्कारी जीव ने ज़रूर संन्यास ले लिया होगा, उसकी याद में एक बहुत बड़ा स्मारक बनवाया जाए। पर समस्या वहीं की वहीं थी कि कौन से धर्म के लोग स्मारक बनवाएं। इस बात को लेकर रोज दंगे-फसाद होते। वह छिलका जिंदा होने के बावजूद मरा समझ लिया गया था इसलिए वह कभी-कभी छिपकर यह तमाशा देखता और सोचता--अगर उस दिन उस छिलके को केला खाने वाले ने कूड़ेदान में फेंका होता तो इतने लोग मरने से बच जाते।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

21 एक थे पोपटलाल

उन दिनों वे नये-नये एक विद्यालय, जिसका नाम हम अपनी संपूर्ण इच्छा-शक्ति द्वारा छिपा रहे हैं, जबलपुर से स्थानांतरित होकर आए थे। इसे हमारी खुशनसीबी कहिए या बदनसीबी, हम भी उन दिनों उस गुमनाम विद्यालय में शिक्षिका की हैसियत से कार्यरत थे।

उनकी डगमग चाल, मोटे चश्मे के पीछे से झांकती रहस्यमयी आंखों और आदिमानव शैली में बने हुए उनके चेहरे को देखकर विद्यार्थियों ने झटपट उनका नामकरण संस्कार कर दिया था—पोपटलाल। पर उस दिन नामकरण करने वालों से यह गलती जरूर हो गई थी कि उन्होंने उनका आंतरिक परीक्षण किए बगैर ही यह तत्कालीन नाम उन्हें दे दिया था। अगर वे उनका नामकरण संस्कार करने के लिए अति-व्याकुल न होते और कुछ दिन और ठहर जाते तो उनका नाम होता चौपटलाल।

उनका हमसे साक्षात्कार तब हुआ जब उन्होंने हमें उप-प्रधानाचार्य की हैसियत से अपने दफ्तर बुलवाया और हमारे हाथ में सालाना इम्तिहान की एक अदद उत्तर-पुस्तिका थमाते हुए बोले, "यह तुमने जांची हैं ?" हमने 'हां' में सिर हिलाया और अपनी गलती पूछी। वे बोले, "गलती ? घोर गलती हुई है तुमसे। जिस विद्यार्थी की यह उत्तर-पुस्तिका है उसका पिता पुलिस में ऊंचे पद पर कार्यरत है और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हम सबका परम पिता है। इस विद्यालय के सारे कर्मचारियों और अंदर हो रहे क्रिया-कलापों को ढांपती हुई यह जो बड़ी चहारदीवारी है वह इन्हीं की कृपा से खड़ी है। इन्हीं के भेजे हुए पुलसिए इसे अपनी निगरानी में रखते हैं ओर शहर के सारे उद्दंडों से बचाते हैं वरना इसे तोड़ने में उन्होंने कोई कसर नहीं उठा रखी थी।''

हमने एक ही सांस में कही गई उनकी सारी बातें सुनीं और कहा, ''पर इस विद्यार्थी ने तो उत्तर-पुस्तिका में कुछ लिखा ही नहीं है ?'' वे झट बोले, ''तो तुम किसलिए हो ! तुम लिख लो। अगर तुमसे यह सब नहीं होता तो लाओ मैं खुद लिख लेता हूं। तुम इसे दुबारा जांच लेना।'' उन्होंने वह उत्तर-पुस्तिका झपट ली और इस तरह के भाव लाते हुए संभाली जैसे कोई मंत्री भरी भीड़ में अपनी उछलती हुई टोपी को संभालते वक्त लाता है।

हम क्षण भर को सोच में पड़ गए कि अगर विद्यालय की दीवार बचानी है तो हमें अपने ईमान की दीवार को तोड़ना पड़ेगा। अजब रिश्ता था हमारे ईमान और दीवार का, एक बचता है तो दूसरा टूट जाता है और उसे तोड़ने वाला था वह पुलसिया जिसका चौखटा क्षण भर को मूंछों पर ताव देता, आंखें गुर्राता, हमारे ईमान को ललकारता हमारी आंखों के सामने घूम गया।

खैर, उस दिन हमने जो करना चाहिए था वह नहीं किया और जो पोपटलाल जी को नहीं करना चाहिए था वह कर गए, फिर भी उस दीवार को गिरना था सो उसकी ईंटें हर गुजरते साल गिरती चली गईं और विद्यालय के मुख्य द्वार पर मजबूत-से-मजबूत ताले लगने शुरू हो गए। पोपटलाल जी को दीवार के पार के क्रियाकलापों को देखने की अभिलाषा जब भी जोर पकड़ती तो अपने पचपन पतझर पार करने के बावजूद वह पूरे जोश और उत्साह के साथ वह दीवार फांद जाते और विद्यालय से आज़ाद हो जाते और हम सुबह की प्रार्थना-सभा में दिए गए उनके प्रवचनों को जिसमें वह 'बुरा मत बोलो, बुरा मत सुनो, बुरा मत देखो' पर जोर देते, न किसी से उनके बारे में बुरा कहते, न उनकी बुराई किसी से सुनते और उनके उद्दंड क्रियाकलापों को नजरअंदाज करते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
के बावजूद अगर कुछ दिखाई पड़ जाता तो आंखें बंद कर लेते जैसे कबूतर बिल्ली को देखकर कर लेता है।

सब विशेषताओं में उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वह जबलपुर के छंटे हुए कवि थे और खुद उप-प्रधानाचार्य होने पर भी यह पंक्तियां दोहराते थे—"अंधेरों का राज है, उल्लुओं के सिर पर ताज है।" यह पंक्तियां शायद उन्होंने आत्म-निरीक्षण करके उपजा ली थीं जो गहरी निद्रा में सोयी हुई उनकी आत्मा के लिए घातक हो सकती थी, क्योंकि अगर उनकी आत्मा जग गई तो खुद को पहचानने लगेगी और जिस दिन वह अपने को पहचानेगी वह अपनी पहचान खो बैठेंगे।

पहचानने की बात जब चल पड़ी है तो हम आपको यह बता दें कि वह उन लोगों को खूब पहचानते थे जिन्हें वह अपने काम निकलवाने के लिए बूंदी के लड्डू खिला चुके होते थे। अगर लड्डू खाने वाला भूल से लड्डू खाने की बात भूल जाता और उन्हें भूल में डालकर उनके किसी काम आने से इनकार करता हुआ बागी हो जाता तो वह झट उन अजर-अमर लड्डुओं की याद ताजा करवा देते और कहते—'मैंने उस दिन तुम्हें लड्डू नहीं खिलाए थे !' और उन्हें खाने वाला उस दुष्ट घड़ी को कोसता जब उसने उन चिरंजीवी लड्डुओं को हलक से उतारा था। खैर, खिलाए गए लड्डुओं को आजीवन कैश होना था सो वे होते रहे, पर हम यहां लड्डुओं से सीधे उनके साहित्यिक जीवन पर उतर रहे हैं जिससे जुड़ी थी उनकी आजीवन लाभ पहुंचाने वाली एक कविता।

हुआ यूं कि एक दिन उनको रेडियो की युववाणी सर्विस से कविता पढ़ने का कांट्रैक्ट मिला। पचपन साल की उम्र में और युववाणी से कांट्रैक्ट हमने हैरत से कांट्रैक्ट को और उनके चेहरे पर पड़ी उम्र की अनगिनत हस्त-लिपियों को देखा—वह कहीं से भी युवा प्रतीत नहीं होते थे। पोपट लाल जी को इस बात का भी डर था कि अगर कविता पढ़ने सशरीर पहुंच गए तो 'घोर गलती के लिए खेद है' कहकर कहीं उनसे रेडियो स्टेशन के दरवाज़े से ही अलविदा न ले ली जाए। पर वे किसी भी हालत में कविता के प्रॉफिट को हाथ से गँवाना नहीं चाहते थे। उन्हें एक युक्ति सूझी, लिफाफे पर और पत्र पर लिखे अपने मौलिक नाम आनंद सक्सेना

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को जिसके आगे श्रीमती या श्री लिखने का प्रभुकृपा से कोई संयोग नही बना था, आनंदी सक्सेना बना दिया और वह कविता विद्यालय की युवा अध्यापिका ने आनंदी सक्सेना बनकर पढ़ी। यह अलग बात है कि उन्होंने अनुशासन को दुःशासन, गौरव को भैरव, मूर्ति को कीर्ति और शोषण को पोषण पढ़ा और पचहत्तर प्रतिशत मुनाफा पोपटलाल जी का हो गया और वह मुनाफाखोर कविता एक बार पुनः कमाऊ बीवी की तरह उन्हें मुनाफा दिला गई।

पत्नी की बात जब चल ही पड़ी है तो हम यहां बता देना चाहेंगे कि पोपटलाल जो सिर्फ अपनी श्रीमती को छोड़कर संसार भर की श्रीमतियों को उत्थान और जागरूकता का हवाला-देकर उनकी मति भ्रष्ट करते और उन्हें अपने-अपने पतियों से लड़वा दिया करते थे, फिर पति-पत्नी-भिड़ंत का नजारा उनके घर जाकर करते और तब तक वहां से नहीं हिलते थे जब तक रसोईघर में बनी सारी दाल-सब्जियों और खीर की विभिन्न तरह की मॉडर्न पेंटिंग पति-पत्नी के उजले वस्त्रों पर न छप जाती और जब स्थिति आउट ऑफ कंट्रोल हो जाती तो वे मौके की अति नाज़ुक स्थिति को देखते हुए वहां से आउट हो लेते और किसी और शांत घर को अशांत करने के लिए मौका ढूंढ़ते।

अपनी पत्नी के उत्थान के लिए वह कितने जागरूक थे, इस बात का अंदाज़ा उन्हीं के बताए हुए ब्यौरे से लगाया जा सकता है कि कैसे वह परीक्षा-नियंत्रक के पास गए और बोले—"एक सिफारिश करनी है।" उन्होंने पूछा—"किसकी सिफारिश ?" पोपटलाल जी बोले, "अपनी बीवी की।" परीक्षक ने पूछा, "क्या उसे पास करना है ?" पोपटलाल जी बोले, "पास हो रही है इसीलिए आपके पास आया हूं, उसे फेल करना है।" पोपटलाल जी खुद एम.ए. में तीन बार फेल होते हुए हैट-ट्रिक बना चुके थे और चौथी और अंतिम बार तृतीय डिवीजन लेकर पास हुए थे। वे नहीं चाहते थे कि उनकी बीवी पास होकर डिग्री की धौंस जमाए और उनका भविष्य अंधकारमय हो जाए।

परीक्षा की बात जब चल ही पड़ी है तो हम यहां उन्हीं के विशेष गुणों की ट्रेनिंग लिये हुए एक और अध्यापक बनिहाली जी, जिनका

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
असली नाम हम जबरन छिपा रहे हैं, ने कैसे पोपटलाल जी के ही दांव-पेच अपनाकर उन्हीं पर लागू करके यानी बिगड़ती हुई स्थिति में लड्डुओं का प्रयोग करवाकर उन्हें धर-पटकनी दे दी थी।

वाक्या कुछ इस तरह हुआ कि सालाना इम्तिहान खत्म होने के बाद वह उत्तर-पुस्तिकाओं का बंडल अपने आंगन में बैठे जांच रहे थे और साथ ही अपने आंगन में खूंटे से बंधी गाय की भी निगरानी कर रहे थे कि अचानक उन्हें प्यास लग गई। पांच मिनट बाद वह पानी पीकर बाहर आए ही थे, देखते क्या हैं कि वह क्रांतिकारी गाय जाने कैसे खूंटा तोड़कर कॉपियों के बंडल की तरफ लपकी और देखते-देखते दस उत्तर-पुस्तिकाएं चट कर गई। जब वह दसवीं उत्तर-पुस्तिका खा चुकी और ग्यारहवीं को मुंह में डालकर खाने की तैयारी में थी तो उन्होंने मौका-ए-वारदात पर पहुंचकर गाय के हिलते हुए जबड़ों में से दो अधखाई उत्तर-पुस्तिकाएं निकालने का भरसक प्रयास किया। इससे पहले कि बनिहाली जी अपने अभियान में सफल हों, वह षड्यंत्रकारी गाय ग्यारहवीं उत्तर-पुस्तिका भी चट कर गई। गाय के जबड़ों और उनके हाथों की खींचातानी से उनके हाथ लगी लार में डूबी हुई फिफ्टी पर्सेंट उत्तर-पुस्तिका, जिस पर विद्यार्थी के लिखे हुए अक्षरों की जगह गाय के डैंचर के निशान थे। अब वह क्या करें, सारा हवाला तो गाय के पेट के हवाले हो चुका था। कोई प्रमाण शेष नहीं था—न अंकों का, न नामों का।

सारी रात वह इस हवाले को लेकर परेशान रहे और नींद आने पर वह भूखी गाय दिखाई दी जो इस हवाला कांड को लेकर उन्हें उच्च अधिकारियों के सिपुर्द करवा कर सस्पैंड करवाने की धमकी दे रही थी।

आखिर सुबह जब बनिहाली जी की आंख खुली तो वह डर के मारे थर-थर कांप रहे थे। न जाने कैसे राम जी को उन पर तरस आ गया और अचानक उन्हें एक युक्ति सूझी, वह अपने स्टोर रूम में पड़ी अनगिनत कॉपियों की रद्दी उठा लाए जो उन्होंने एक्जामिनर की टेबिल से आंख बचाकर चुरा ली थीं। उन्हें विद्यालय में कार्यरत पोपटलाल जी की बिगड़ी नीयत पर काफी भरोसा था सो उन्होंने लड्डुओं का डिब्बा

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खरीदा, उनकी भीनी-भीनी खुशबू पर पोपटलाल जी की ज्ञानेंद्रियों को चौपट करते हुए सारा मामला समझाकर बीस ऑरिजिनल और बारह डुप्लीकेट उत्तर-पुस्तिकाएं पोपटलाल जी को थमा दीं और वह लड्डुओं की मार से अचेत होकर बिना अंक देखे और उनका जोड़-तोड़ करते हुए, चेकर के हस्ताक्षर करते चले गए, यह बात अलग है कि पोपटलाल जी जब उन्हें अंत में गिनने लगे तो वे बढ़ती हुई मंहगाई की तरह यकबयक बत्तीस की जगह छत्तीस हो जाती और कभी सैंतीस। इसका श्रेय जाहिर है बनिहाली जी को ही जाता था, क्योंकि वह जल्दी में रद्दी से अनगिनत कॉपियां उठा लाए थे और घबराहट में असली संख्या भी भूलते जा रहे थे। खैर, उन्होंने अपनी चेतना पर जोर डालकर असली संख्या का पता लगाया और झटपट खुद दुबारा गिनने का नाटक करते हुए अतिरिक्त उत्तर-पुस्तिकाएं बंडल से चुपचाप खिसका लीं और अंत में पोपटलाल जी के असली हस्ताक्षरों से सजी अर्ध नकली उत्तर-पुस्तिकाएं परीक्षा अधिकारी को सौंप दी गईं और बनिहाली जी गाय के अरमानों के बिलकुल विपरीत सस्पेंड होने से बच गए और वे नकली कॉपियां नकली अंकों का बोझ लिये हुए असली हस्ताक्षरों से सजी हुई साल दर साल के अंबार में डूबती चली गईं और जो हुआ उसका कोई प्रमाण शेष्र नहीं रहा। शेष बची रही लड्डुओं की उमड़ती-घुमड़ती खुशबू जो हमें हमेशा पोपटलाल जी की याद ताजा करवाती है क्योंकि वह हमारे विद्यालय से स्थानांतरित हो चुके हैं और विद्यार्थी उनकी दीवारें फाँदने की जागरूक प्रवृत्ति का अनुसरण करते हुए ऐसी कई दीवारें फांदने की जागरूक प्रतिक्रिया को जेहन में रखे हुए उम्र में बढ़ रहे हैं।

अब आलम यह है कि बाहर के सारे उद्दंड विद्यालय में पाए जाते हैं और विद्यार्थी विद्यालय की टूटती दीवार के बाहर विद्यालय के मुख्य द्वार पर। पिटे हुए सारे चपरासी लंबी छुट्टी पर चले गए हैं और उसी द्वार पर पुलसिए जगह-जगह चौकसी करते हुए यह भी जानने में असमर्थ हैं कि वे बाहर घूमते विद्यार्थियों को अंदर जाने से रोक रहे हैं या अंदर के सारे उद्दंडों को बाहर जाने से। बस इसी कशमकश में वे ठुड्डी पर हाथ रखे, बंदूक ताने इधर-उधर घूमते नजर आते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज ही मुख्य अध्यापक ने दीवार को ऊंचा और ऊंचा करने के लिए सरकार से ग्रांट मांगी है पर हमारे ज़ेहन में पोपटलाल जी की वह कविता उमड़-घुमड़ रही है जो उन्होंने गा-गाकर सुनाई थी—अंधेरों का राज है, उल्लुओं के सिर पर ताज है।

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनिला सिंह चाड़क

जन्म एक मूल्यनिष्ठ संस्कारवान परिवार में। साहित्यिक व आध्यात्मिक वातावरण विरसे में मिला। पिता शिक्षा निदेशक (जम्मू-कश्मीर) के रूप में कार्यरत, तदुपरांत विशेष सचिव (जम्मू-कश्मीर) के उच्चपद से सेवानिवृत्त। छठी कक्षा में 'गोदान' पढ़ने के साथ ही हिंदी साहित्य में एक सजग पाठिका के रूप में प्रवेश। वनस्पतिशास्त्र में जम्मू विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर, तदुपरांत कश्मीर से जीवविज्ञान में स्नातकोत्तर शिक्षिका। रुचियों में चित्रकारी तथा रेडियो नाटकों में काम करने का शुरू से जुनून-सा रहा। क्रिकेट खेलने का उन्माद—राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई बार खेलने का सुअवसर। संभवतः खेल के मैदान ही से ग्य-लेखन में छक्के उड़ाने की प्रबल इच्छा प्रस्फुटित । अन्य गतिविधियों में क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर दूरदर्शन तथा आकाशवाणी से साहित्यिक तथा ा संबंधी कार्यक्रमों का प्रसारण। देश की नेक प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित।

प्रिंसिपल, जवाहर नवोदय विद्यालय (नड) म्मू-कश्मीर)।

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran